भदैनी, वाराणसी

ठलुआ

ठलुआ क्लब वाराणसी द्वारा प्रकाशित

केवल ठलुओं के लिए

मूल्य डेढ़ रुपये मात्र नगद

८०



होली नृत्य

चित्र—श्री संतोष कुमार सिंह

प्रधान संपादक

डाक्टर बाग्डू स्वामी चिपटाहल फटेश्वर भकाठ्या पिल्लई

फटीचर १९८०



प्रधान संपादक
डाक्टर बागड़ू स्वामी चिपंटोहल
फंटेश्वर भंकाठप्पा पिल्लई



सहायक
प्रोफेसर अहितुण्डिक
भुजंगराव जोगदण्ड

व्यवस्था
मुरारीलाल राबड़ीवाला
हरिराम चौधरी
पुरुषोत्तम लिंगम
गंगाधर शिकारपुरी
विनोद कुमार लाकड़ीवाला

प्रकाशक
गुलाबदास डंडपकड़
अन्नपूर्णा ब्लाक वर्क्स
बांसफाटक-वाराणसी

मुद्रक
पंचम राम बमवाला

ठलुआ क्लबकी ओरसे विश्वनाथ मुखर्जी द्वारा संपादित प्रकाशित तथा हिमालय प्रेस, बड़ागणेश वाराणसी-१ में मुद्रित

धन्यवाद लीजिए

फटीचरका यह अंक पिछले अंकोंसे अलग-अलग सा है। इस अंकमें हमने अपने क्लबका विवरण अधिक रखा है जो हास्यरसका एक उदाहरण है। हास्य लिखना किसी व्यक्ति विशेषकी बपौती नहीं है। सामान्य व्यक्ति भी हास्य लिख या बोल लेता है। अगर आप प्रकाशित अभिनन्दन पत्रों को पढ़ेंगे तो यह स्पष्ट हो जायगा।

सिर्फ यही नहीं, गोष्ठी विवरणमें कुछ विद्वानोंके पत्र प्रकाशित हैं जो अनूठे हैं। इसके अलावा इस अंकमें एक विशेषता है। इस बार तथाकथित राजनीतिज्ञ साहित्यकार, पत्रकार या अपने को नगर या देशका महान नागरिक समझनेवालोंका नाम तक नहीं लिया गया है। हमने उन लोगोंकी चर्चाकी है जिनकी कृपासे यह संकलन प्रस्तुत किया गया है। वे ही इस यज्ञके होता हैं।

इस संकलनके प्रकाशनका उद्देश्य केवल आनन्द लेना और आनन्द देना है। व्यवसायका उद्देश्य होता तो १४४ पेजकी पत्रिका १.५० रु० में हम न देते। आजके युगमें इतने पृष्ठोंकी पत्रिका कोई भी संचालक नहीं दे पाता। हम उन फटीचरोंमें हैं जो जेबसे रकम खर्च करके आनन्द लेते हैं।

जिन लोगोंने विज्ञापन या आर्थिक मदद देकर हमें सहयोग दिया है, उन्हें धन्यवाद और जो लोग नामसे भड़क गये उन्हें अपने सरकुलरमें पहले ही धन्यवाद दे दिया गया है।

कुछ लोग अन्तिम समयमें विज्ञापन प्रकाशनार्थ ले आये, हम उसे प्रकाशित नहीं कर सके, इसके लिए हमें जरा भी खेद नहीं है। लेट लतीफोंके लिए यह उदाहरण है। आगेसे वे ध्यान रखें।

आपकी होली शुभ हो, इस कामनाके साथ अपने पाठकों-हितैषियों को पुनः धन्यवाद देते हुए अगले वर्ष आपकी सेवामें आनेका वचन दे रहे हैं।

★

छर र र र कबीर

— पिचकारीकी एक तेज धार रेमीके श्री चिरंजी लाल सर्राफजीके तनपर जो दिलके ही नहीं, चरित्रके भी उदार हैं।

— गुलालकी एक झोली आदरणीय सीताराम केजरीवालजीकी गणेशवाली तोंदपर जिसमें सम्पूर्ण मिथिलाका रंग पहले से भरा है।

— एक मुट्ठी गुलाल राधाकृष्ण केजरीवालजीकी खल्वाट खोपड़ीपर जिनकी कृपा से अस्पतालोंमें मरीज आराम से सोते हैं।

— एक मुट्ठी गुलाल सुरेश कुमार नेवटियाजीके चन्द्राननपर जो सम्पूर्ण भारत में तेल सप्लाई करते हैं। लगानेवाला नहीं, जलानेवाला।

— एक चुटकी रंग ओमप्रकाश जौहरीपर जिन्हें हारे हुए फटीचरों मूर्ख प्रसाद (एम० पी०)की याद सताती है।

— एक चुटकी रंग शंकरलाल नारसरियाजीके भाल पर जिसकी कृपा बलबपर बराबर रहती है।

—एक मुट्ठी गुलाल निरंजन लाल अग्रवालके सलोने चेहरेपर जिनकी मुस्कान मधुर है।

— एक टीका बासुदेव अग्रवालके कपोलपर जो चौक के गलियारेको रोशन किये रहते हैं।

— एक टीका गुलालका सदानन्द झँवरके बनारसी चेहरेपर जो लेन-देनमें व्यस्त रहते हैं।

— एक मुट्ठी गुलाल भाई परमानन्द सर्राफकी सांवली सूरतपर जिसके यहाँ ठलुए प्रायः जमे रहते हैं। वे स्वयं साक्षी विनायक बने मुस्काते हैं।

— एक मुट्ठी गुलाल रूपश्रीके प्रभुदयाल और रूपदर्शीके देवी प्रसाद अग्रवालके गालोंपर जिनके कारण ताने बानेकी शान भारतमें प्रसिद्ध है।

— एक मुट्ठी रंग हरिप्रसाद खेमकाके तन-बदनपर जिसका गोदौलियापर एकजाई चौचक रंग है। जिन्होंने इस बार अवसरवादी राजनीतिज्ञ या भ्रष्ट सरकारी अधिकारीको छोड़कर अपनी दुकानका उद्घाटन एक शरीफ नागरिकसे कराया।

— एक टीका विश्वनाथ भालेटियाके सुचिक्कण

गालोंपर जिन्हें केवल ठुमरी पसन्द है, ख्याल या ध्रुपद नहीं। तरानाके पीछे दीवाने रहते हैं।

— गुलालका एक टीका नन्दलाल तुलस्यानके भालपर जो भोजन हाई क्लासका देते हैं और मुफ्तमें राधामें सिनेमा दिखाते हैं।

— गुलालका एक टीका संतोष जालान और बृजपालदास अग्रवालके भालपर जो ढालके ऊपर और ढालके नीचे जमे हुए हैं।

— गुलालका एक टीका देवकीनन्दन केडियाके रंगीन चेहरेपर जो मफतलालके खास हैं। मुफ्तमें ३६५ दिन ज्ञानवापीका ज्ञान प्राप्त करते हैं।

— गुलालका एक टीका समदानी साहबके आननपर जिनके तेलका ड्रम हर पनवाड़ी दुकानपर विज्ञापन करता रहता है। चाहे शीशीमें लो या बोतलमें।

— एक मुट्ठी गुलालको कोतवालपुराके कोतवाल शांपुरीजीके थाईलैण्डी चेहरेपर जो अपने दरवेसे बाहर कभी-कभी लक्का कबूतरोंके साथ चलते हैं।

— गुलालका एक टीका श्रीकृष्णदास गुप्तके खल्वाट खोपड़ीपर जो अपने चचा केडियाजीके सिरसे सिर लड़ाने के कारण झरते जा रहे हैं।

— गुलालका एक टीका सोहनलाल मेहरोत्रा और हेम कोहिलीजीके गदराये चेहरेपर जिसपर कोई रंग इस लिए असर नहीं करता, क्योंकि तमाम नट-बाल्टू ढीले हो गये हैं।

— रंगकी एक बाल्टी गोरीकृष्णपर जो चौथमलके असली हैं, नगरपालिकाके रजिस्टरमें भी।

— गुलालका एक टीका रोटरीके भू० पू० गवर्नर चन्द्रकुमार साहके भालपर जिसका नाम लेते ही विजय भाईकी याद आ जाती है।

— एक कटोरा रंग बाबू विश्वनाथ प्रसादजीके हसीन चेहरे और बुर्राक कपड़ोंपर जो कचहरीके चपरासी की तरह साइकिलपर सम्मन बाँटा करते हैं।

— एक बाल्टी काला रंग पुरुषोत्तम मोदीके खो-खो-प-ड़ीपर जो इस तरह हकलाते हैं कि कभी-कभी अजेण्डाकी जगह युगाण्डा या लेंडण्डा कह बैठते हैं।

— एक छटाँक गुलाल बद्री प्रसाद गुप्तके क्लीनशेव गालोंपर जो हमेशा अपनी दुकानपर छौंक-बघारकर बैठे नजर आते हैं। राह चलते लोग उन्हें देख 'वाह राजा' कह देते हैं।

— भर मुट्ठी गुलाल रामशंकर गुप्तके उन जनानी गालोंपर जिसपर हाथ फेरते ही पूरा तन बदन गर्मा जाता है और कलेजेसे चिपकानेका जी चाहता है।

— गुलाल का असली टीका पण्डित शीतला प्रसाद तेलीके गालके उन गड्ढोंमें जिसपर चिरईका अड्डा है।

—गुलाल नहीं खांटी कड्डू तेल छटांक भर मार्कण्डेय पाण्डेय वकीलके गालपर जो राह चलते परिचितोंको देखकर एक आँख बन्दकर लेते हैं। मुस्कराते हैं तो शमीमबानो दारूवालाकी तरह आकृति बन जाती है।

— पिचकारीकी एक धार विनोद बाबूकी जनानी शक्लपर जो दुकानपर बैठते हैं तो मैजिक शोका खिलौना नजर आते हैं।

— गुलालका एक टीका नरेन्द्र भार्गवके कचौड़ी जैसे गालोंपर जो दुकान से बराबर गायब रहते हैं।

— भर मुट्ठी गुलाल पं० रामशंकर त्रिपाठीजीकी खोपड़ीपर जो बाबाके एक मात्र उपासक हैं।

— एक कटोरा रंग महेन्द्र प्रताप साहकी उस तोंदपर जो १२ महिने पूरे होनेपर डिलेवरी नहीं दे रही है। सरस्वतीके मदन सिन्हाके गालपर ब्रशका एक पोचारा जिसपर ललाइनका कापी राइट अधिकार है।

— एक बाल्टी रंग कानपुर ठग्गुआ क्लब शाखाके महामन्त्री पुरुषोत्तम दास वाजपेयीके पाकिस्तानी चेहरे पर जो हंसते हैं तो कछुएकी तरह आँख भीतर घुसेड़ लेते हैं।

— एक मुट्ठी गुलाल श्री श्याम मोहन अग्रवालके आननपर जो गाहे-बगाहे शासनके विरुद्ध करारा वक्तव्य दे देते हैं।

— चिलम कारखानेसे निकले पावडरका एक गहरा पोच आकाशवाणीके हरी भाईके तमाम बदनपर जो शक्लमें वामन नहीं, युगाण्डाके राष्ट्रपति इदी अमीनके खास पालट लगते हैं।

दूर की चीज पास नजर आती है, शुद्ध केसर हरी घास नजर आती है।
खोपड़ी में जब नाचती प्रतिमा उनकी, जो अधेड़ हो वह सास नजर आती है॥
पास की चीज उन्हें दूर नजर आती है, चाँदनी शंख का चूर नजर आती है।
होती है जब भी सवारी कभी कविता की, दिन दहाड़े गधी हूर नजर आती है॥
उन्हें औरत भी अंगीठी नजर आती है, गालियाँ मार भी मीठी नजर आती है।
आँख में देखते हैं वे हिरन या खंजन, चाँद की शक्ल भी सोंठी नजर आती है॥

नक्कालों से

होशियार !

नकली माल

न

खरीदें !!

असली फटीचर

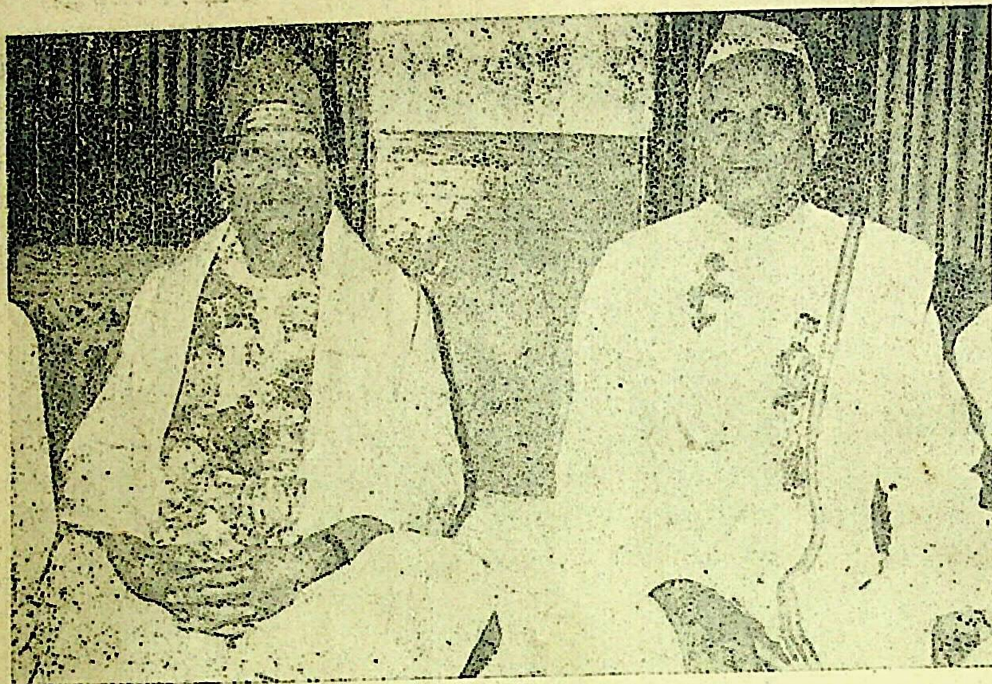
लें



हमारे एजेण्टोंसे शिकायत मिली है कि पिछले दो सालसे बाजारमें नकली फटीचरकी बिक्री हो रही है। हमारी लोकप्रियताका लाभ नकली फटीचरसे उठाया जा रहा है। हर आम व खासको इत्तिला दी जाती है कि इस फोटूको देखकर फटीचर खरीदें। जिसमें यह फोटू न मिले, वह नकली है। ऐसी पत्रिका बेचनेवालोंको पकड़वानेमें हमारी मदद कीजिये। पकड़वानेवालों जलपान मुक्त, पान बेलुवेमें दी जायगी।

—बाबू रामकृष्ण, रत्नाकर भवन, शिवाला, वाराणसी।

H R Lalalok



प्रह्लादका भवनमें दिनांक १७ अक्टूबर, १६७१ को आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्रके सभापतित्वमें श्री मुरारीलाल केडिया जन्म दिवस अखिल भारतीय विक्रम परिषदके सहयोगसे मनाया गया था। पार्श्वमें गणपति आचार्य सीताराम चतुर्वेदी आशीर्वाद देते हुए।

भाई साहब,

आप जहाँ कहीं भी हो, तुरत चले आयें। अगर अगर आने की इच्छा न हो तो आप यह सूचित करें कि आलमारी चाभी कहाँ है। आप आयें चाहें भरसाई में जायँ, हमें गठरीवाली आलमारी की चाभी चाहिए। बगल में जिस व्यक्ति का कार्टून छपा है, जिस सज्जन को मिले, उसे हमारे यहाँ पहुँचा दें। इनके गाल पर माथा है। संगीत के प्रेमी हैं।

—प्रह्लाद दास मार्कण्डेय पाण्डे
कोतवालपुरा, वाराणसी



यह कलकत्ता है

—गुलालका एक टीका श्रद्धेय सीताराम सेकसरिया जीके भालपर जो सही मानेमें, संपूर्ण भारतमें भारतीय भाषाओं को मर्यादा दे रहे हैं।

× × × ×

—गुलालका दूसरा टीका श्री राधाकृष्ण कानोड़िया जी के आनन पर जो न केवल ठलुआ क्लबके प्रति स्नेह रखते हैं बल्कि प्रत्येक समाज सेवी संस्था को सहायता करने को आकुल रहते हैं।

× × × ×

—गुलालका तीसरा टीका डा० प्रभाकर माचवेके दढ़ियल चेहरेपर जो कामरेड लेनिनके कार्टून हैं।

× × × ×

—गुलालका चौथा टीका श्री सन्हैया लाल ओझा पर जो 'संदर्भ भारती' में अपनी प्रतिभाका परिचय दे रहे हैं।

× × × ×

—गुलालका पांचवा टीका डा० सत्यनारायण उपाध्यायपर जो बनारसी कलकतिया हैं।

× × × ×

—गुलालका छठवाँ टीका नन्दलाल टाँटियाके चिमरखी चेहरेपर जो चीफ मिनिस्टर जैसे दौरेपर रहते हैं।

× × × ×

—गुलालका सातवां टीका विमल मित्रजीके उन्नत भालपर जो अभी तक उपन्यासोंका प्रसव करते जा रहे हैं जिन्हें काशीमें बाबाके नन्दीने उठाकर पटक दिया था।

× + × ×

—गुलालका आठवां टीका श्री राधेश्याम सर्राफपर जो कलकत्ताके मारवाड़ियोंमें सबसे अधिक बौद्धिक हैं।

—एक पिचकारी रंग श्री अक्षयचन्द्र शर्माकी टोपी पर जो ठलुआ क्लबकी तरह हर शनिवार को गोष्ठी करते हैं।

× × × ×

—एक कटोरा रंग बाबाके चेहरेपर जिनकी याद बराबर आती रहती है।

× × × ×

—एक पिचकारीकी धार विष्णुकान्त शास्त्रीकी जनानी सूरतपर जिनके बारेमें बेधड़कजीने लिखा है—है सूरत जनानीपर मरदानी कविता करता हूं।

× × × ×

—गुलालका एक टीका पुरुषोत्तमदास केजड़ीवाल पर जो 'नत्थू' के साथ हमेशासे ६३ के रूप रहते आ रहे हैं।

× × × ×

—गुलालका एक टीका भाई नन्दलाल कानोड़िया और भाई आत्माराम कानोड़ियाके भालपर जिनका नाम लेते ही सन्त पुरुष 'बाबू' के नाम से ख्यातिप्राप्त श्रद्धेय भागीरथ कानोड़ियाकी याद आ जाती है।

× × × ×

—एक बाल्टी रंग महावीर बाबूपर जो बनारसी बनते जा रहे हैं और एक कढ़ाही रंग राजा चिरौंजीलाल के पिछवाड़ेकी ओर जो हंसते हैं तो लगता है जैसे मुन्नवर सुलताना हैं।

× × × ×

—एक पिचकारी रंग अर्चनाके सोल एजेण्ट नथमल केडियापर जो क्रमशः बिहारी प्रभावमें आ गये हैं। गयामें मकान बनवाने को सोच रहे हैं।

—चूनेकी एक बाल्टी बाल+किशुन+गर्गपर जो नीमतल्लाका चौधरी है। बगैर झरी लिए हरिबोल बोलने नहीं देता।

—पिचकारीकी एक करारीधार श्री कन्हैयालाल फूलफगरजी तोंदपर जो दिनकरजीके पीछे परेशान हैं। कभी लोहियाजीसे लोहा लेते रहे।

× × × ×

—पिचकारीकी अन्तिम धार डा० लोढ़ाजीपर जो अपनी मिल चितरंजन एवेन्यूमें छोड़ गये हैं।

× × × ×

—एक मुट्ठी अबीर सम्पत कुमार दुगड़पर जो कलेजेवाला काम कर दिखाया न चाहते हुए भी जिओ राजा दुगड़।

★

ये कहां से आये ?

—श्री रामकृष्ण—

[पं० श्रीनारायण चतुर्वेदीजी के अनुसंधानके अनुसार च्युतसे चूतिया शब्द बना है। अच्युत तो एक ही है। परमब्रह्म परमात्मा। बाकी सभी च्युत यानी चूतिया है। डा० वासुदेव अग्रवालके मतानुसार बर्बर देशसे आनेवालों को भारतीयोंने बर्बर कहा है। शायद इन्हें स्थानीय भाषामें बुरबक कहा जाता है। ये लोग महाभारत कालसे पूर्व भारत आये थे। इसी प्रकार उजबेकसे आनेवाले उजबक कहलाये। पूर्वकालमें रूससे भारतका गहरा सम्बन्ध था। कज्जाक, मंगोलसे भी लोग आते रहे। फण्टूश, नीसरिया, चोरकट, पोंगा, लुच्चा, बेठन आदि शब्द विभिन्न स्थानोंसे आनेवालोंके नामपर बनाये गये हैं और कमसे कम सर्वत्र इनका प्रयोग होता है। महाकवि गंगसे लेकर आचार्य पं० सीताराम चतुर्वेदी भी इस शब्द का प्रयोग करते आये हैं।

प्रस्तुत लेखके विद्वान लेखकने यह सिद्ध किया है कि 'चूतिया' शब्द गाली नहीं है। रूसके एक गांवसे भारत आनेवालोंको कहा जाता था जिसका मतलब है कि उस गांवके निवासी। यहांके निवासी भारतमें व्यापार करने आते और विदेशी हमलावरोंकी फौजमें भर्ती होते थे। इस बारेमें अनेक लेख हम पिछली स्मारिकाओंमें प्रकाशित कर चुके हैं।

—सम्पादक]

चूतिया शब्द कानमें पड़ते ही कितनोंके चेहरेका रंग उड़ जाता है। लोग फिट्टे पड़ जाते हैं। कुछ खिसियाई सी हंसते रह जाते हैं। उस हंसीमें उल्लास नहीं, बल्कि झेंप होती है। झेंपी या खिसियाई हंसी हंसने वाले ठठाकर नहीं हंसते, बस मुसका भर सकते हैं। बहुत हुआ तो जरा सी ही-ही कर लिया। फिर भी उनमें परिस्थिति का मुकाबला करनेका किंचित् माद्दा होता है। वे लाल-लाल आंखें तरेरकर केवल अनुभावों द्वारा ही चित्तगत भावोंकी क्रिया-प्रतिक्रिया अभिव्यक्त कर देते है। या तो क्रोधावेशके मारे बोल नहीं पाते या बोलना मुनासिब नहीं समझते। बात चाहे जो हो, पर मौन ही रहते हैं। मगर जिनमें वाचालता होती है जो चरब जुबान होते हैं, वे बढ़कर गाली,गलीज पर उतर आते हैं। गाली गलीज करते समय अपने अनेक प्रकारके रिश्तों एवं अपनी पौरुषोचित क्षमताकी डींग मारते हैं।

शब्द चूतिया का सुनते ही मित्रों के मुख
चेहरे कितनों के ही विवर्ण पड़ जाते हैं।
कितने बिचारे मन मारे मुसकाते रहे,
कितनों के हाथ के तोते उड़ जाते हैं॥
लाल आंखें कर क्रोध प्रगटाते कुछ
कोई-कोई गाली गलीज कर जाते हैं।
काशी के निवासी पूछने पर मुसकाते मंद
वास चूतिये का उस पार बतलाते हैं॥

काशी वासी अनादि कालसे चूतियोंका वास उस पार बतलाते आए हैं। कभी भूलकर भी किसीने इस पार कहा हो ऐसा सुननेमें नहीं आया। वैसा कोई प्रसंग आने पर बेबाकीसे कह देते हैं, "अरे जाओ जाओ, ऐसे चूतिये पार बसइथे॥" जो शब्दोंके मामलेमें जरा कंजूस होते हैं, वे मुंहमें घुले पानको संभालते हुए तनिक उर्ध्वमुखी होकर सिर्फ "पार बसऽथें" कह देते है। कोई मुश्किलसे "ऽऽऽ" भर कह पाते है। शेष वाक्य उनके ताम्बूल-रंजित अधर पर खेलती मृदु स्मितिमें अंडर स्टूड होते हैं।

चूतियाका अर्थ है मूर्ख, बेवकूफ, वक, इडियट, फूल इत्यादि बुद्धिहीनताका भाव बतलाने वाला। जिसमें बुद्धि की न्यूनता होती है अथवा जिसका आई, क्यू. औसतसे बहुत नीचा होता है। चूतिया विशेषणसे 'चूतियाई", "चूतियापन", "चूतियापा", "चुतंमड़ो," चोदप इत्यादि भाववाचक संज्ञाएं बनती हैं। कुछ लोग सोधे चूतिया न कहकर चुतंगड़" कहते हैं। 'चुतंगड़' में चूतियाईका मात्रा के आधिक्यकी व्यंजना है।

चूतियाकी व्युत्पत्ति कुछ विद्वान स्त्री जननेन्द्रियको संज्ञा विशेष से बतलाते हैं। मगर गलत। भला उस संज्ञा विशेषसे मूर्खता या बेवकूफीसे क्या मतलब? यदि यही व्युत्पत्ति मानी जाये तब तो संसारके सभी प्राणी चूतिया होंगे। संसारमें जन्म लेना ही चूतियाई होगी। मगर ऐसा है नहीं। चूतियाईके गुणसे सम्पृक्त होने पर ही कोई चूतिया होता है। वैसे चूतियोंकी कोई खास पहचान नही हैं।

अत्यन्त खेद के साथ सदस्यों को सूचित करना पड़ रहा है कि सन् १९७९ ई० ठलुआ क्लब के लिए संकट का वर्ष रहा है। इस वर्ष हमने अपने कई प्रमुख सदस्यों, संरक्षकों एवं हितैषियों को खोया।

- संरक्षक सदस्य डाक्टर हजारी प्रसाद द्विवेदी।
- संरक्षक सदस्य राधाकृष्ण (राँची)।
- हिन्दी के अनन्य पत्रकार अशोक जी।
- भारत के प्रसिद्ध समाज सेवी, उद्योगपति, उदारमना और क्लबके उन्नायक श्रद्धेय श्री भागीरथ कानोड़िया। (कलकत्ता)
- भूतपूर्व एम० पी० समाजसेवी, परम दानशील श्री राम कुमार भुवालका।

आप सभी के निधन से हमारी संस्था की अपार क्षति हुई है। सभी महानुभाव हमें तन-मन-धन से बराबर सहायता देते रहे। इनकी देन को संस्था कभी नहीं भूला सकती। भगवान इनकी आत्मा को शान्ति दे और परिवारके सदस्य दुःखमें हम सबको सम्मिलित समझें।

चूतियों के सींग नहीं है ऐ बशर,
हकीकत से अपने इजहार होते हैं।
उसमें भी बाज बाज घनघोर होते हैं यूं तो दुनियां में
चूतिये अनेक होते हैं, पर तुमसा न कोई दूसरा देखा।

व्युत्पत्तिकी गलतीके कारण अक्सर लोगोंने 'चूतिया' को अश्लील ठहरा दिया है। मगर चूतिया भी मूर्ख, बेवकूफ, उल्लू, गधा भोगांवी आदि जितना ही अश्लील है, उससे अधिक नहीं।

रूसका एक राज्य है उजबेकिस्तान। जिसकी राजधानी ताशकंद है। वहांके निवासी उजबेग कहलाते हैं। उजबेकिस्तानसे बहुतसे उजबेग आकर मुगल सेनामें भर्ती हो गये थे। मुगलोंसे उनकी पुरानी लड़ाई थी और वे लड़ाईके साथ उजड्ड माने जाते थे। इसलिए धीरे-धीरे उजबक मूर्ख या बेवकूफका पर्यायवाची हो गया, जिसमें बुद्धि की कमी दिखलाई पड़ती, उसीको लोग उजबक कहने लगे। जैसे बलियाटिक, भोंगावी, शिकारपुरी कह देते हैं।

स्थान विशेषकी कभी-कभी गुणेन ख्याति हो जाती है। जैसे जैसलमेरसे कहने मात्रसे पद्मिनी नायिकाका बोध हो जाता है। उजबक और चूतिया यद्यपि प्रांत एवं जिलेकी संज्ञाएं हैं तथापि उनका प्रयोग विशेषण रूपसे मूर्खता गुणका उत्कर्ष प्रकट करनेके लिए होता है।

सोवियत रूसके सोवियत उजबेकिस्तानके अन्तर्गत एक जिला या डिस्ट्रिक्ट 'चूतिया' हैं। जैसे उत्तर प्रदेश के अन्तर्गत एक जिला बलिया तथा एक कस्बा भोगांव है और पंजाबके अन्तर्गत शिकारपुर हैं। उजबेकिस्तान से उजबक आकर जब अकबरकी सेनामें भर्ती हुए तो चूतिया जिलेके निवासी भी बहुतायतसे थे। अन्य उजबकोंकी भांति वे भी उजड्डता करते थे और पूछने पर अपना मूल स्थान चूतिया बतलाते होगें, इसीलिए कालांतर में उजबककी ही भांति चूतिया भी मूर्खता या बेवकूफी अर्थमें रूढ़ हो गया। यही चूतियाकी असलियत है।

इस लेखको पढ़कर आप यह न समझें कि मैं पर चूतिया हूं या चूतिया बनाया है। अगर यकीन न हो तो आप कज्जाकिस्तान चले जायं, वहां आपको चूतिया कस्बा आज भी मिलेगा। मैं स्वयं देख आया हूं।

कर्कशा की उत्पत्ति

—पं० ब्रजमोहन व्यास—

"विमानराज अत्रैव स्थीयताम्"

सवेरे ठीक दस बजे रेडियोसे यह शब्द सहसा कानोंमें पड़ा। समझा कि मदराससे किसी संस्कृत सम्मेलन की कार्यवाही 'रिले' हो रही होगी। मुड़कर रेडियो के 'टेलीविजन डायल' की ओर देखा तो सकते में आ गया। समझा था कि भगवा बाँधे कोई पंडित राजका चित्र संस्कृतमें व्याख्यान देते हुए डायल पर दिखलाई देगा। परन्तु देखता क्या हूँ कि रेडियो की सुई स्वर्गके एक विशेष विभाग पर लगी हुई है और एक श्वेत हंसके चिह्न से अंकित विशाल व्योमयानसे प्रजापति ब्रह्माजी एक विशाल भवनके सामने उतर रहे हैं।

लोगों को हमारे देवी देवताओंके सम्बन्धमें बड़ा भ्रम है। लोग समझते हैं कि इनको कुछ काम काज नहीं रहता और ये मुफ्तखोरे स्वर्गमें केवल गुलछर्रे उड़ाया करते हैं। वास्तवमें बात इसके बिल्कुल विपरीत है। यह तो कहिये कि पुरातत्त्वके अन्वेषणके प्रसंगमें पितामह ब्रह्माजी की एक डायरी सौभाग्य से मिल गई जिससे वहाँ का राज थोड़ा सा खुल गया वर्ना इस गूढ़ रहस्य पर न जाने अभी कितने काल तक पर्दा पड़ा रहता। यह लेख इसी डायरीके आधारपर तथा रेडियोके टेलीविजन डायल पर जो मैंने स्वयं अपनी आँखोंसे देखा, लिखा गया है। इसकी सत्यता पर किसी को किसी प्रकार का भ्रम न होना चाहिये। डायरी के प्रथम पृष्ठ पर यह श्लोक लिखा हुआ है।

अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः
ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापितन्नरं रंजयति—

अर्थात् सीधे सादे मनुष्योंको गूढ़से गूढ़ बातें समझाई जा सकती हैं और बुद्धिमान आदमियों को भी उनके समझानेमें कोई कठिनाई नहीं होती, परन्तु ऐसे मनुष्यों को जिनमें बुद्धि तो थोड़ी है परन्तु अपने को लगाते बहुत हैं ब्रह्मा भी नहीं समझा सकते। इसलिये पाठकों से प्रार्थना है कि इस लेखके तथ्यमें वे अपनी बुद्धि की टांग न अड़ावें और इसे अक्षरशः सत्य समझें वर्ना हानि उन्हीं की होगी और वे एक अतीव गूढ़ रहस्य की जानकारीसे वंचित रहेंगे।

स्वर्गके प्रबन्ध समितिके चेयरमैन शचीपति देवराज इन्द्र हैं, यह सबको मालूम है। परन्तु उनकी सभा का, जहाँ इस संसार के सम्बन्धमें सब देवताओंके परामर्शसे प्रस्ताव पास होते हैं, इस डायरीमें कुछ विस्तार से वर्णन किया गया है। डायरीमें एक लेख है जिसको जैसा का तैसा उद्धृत करते हैं।

"शक्रस्य दिव्या सभा, विस्तीर्णा योजना शतम्। शतमध्यर्धमायता, वैहायसी कामगमा, पंचयोजन मुच्छिता" अर्थात् इंद्रकी दिव्य सभा १०० योजना लंबी, ५० योजन चौड़ी, ५ योजन ऊँची, आकाशमें स्थित है और इच्छा-

---

कलाकंद !

जूड़ा है जलेबी या इमरती समान बना,
चमचम सी चमक दिखाता चला मुख चन्द।
सुन्दर शरीर सूजी हलवा मलाई मंजु,
लड्डू सुनेत्र अङ्ग गुझिया से कसे बन्द॥
खाझा परिधान खीरमोहन कटाक्ष लिये,
लगती रसगुल्ले सी मीठी मुसकान मन्द।
बर्फी सी बाणी ले नजाकत में सेव यहाँ,
छवि, इठलाती चली आती बनी कलाकन्द॥
शुचि लंक में दिल्ली पुरानी छिपी,
मधुवाणी में गोकुल धाम छिपा है।
कलकत्ता छिपा घने केश में है,
अति स्वस्थ शरीर में श्याम छिपा है॥
काश्मीर कपोलों के रङ्ग छिपा,
छवि चन्द्र कला में असाम छिपा है।
नयनों में नैनीताल बसा,
उर भीतर काठगुदाम छिपा है॥

—'मुर्दुहि'

नुसार एक स्थानसे दूसरे स्थानमें जा सकती है। डायरी से एक विशेष बातका पता चला वह यह है कि सांसारिक संस्थाओं की भांति वहां का विस्तीर्ण शासन प्रबन्ध अनेक भागोंमें विभक्त है और प्रत्येक विभागके आचार्य एक प्रमुख देवता या महर्षि हैं, यथा शिक्षा विभाग की चेयरमैन देवी सरस्वती और सुपरिन्टेडेण्ट गणपति गणेश, पी० डब्लू० डी०. के विश्वकर्मा, आबकारी के आशुतोष शंकर, संगीत समितिके नारद इत्यादि हैं। सांसारिक संस्थाओंके विभागोंसे वहां थोड़ा अन्तर भी है, जैसे यहां फौती, पैदाइश (मरण और जन्म) एक अफसरके अधिकार में हैं वहाँ फौती यमराजके और पैदाइश ब्रह्माजीके सुपुर्द हैं। इस लेख का सम्बन्ध उस विस्तीर्ण शासनके एक प्रमुख विभाग पैदाइश अर्थात् जन्म विभाग से है।

डायरी देखनेसे मालूम हुआ कि प्रजापति को प्रतिदिन सैकड़ों जीवोंका निर्माण करना पड़ता है। इसका हिसाब वे अपनी डायरी में रखते हैं। उनका काम प्रतिदिन दफ्तरमें १० बजे आना और डायरीमें जितनी संख्या लिखी हुई रहती है उतने जीवोंका ५ बजे तक में निर्माण कर अपने घर चले जाना होता है। उस दिन डायरी देखनेसे मालूम हुआ कि उनको केवल एक व्यक्तिका निर्माण करना है। सोचा कि दो चार मिनटमें इसका निर्माण कर छुट्टी पा जायेंगे। यह सोच ही रहे थे कि भवनके बाहर बहुतसे व्योमयानों के एक साथ उतरने की घर्राहट सुन पड़ी। प्रतिहारीने आकर निवेदन किया कि महाराज द्वारपर भगवान आशुतोष शंकर प्रभृति कई देवता और महर्षि उपस्थित हैं। प्रजापतिने कहा कि उन्हें सादर लिवा लाओ। आते ही शंकरजीने ठट्ठा मारकर कहा—भाई देखो, वाजवी बात यह है कि चाहे मनुष्य हो या देवता जो काम जिसके सुपुर्द हो, उसे पूर्ण रूपसे करना चाहिये। हमें मालूम है कि आज आपको एक ही व्यक्ति

का निर्माण करना है तो आप उसमें अपना पूरा समय और योग्यता लगाइये और एक ऐसी कर्कशा स्त्री का निर्माण कीजिये जिसका जोड़ संसार में न मिले। प्रजापति विचारमें पड़ गये, फिर बोले—कर्कशा तो मैं ऐसी बना सकता हूँ कि उसके सामने क्रोधीसे क्रोधी आदमी तोबा बोल दे, परन्तु उससे विवाह कौन करेगा, क्योंकि शास्त्रमें लिखा है कि ऐसी स्त्री को जन्म देनेमें जिसका विवाह न हो सके निर्माणकर्ता को पाप होता है। इस कारण यदि आप लोगोंमें से कोई जन्म लेकर उससे विवाह करने पर राजी हो तो हम निर्माण कर दें। शंकरजी बोले—क्षमा कीजिये मैं ऐसा नहीं कर सकता। मेरी तो भांग उतार देगी। बाज आये। कृष्ण बोले—इस प्रस्ताव को मैं दूर ही से नमस्कार करता हूँ। मैं एक रसिया व्यक्ति हूँ—मैं और कर्कशा! केवल सोचकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। गणपति बोले—महाराज मेरे एक ही दांत बचा है उसे तो बचा रहने दीजिये। तोंद ही से तो मेरी शोभा है

उसके पचक जाने पर तो मैं कहीं का न रहूँगा। जटा जूट धारी दुर्वासा ने कहा—मुझे तो इस प्रस्तावके अस्वीकार करनेमें लज्जा मालूम होती है, परन्तु करूं क्या! यदि कोई पूछ बैठा कि 'कस्मिन् पर्वणि मुण्डनम्' कहिये यह आपने सर क्यों मुड़वाया तो क्या उत्तर दूंगा क्योंकि वह सरमें एक बाल बचने तो देगी नहीं। सारांश यह कि सभी देवता और महर्षि बगलें झांकने लगे। इतने में देवताओंकी हेठी होते देख कर यमराज बोले कि मुझे प्रस्ताव स्वीकार है। सोचा कि आखिर दर्जे दवा तो उनके हाथ में है।

अजलको देख के जेरे फलक करार आया।
मुसीबतोंको बिल आखिर एक इस्तेहा तो है॥

बात तय हो गई। सब देवता और महर्षि अपने अपने स्थान पर चले गये। ब्रह्माजीने दरवाजा बन्द करने की आज्ञा दी और स्वयम् अपना रत्नजटित खड़ाऊं उतार लकड़ीकी खड़ाऊं पहिन कर लोहनिर्मित कोठरीकी ओर चले। कोठरीकी दीवार विद्युत प्रवाह से परिवेष्ठित थी ताकि उसे कोई छू न सके। चारों ओर दीवालोंपर मोटे मोटे अक्षरोंमें 'मृत्यु' के साइनबोर्ड लटक रहे थे। प्रजापतिने बड़ी सावधानीसे दरवाजा खोला और भीतर घुसे। सामने एक लोहेकी आलमारीमें अनेक प्रकारकी शीशियाँ रक्खी हुई थीं। कई एक शीशियोंके मुंहसे डाट बन्द होते हुए भी अग्निकी ज्वाला निकल रही थी। इतने में एक शीशीके मुंह से जिसपर 'हलाहल पुत्र' का लेबिल लगा था देखकर ब्रह्माजीका मुखमंडल खिल उठा। सभी शीशियोंमें से थोड़ा-थोड़ा विष लेकर अपने दफ्तर लौट आये आये और उनकी सहायतासे दिन भरमें जी लगाकर उन्होंने एक ऐसी कर्कशा स्त्री बना डाली जैसी न भूतो न भविष्यति। समय से उसका एक ब्राह्मणके घर में जन्म हुआ। प्रसवके समय ही उसकी माता अपनी नव प्रसूता पुत्रीके भावी पतिके घर चली गई। पुण्यात्मा थी। समय से दूसरे नगरमें एक ब्राह्मणके यहां पुत्र रूपमें यमराजने जन्म लिया। जैसे जैसे लड़की का शरीर यौवनसे भरने लगा वैसे ही वैसे महल्ला खाली होने लगा। लड़कीके पिताने दबी बिल्लीकी भाँति घरमें रहने ही में अपनी अपनी खैरियत समझी और इसी प्रयत्नमें निरंतर लगे

रहते थे कि येन केन प्रकारेण लड़कीको भाँवरिया कर इस रौरवसे मुक्त हो जाय। दीनवत्सल भगवान को उनपर दया आ गई और उसी ब्राह्मण कुल में जहाँ यमने जन्म लिया था। विवाहकी बात चल पड़ी। लड़केके माता-पिताने बहुत यत्न किया कि यह बातचीत संबंध रूपमें परिणत न हो क्योंकि वे लड़कीकी शोहरत सुन चुके थे, परन्तु बात सधी बधी थी क्या करते। लड़का उलझ पड़ा और साहब आजकलके लड़के भी तो एक खास चीज होते हैं। 'अजब यह हालते दिल है जहाँ देखी नई सूरत—दिले नादां मचलता है कि हम तो बस यही लगे—उसीकी जिद होकर रही और विवाह हो गया। घरमें नववधूका आना क्या था, कयामत आई। आते ही बहूने सरपर आसमान उठा लिया। घर में कोहराम मच गया-माता-पिता तीर्थ यात्राको चले गये। पतिदेवकी बुरी हालत थी। त्राहि त्राहि करते लगे परन्तु 'अब रोनेसे क्या होता है विधि ने है कर दिया विधान' श्रीमतीजीको उन्होंने गिड़गिड़ा कर मधुरवाणीसे समझाना शुरू किया।

परंतु विद्या और बुद्धिमें बड़ा अन्तर होता है। विद्या अध्ययनसे सबको आ सकती है, परन्तु बुद्धि ईश्वरदत्त होती है। प्रजापति सबको बुद्धि नहीं देते या यों कहिये नहीं दे सकते। कारण इसका डायरीसे पता चला। स्वर्गमें बुद्धि कम मात्रामें होती है। यहाँ तक इसकी कमी है कि देवताओं और महर्षियोंमें भी यह अमूल्य पदार्थ उचित मात्रामें वितरण नहीं किया जा सका।

'जब तोप सामने हो तो अखबार निकालो।' वाली मसल चरितार्थ हो रही थी। एक दिन घबरा कर उन्होंने सोचा कि स्त्रीका परित्याग कर चल दें और स्वर्गमें जाकर ब्रह्माजीकी पीठ ठोक हारी मान लें। परन्तु शास्त्र का वचन स्मरण आया कि मनुष्यको स्त्रीका परित्याग तब तक न करना चाहिए जब तक कि उसके पुत्र न हो जाय। सोचा आत्मघात कर लें परन्तु जिसके भरोसे उन्होंने प्रजापतिका प्रस्ताव स्वीकार किया था उस बचावके दरवाजेको भी महर्षियोंने बन्द कर दिया। इधर जाओ तो कुआँ उधर जाओ तो मड़ार। जी मसोस कर रह गये और पुत्रोत्पत्तिकी बाट जोहते हुए ज्यों त्यों कर समय काटने लगे। ईश्वरकी अनुकम्पासे निर्धारित समयपर पुत्र उत्पन्न हुआ—जानमें जान आई। परन्तु ताडसे गिरे तो खजूरमें अटके। पुत्र पैदा होनेके साथ साथ स्वभावतः वात्सल्यका प्रादुर्भाव हुआ। गुड भरी हँसिया न निगली न उगली जाय। इधर पुत्रको छोड़नेको जी नहीं चाहता था और उधर श्रीमती जो सरका बाल बिने डालती थीं। अजब असमंजस में थे। इधर जितना पुत्र बड़ा होता जाता था उतना ही उसके स्नेहपाशमें बँधते जाते थे। क्रमशः पुत्र बड़ा हुआ तब एकान्तमें उसे बुलाकर भयभीत नेत्रोंसे इधर उधर देखते हुए कि कहीं श्रीमतीजी ता सुन नहीं रही हैं बोले—पुत्र, तुम्हारी अम्माने हमारा जीवन विषमय कर रखा है। आये दिन एक न एक बात बड़ी

किये रहती हैं। अब सहा नहीं जाता इसलिये मैं घर छोड़ विषमय कर रखा है। आये दिन एक न एक बात खड़ी किये रहती हैं। अब सहा नहीं जाता इसलिये मैं घर छोड़ कर सर्वदाके लिए विदा हो रहा हूं। पुत्र रो उठा बोला—तात तुम चले जाओगे तो जीवन निर्वाह कैसे होगा? पिता बोले बेटा वैद्यक पढ़ो सब ठीक हो जायगा। पुत्र बोला—तात नगरमें कितने वैद्य हैं जिन्हें दोनों वक्त रूखा सूखा भोजन भी नहीं मिलता। पुत्रकी बात सुनकर विवाहोपरान्त उस दिन पहली बार उनके चेहरपरे मुस्कराहट आई। मोक्षकी आशामें प्रसन्न होना स्वाभाविक ही है। बोले—पुत्र निकट आ जाओ आज तुमसे एक गुप्त रहस्य कहूँगा। मैं यमराज हूं। जब किसी रोगीको देखने जाना तो पहिले दक्षिणकी ओर देख लेना। मैं तुम्हें दिव्य दृष्टि देता हूं। यदि दक्षिणकी ओर तुम्हें मेरा प्रतिबिम्ब देख पड़ जाय तो उस रोगीकी चिकित्सा न करना। तुम्हारी बदनामी होगी। वह अवश्य मरेगा। और यदि मेरी छाया न दिखलाई पड़े तो तुम्हारे नाड़ीपर हाथ रखते ही रोगी चंगा होकर तत्काल उठ बैठेगा। इतना कहकर पिता अन्तर्ध्यान हो गये। पुत्रको बात समझमें आ गई और उसने वैद्यक करना आरम्भ कर दिया। अब क्या कहना था—देश देशान्तरमें शोर हो गया कि अमुक वैद्यके नाड़ीपर हाथ रखते ही रोगी चंगा हो जाता है। जन्मेजयका सा सर्पयज्ञ प्रारम्भ हो गया और धनकी अनभ्रा वृष्टि होने लगी। इसी अवसरपर किसी देशके महाराज बीमार पड़े और मरणासन्न हो गये। बड़े-बड़े वैद्योंने जवाब दे दिया। महारानी हमारे वैद्यकी ख्याति सुन चुकी थी। अपने वृद्ध मंत्री द्वारा उन्हें बुलवाया और कहा कि वैद्यराज, यदि आप हमारे पतिको अच्छा कर देंगे तो मैं अपना आधा राज्य दे दूंगी और अपनी एक मात्र सन्तान का आपसे विवाह कर दूंगी। वैद्यराजके पेट में चूहे कूदने लगे सोचा कि 'न सौ सुनारकी न एक लोहारको।' एक ही रोगीकी चिकित्सामें बेड़ा पार है। बोले, महारानी, मैं भरसक प्रयत्न करूंगा, आरोग्य होना ईश्वरके हाथ है।' इतना कहकर वैद्यराज रोगीके कमरे की ओर चले। भीतर जाकर देखा कि महाराज बेहोश पड़े हैं और ऊर्ध्वश्वास चल रही है। नौकरोंसे कहा कि तुम सब लोग कमरेके बाहर चले जाओ। भीतरसे दरवाजा बन्द कर उसने दक्षिणकी ओर मुंह फेरा तो देखा कि पिताजी खड़े हैं। वैद्यराजके पैरके तलेसे जमीन खिसक गई। बोले—पिताजी, क्या आज ही आपको आना था। आप चले जाइये तो एक ही रोगीकी चिकित्सासे फिर जन्म भर वैद्यक करनेकी आवश्यकता न पड़े। मैं आपका पुत्र हूं और पिताका कर्तव्य है कि वह पुत्र के हितकी बात करे। यम बोले वत्स, कालका नियम अटल है। अब महाराजको कोई बचा नहीं सकता, मैं उन्हें लेने आया हूं। तुम चिकित्सा करनेके लिये बुलाये गये थे, इसलिए तुमको सावधान करनेके लिए अपने दूतोंको न भेजकर मैं स्वयं निर्धारित समयसे थोड़ा पहिले चला आया। वैद्यराज बोले—पिताजी आप कितनी देरमें महाराजको ले जायेंगे। यम बोले—एक घण्टे में। वैद्यराजके चेहरेपर प्रतिभाकी लाली दौड़ गई। बोले—पिताजी तब तो अभी बड़ा समय है। अम्मा आपको बहुत याद करती हैं। आप ठहरिये मैं बुला आता हूं। यह कहकर वैद्यराज दरवाजेकी ओर बढ़े। यमराज 'ना पुत्र' 'ना पुत्र' ऐसा मत करो वर्ना मैं चला जाऊंगा। वैद्यराज भला कब सुनते थे। इसीलिए तो उन्होंने यह हिकमत निकाली थी। दांव चल गया और यमराज कमरेसे भाग निकले। वैद्यराजने फिर दक्षिणकी ओर सर उठाया तो देखा पिताजी नहीं हैं। दौड़कर उन्होंने महाराजकी नाड़ीपर हाथ रख दिया और वे उठ बैठे।

सहसा रेडियो बन्द हो गया और साथ ही साथ उनके टेलीविजन डायलपर इस घटनाका अभिनय मैंने अपने मित्रोंकी ओर मुंह फेरा तो देखा कि जिन मित्रोंकी श्रीमतीजी हमारी नायिकाकी सहेली थीं उनके मुखपर हवाइयां उड़ रही थीं।

●

शिकायत

— श्रीमती कैथरीन बेस्ट —

सीले साहबने अन्दर प्रवेश करके टेलीफोन-बूथका दरवाजा बन्दकर लिया। चोंगा उठाया, डायल घुमाया और 'मेसर्स टिगलफुटर ऐंड को' से संम्पर्क स्थापित किया।

"टिगलफुटर ९ ४००," उन्होंने आपरेटर से कहा।

"नमस्तेजी," उधरसे एक मृदु स्वर बोला, "टिगल-फुटर ऐंड को"

"मेरी पत्नीने आपके यहाँसे आटा लिया था...."

"जरा रुकिये, साहब," उत्तर मिला, "हम आपको किराना-विभागसे मिलाये देते हैं।"

"नमस्ते साहब-किराना विभाग, टिगलफुटर ऐंड को"

"नमस्ते," वे बोले, "मुझे आपसे उस आटेके बारेमें कुछ कहना है जो मेरी पत्नी...."

"कौन" ?

"मेरी पत्नी।"

"शुभ नाम"

"श्रीमती सीले।"

"क्या ? माफ कीजियेगा सुनायी नहीं पड़ा।"

"श्रीमती सीले। सी–ई ई–ई ले।"

४७९ क्रासवुड एवेन्यू, ब्राक्सविले, न्यूयार्क।

"इस आटेमें कीड़े हैं।"

"तो यह कहिये कि आपको शिकायत लिखानी हैं।" जी ! उन्होंने कहा।

"मैं आपको शिकायत विभागसे मिलाये देता हूँ,"

"गुड आफ्टरनून, सर !" शिकायत विभागसे आवाज आयी—

"टिगलफुटर ऐंड को।"

"क्या आप कीड़ा–विभागसे बोल रहे हैं ?" उन्होंने पूछा।

"माफ कीजियेगा, हम आपका मतलब नहीं समझे। हम लोग आपके यहाँसे जो आटा लाये थे, साराका सारा सड़ा हुआ हैं।"

"बेशक !" उन्होंने पसीना पोंछा और बोले, "मैंने कीड़ोंका नहीं, आटेका आर्डर दिया था।"

"एक सेकंड रुकिये, मैं आपको पुनर्व्यस्थापन विभाग मिलाये देता हूँ।"

"नमस्ते महोदय, पुनर्व्यस्थापन–विभाग, टिगलफुटर ऐंड को,"

"मेरे पास कीड़े है," वे भर्रायी आवाज में बोले।

"आप कौन सा विभाग चाहते हैं ?"

"यह सब मैं नहीं जानता। बात ऐसी है कि मेरी पत्नीने आपके यहाँ आटेका आर्डर दिया था, मगर इसमें तो बेशुमार कीड़े रेंग रहे हैं। मैं चाहता हूँ कि आप...."

"आपका शुभ नाम ?"

"सीले।"

"आपका पता ?"

"४७९, क्रासवुड एवेन्यू।"

"शहर ?"

"ब्रांक्सविले।"

"स्टेट ?"

"अजीब बेहूदगी हैं।"

"क्षमा कीजियेगा, आपने कौन नम्बर माँगा ?"

"न्यूयार्क ?"

"शुक्रिया ! क्या शिकायत हैं ?"

"मेरी पत्नी जो आटा आपके यहाँसे लायी थी, वह इतना आला दर्जेका था कि वैसा शायद आप अभी तक न देखा हो। यह आटा एक बहुत ही आकर्षक लिफाफेमें बन्द था। लिफाफा हाथमें पाकर हम बड़े खुश हुए, लेकिन.........

जब हम लोगोंने उसे खोला, तो जानते हैं हमें उसमें क्या मिला ? कीड़े–गन्दे, रेंगते हुए बेशुमार कीड़े।"

"तो आपको खराब माल मिला, यहीं न ?" आप किस प्रकारका पुनर्व्यवस्थान चाहते हैं ?"

मैं चाहता हूँ," उन्होंने मरी हुई आवाजमें कहा, "कि आप इस आटेके बदले ऐसा आटा दे दें जिसमें रेंगते हुए कीड़े न हों।"

"एक सेकंड, प्लीज ? मैं आपको आर्डर विभाग से.........सुनते ही झुंझलाकर चोंगा झटकेसे क्रेडिलपर पटक दिया और मक्खी मारते हुए टेलीफोन बूथसे बाहर निकल आये।—

अवस्था—बोध

—डा० पुरुषोत्तम वाजपेयी—

होलीके आगमनके साथ वय अथवा अवस्थाका अन्तर समाप्त हो जाता है। बाल्यावस्था, युवावस्था तथा वृद्धावस्थाका अन्तर इतना कम हो जाता है कि 'होलीमें बाबा भी देवर लागें' नामक कहावत व्यापकताके साथ-साथ जनप्रियता भी अर्जित करती है।

वैसे तो मनुष्य एक समयमें—कई अवस्थाओंसे आरोपित रहता है। एक तो मनुष्यकी वास्तविक वय अथवा अवस्था, दूसरी उसकी मनोवैज्ञानिष अवस्था तथा तीसरी जो देखनेवालोंको जंचे, प्रमुख अवस्था है।

मई दिवसके अवसरपर वाराणसी पत्र परिषदके मजदूरोंको सम्बोधित करते हुए डा० नामवर सिंहने कहा था कि आज एक प्रकारसे मेरी वर्ष गांठ भी है क्योंकि मेरी वास्तविक आयु जो कुछ है वह तो है ही परन्तु उससे भिन्न जो जन्मतिथि पाठशालामें दिखाई गई थी उसके अनुसार मेरी वर्ष गांठ १ मईको होती है।

शिक्षा जगतमें जाने अथवा अनजाने दो अवस्थामें चलती हैं—एक तो वास्तविक तथा दूसरी जो पाठशाला रजिस्टरमें दर्ज रहती है।

स्वर्गीय बेढब बनारसी एक समयमें मनुष्यकी तीन अवस्थाएं मानते थे। एक तो वास्तविक आयु, दूसरी मनोवैज्ञानिक तथा तीसरी जो स्कूलमें लिखाई जाती है।

प्रसिद्ध कोशकार स्वर्गीय बाबू रामचन्द्र वर्मा मनुष्यकी वर्ष गांठको उसकी आयुमें बढ़ोत्तरीके स्थानपर घटोत्तरी मानते थे। उनका कहना था कि उनकी अवस्थामें वृद्धि तो हुई, परन्तु उनकी मौत पहलेकी अपेक्षा नजदीक आ गई है।

सफेद बालोंसे वयका वास्तविक बोध नहीं होता है। इस सम्बन्धमें आचार्य केशवदासकी प्रसिद्ध पंक्ति—

"केशव केशन अस करी जस अरिहूँ न कराय।
उझकि उझकि मृगलोचनी बाबा कहि कहि जाय॥"

आज भी अपना महत्व रखती है।

इस सन्दर्भमें पं० सीताराम चतुर्वेदीकी उक्ति जिसे उन्होंने बेढबजोके सम्बन्धमें लिखा था समीचीन है।

बेढब जस हेयर करी, एटम बम न कराहिं।
पाउडर पोती गर्ल सब ओल्डफूल कहि जाहिं॥"

अवस्था बोधके सम्बन्धमें मेरे एक मित्र अपनी बीती सुनाते थे। उनका कहना था कि उनकी पत्नी प्रायः उन्हें बूढ़ा कहा करती थी। एक दिन उन्होंने पत्नीसे कहा कि तुम मुझे बूढ़ा समझती हो और आज भी मैं जब मगंला मुखियोंके बाजारसे जो कार्यालय जानेके मार्गमें पड़ता था, गुजर रहा था तब उनमेंसे एक मुझे अपना अपनत्व प्रदर्शितकर बुला रही थी। पत्नीने कहा, इससे तुम जवान तो नहीं हो गये।। परन्तु मैं आपको बूढ़ा नहीं कहूंगी, बशर्ते आप मगंला मुखियोंके बाजारसे आना जाना छोड़ दे। और अन्तमें समझौता इसी शर्तपर हो गया।

अवस्थाके सम्बन्धमें एक आम बात प्रचलित है कि पुरुष ४५ वर्षतत आयु कम बतानेकी चेष्टा हैं परन्तु ४५ वर्षके पश्चात् उम्र बढ़ाकर बतानेका प्रयास करते हैं।

महिलाएं प्रायः कम उम्र बतानेका प्रयास करती हैं। इस सन्दर्भमें एक बड़ा ही रोचक प्रसंग है। एक महिला अक्सर अपनी उम्र कम बताया करती थी। उस महिलाके साथ उसकी लड़की भी रहा करती थी। एक बार जब उक्त महिलासे किसीने उसकी उम्र पूंछी और महिलाने वही पुराना उत्तर दुहरा दिया तब उसकी लड़कीने कहा—"मम्मी उम्र बताते समय कमसे कम अपनी और मेरो उम्र में ९ महोने का तो अन्तर रक्खा कीजिये।

मनुष्य अपनी जाग्रतावस्था और सुषुप्तावस्थाका भेद भी होलीके अवसरपर भूल जाता है। भंगकी तरंग तथा सामूहिक उल्लासपूर्ण वातावरणमें मनुष्य गम्भीरताको छोड़कर अपनी सुषुप्त भावनाओंका भी प्रदर्शन उन्मत्त रूपमें करता है।

मानव जागरूक संवेदनशील प्राणी है। अत. अवस्था-बोधकी भावनासे वह सदैव ही चैतन्य रहता है। परन्तु होलीके पर्वपर वह अवस्था बोधको भूलकर सामूहिक उल्लासमें सम्मलित होता है।

●

तकल्लुफ

—श्री बलदेव प्रसाद मिश्र—

स्त्री-रोगों तथा प्रसूति-तंत्रके एक विख्यात डाक्टर एक नवाब साहबकी पुत्री को देखने गये, जिसे बच्चा होने वाला था।

नवाब साहबने कहा-इस नाचीजपर आपने जो मेहरबानीकी हैं, उसका शुक्रिया कैसे अदा करूं, समझमें नहीं आता।

डाक्टर बोले-मुझे फीस लेनी हैं, मरीज देखना हैं। इसमें मेहरबानी क्या।

नवाब साहब बोले आप न जाने, क्या-क्या जरूरी काम छोड़कर तशरीफ लाये होगें। तशरीफ रखिये। शरबत मंगानेका हुक्म दीजिये।

डाक्टरने कहा-पहले मरीज दिखलाइये।

नवाब साहबने कहा—उसका हाल सुन लीजिए। खुदाकी मेहरबानीसे बच्चा होने वाला है। वक्त बीत गया, लेकिन हो नहीं रहा हैं।

डाक्टरने पूछा वक्त बीत गया?

नवाब साहब बोले जी हां? मरीजकी मांके ख्यालसे यह ग्यारहवां महीना हैं।

डाक्टर ने पूछा-ठीक मालूम हैं?

नवाब साहबने कहा—ख्यालकी बात है। मरीजको मां का अक्सर सही होता हैं?

डाक्टरने पूछा—इस वक्त क्या हाल हैं?

नवाब साहब बोले—आठ दिन हो गये, दर्द हो रहा हैं। जानिये कि ताबीज भभूत, फकीरी दुआ, कोई चीज काम नही कर रही हैं।

डाक्टरने कहा-तो पहले मैं मरीज देखूंगा।

नवाब साहबने इसकी व्यवस्था की। डाक्टर मरीज देखकर आये। नवाब साहबने कहा—तशरीफ रखिये। जरा आराम कीजिये, तब हाल बतलाइयेगा।

डाक्टरने कहा—जनाव, मरीजकी हालत अच्छी नहीं। आज ही बच्चा होना चाहिये।

नवाब साहब बोले—आपका यह ख्याल हैं तो जरूर होना चाहिये, लेकिन किया क्या जाय?

डाक्टर बोले—मैं दवा खिलाऊंगा। सब ठीक हो जायेगा।

नवाब साहबने कहा—तो फिर क्या फिक्र हैं। दवा इनायत कीजिये।

डाक्टर बोले—लेकिन एक शर्त हैं। आपकी बेटी को हिन्दू बनना पड़ेगा। तभी बच्चा होगा।

नवाब साहब घबराकर बोले—हिन्दू! इससे और बच्चा होनेसे क्या वास्ता?

डाक्टरने कहा—अगर मेरी दवा करनी है तो उस मरीज को हिन्दू बनाना ही होगा।

नवाब साहब बोले—मान लीजिये कि मुझे कोई इतराज न हों, लेकिन दामादसे बिना पूछे ऐसा कैसे किया जा सकता हैं।

डाक्टर बोले—फिर आपको जो करना हो कीजिये।

नवाब साहब बोले—हम तो जो कुछ कर सकते थे, कर चुके। साहब, आप मेरी दिक्कत पर गौर फरमाइये।

डाक्टरने कहा—बच्चा होते ही मरीज को फिर मुसलमान बना लीजियेगा।

नवाब साहबने प्रसन्न होकर कहा—बहुत अच्छा? खुदा आपको बरकत दे।

परिवार-नियोजन

—पुरुषोत्तम वाजपेयी—

होली पर 'पूती' घर आये
मैंने श्रद्धापूर्वक चरण छुवाये
और आर्शीवाद दिया
दो पुत्रियों के पश्चात अब
तुम प्रयास करो
पुत्ररत्न प्राप्त करो
वह घबड़ाया और बोला
मैं हूँ अपनी पत्नीका अकेला
पुत्र रत्न प्राप्त करते ही
मुझे झेलना पड़ेगा
कारागृहका झमेला
और साथमें आप भी होंगे
क्योंकि परिवार-नियोजनकृत भंग करनेके लिए
आपही मुझे प्रोत्साहित कर रहे हैं।
मैं नहीं चाहता वंशवृद्धिपर आप विवशकर रहे है।

डाक्टर साहबके कथनानुसार मरीज को हिन्दू बनाया गया। तब डाक्टरने दवा दो और उसके आधे घण्टे बाद जनानखानेसे खबर आई कि दो बच्चे हुए हैं।

नवाब साहबने डाक्टर को बहुत कुछ इनाम दिया और डाक्टरने उन्हें बधाई और धन्यवाद किया बातें ही बातों मे नवाब साहबने पूछा–गुस्ताखी मुआफ हो तो एक बात पूछूं। क्या आपकी दवा हिन्दुओं पर ही कारगार होती हैं।

डाक्टर बोले–जी नहीं? लेकिन यहाँ बात कुछ और थी। आपके और आपके दामादके खानदानके 'तकल्लुफ' का पूरा असर उन बच्चोंपर हो चुका था। दोनों बच्चे इसी बातपर रूके हुए थे कि पहले कौन पैदा हो मरीज के हिन्दू होते ही तकल्लुफका असर जाता रहा और दोनों झटसे पैदा हो गये। अब आप मरीज को शौकसे मुसलमान बना ले।

आवत लाल गुलाल लिये मग सूने मिली एक नार नवीनो।
त्यों 'रसखान' लगाइ हिये भटू, मौज कियो मन माँहि अधीन॥
सारी फटी, सुकुमारी हटी, अंगिया दरकी सरकी रंग भीनो।
गाल गुलाल लगाइ, लगाइ कै अंक रिझाइ बिदाकर दीनो॥

—रसखान

सखि उरबसी सी गरे पहिरे उरबसी सो,
पिया उर बसी सी छवि देखे दुख सरकि जात।
कंचुकी कसी सी, बहु उपमा लसी सी,
रूप सुन्दर धसी सी परयंक पर थिरकि जात॥
कहे 'हरिचरन' रहो चमकि बतीसी प्यारी,
जामें लगी मीसी हिये सौतिन दरकि जात।
भुज में कसी सो सिन्धु गंग ज्यों धंसी सी,
जाके सी सी करिबे में सुधा सीसी सी ढरकि जात।

—हरिचरन

वन्दे मातरम् का इतिहास



भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानियों की धमनियों में विद्रोह का तूफान लानेवाला गीत 'वन्दे मातरम्' आज राष्ट्रीय गीत के रूप में स्वीकृत है। पर इस गीत का प्रामाणिक लिखित इतिहास विश्व को किसी भी भाषा में प्राप्य नहीं था।

इस इतिहास में इस गीत के जन्म की रोचक कथा के साथ ही भारतीय स्वतन्त्रता-संग्राम में इसके महत्व को भी प्रतिपादित किया गया है। किन-किन विरोधों और अवरोधों के पश्चात् इस गीत को राष्ट्रीय गीत का महत्व प्राप्त हो सका, इस तथ्य की प्रामाणिक जानकारी भी इस इतिहास में उपलब्ध है। लेखक ने इस गीत के साथ ही तत्कालीन भारत की सामाजिक और राजनीतिक स्थितियों का चित्रण किया है जिससे पुस्तक का महत्व बढ़ गया है।

वन्दे मातरम् का इतिहास एक ऐसा आईना है जिसमें परतन्त्र भारत की छवि स्पष्ट उभर कर सामने आती है, साथ ही उन शहीदों की चिरगाथायें भी जिनके कारण आज हम स्वतन्त्र भारतीय कहलाते हैं। आपके लिए एक संग्रहणीय पुस्तक है।

'बना रहे बनारस' के लेखक विश्वनाथ मुखर्जी की एक और महत्वपूर्ण कृति।

मूल्य—तीस रुपया मात्र

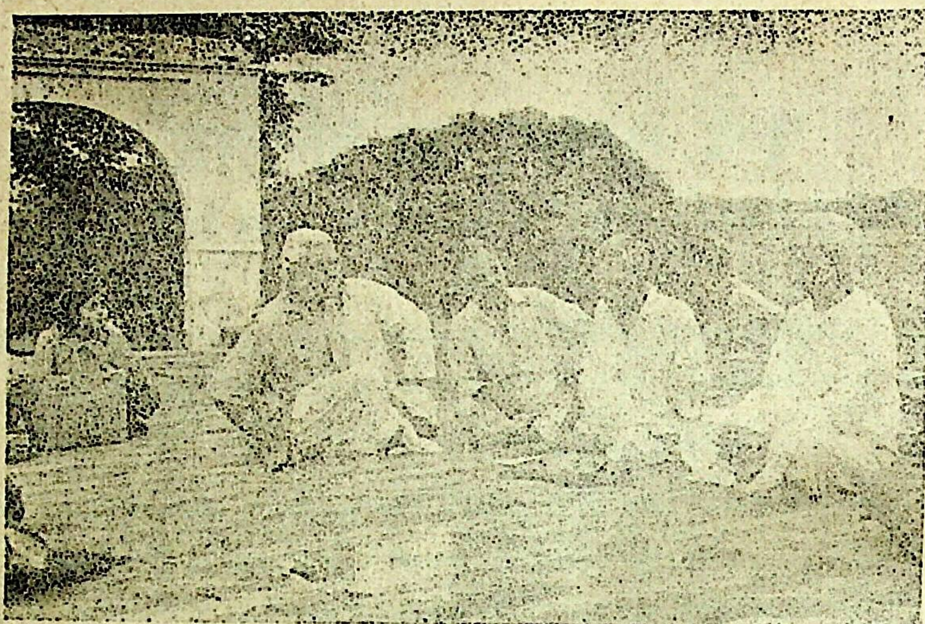
नयनाभिराम आवरण पृष्ठ, सजिल्द तथा अनेक चित्रों युक्त।

अपने नगर के पुस्तक विक्रेता से मांगिये या हमें सूचित करें।

—प्रकाशक—

सरस्वती विहार

२१, दयानन्द मार्ग, दरियागंज, नयी दिल्ली—२



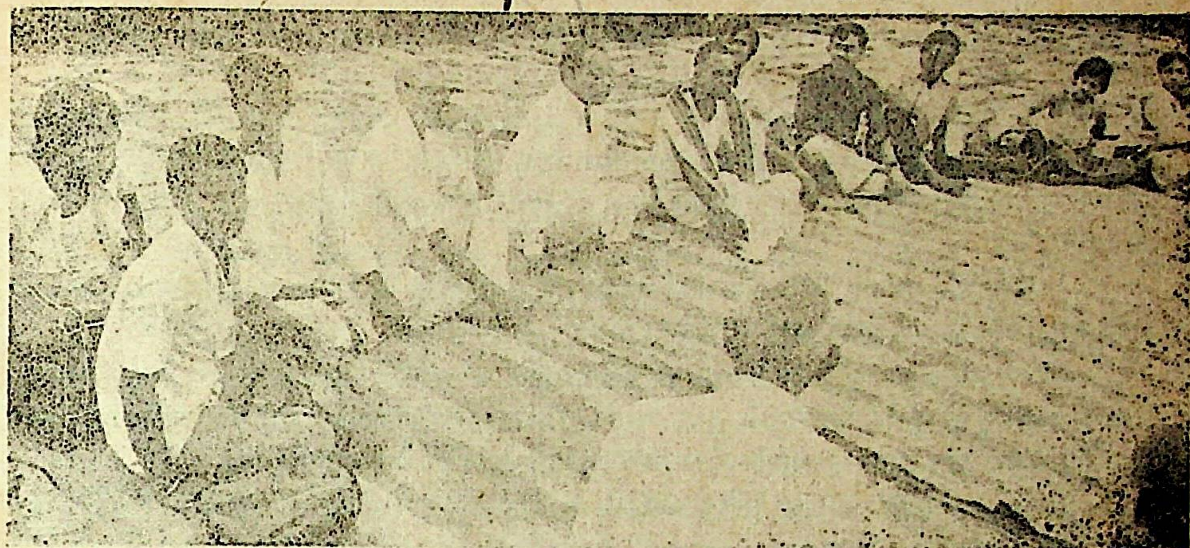
पहली गोष्ठी [११४]

पिछले कई वर्षों से ठलुआ बीर कैंसरसे पीड़ित रहनेके कारण बहरी अंगलकी गोष्ठी नहीं कर पा रहे थे। दरअसल वे गोष्ठमें भाग लेनेवालोंकी लापरवाहीसे त्रस्त रहे। कार्यक्रम समाप्तिके बाद लोग अपना लँगोटा या ब्लाउज छोड़कर दनसे बसमें बैठ जाते थे। इन सभी सामग्रियोंको जुटाकर उन्हें लाना पड़ता था, क्योंकि ठलुआबीरको लोग मंत्री नहीं, अपना चपरासी और वह भी अपने घरका, समझते रहे। जिसके मनमें जब आया, बस धौंस जमाता रहा; सहयोग देनेके नाम पर कोई हाथ नहीं बटाता था।

इन्हीं बारदातोंके कारण उन्हें बहरी अलंगमें अरुचि हो गई थी। फिर भी कुछ ऐसे लोग थे जो बनारसी मस्तीसे सराबोर रहनेके आदी थे। ऐसे लोगोंने जब ठलुआ बीरको इस बार चंग पर चढ़ाया तो वे किसी प्रकार कांख-कूँखकर राजी हुए। श्री बी. एस. नायकने कहा—दादा, बसका इन्तजाम मैं कर दूँगा। आपको दौड़धूप करनेकी जरूरत नहीं है।'

१४ अगस्त ७७ के लिए बीरको निमन्त्रण पत्र बाँटना पड़ा। ठलुआ भण्डारी कृष्णदास ने कहा—घबड़ानेकी जरूरत नहीं। भोजन का दिव्य प्रबन्ध हो जायगा।

इतना आश्वासन पानेके बाद हजरतने २०) प्रति व्यक्तिकी दरसे चपत लगाया। दुर्भाग्यसे कबाब में हड्डी के रूप में एक मरभख सज्जन ने भी चन्दा जमा कर दिया जिन्हें लोग फूटी आँखों से देखना पसन्द नहीं करते थे। इसके पूर्व भी यह सज्जन कई बार ऐसी हरकत कर चुके थे जिसके कारण उनकी सदस्यता समाप्त कर दी गयी थी।



काफी कड़ाई करने पर केवल २८ व्यक्ति इस आयोजन में शामिल हुए। अहरौरा के शाहंशाह श्रीशचन्द्र पांडेय को तार द्वारा सूचित कर दिया गया कि हम लोग आप के राज्य में तफरीह के लिए आ रहे हैं। पिछली बार की तरह मुर्ई लेकर न आयें। हमारे स्वागत के लिए आप तैयार रहें। खासकर हमारे भन्डारी को लकड़ी की सख्त जरूरत होती है। हम यहाँ से लकड़ी लेकर नहीं आ रहे हैं। गोइआ, फरुआ जो भी हो, सूखी लकड़ी का दिव्य प्रबन्ध रहे।

मार्ग में अजगर की तरह हरिराम द्विवेदी लेटे हुए थे। उन्हें लादकर बस जब अहरौरा पहुँची तो देखा गया कि बाढ़ के कारण सारा क्षेत्र पानी से भरा हुआ है। पायजामा, साड़ी, धोती उठाए लोग छार-छपर करते हुए चल रहे थे। ड्राइवर ने कहा—इस पानी में बस नहीं जायगी।

तुरत राजा गुरु से तड़पे—दाहिनी ओर की गली से ले चलो। बाईं पास रास्ता है।

किसी प्रकार बस खड़े बाबा के दुर्गा मन्दिर के पास पहुँची तो कबाब में हड्डी वाले सज्जन ने कहा—'भित्तर ले चलो।'

बसवाला राजी नहीं हो रहा था। काफी कहने-सुननेपर चला तो गाड़ी फँस गयी। अब सभीके चेहरेपर स्याही पुत गयी। लोग चिंतित हो उठे। लेकिन ठलुओं ने पीछे से 'बोल छमाना छे' कहकर जो जोर लगाया कि गाड़ी मुसीबत से पार हो गयी।

जगह दिव्य थी, पर स्नान के लिए कोई झरना नहीं था। नीचे नाले में कोई नहाना नहीं चाहता था। सभी लोग लखनिया चले गये। ठलुआबीर इतना थक गये थे कि शेषनाग के फन पर सो गये और लक्ष्मी की तरह हरिराम द्विवेदी घण्टों पैर दबाते रहे। इसके बाद द्विवेदी के साथ बाँध पर उन्होंने स्नान किया। महिलाएँ पास ही के लघु झरने पर स्नान करती रहीं।

भोजन दिव्य बना था और ऊपर से चकाचक घी पड़ने के कारण सभी ठलुए बाटी और चावल पर टूट पड़े।

भोजन के पश्चात् श्री श्रीशचन्द्र पाण्डेय को बिना माला पहनाये अध्यक्ष पद पर बैठाकर कार्यवाही शुरू की गयी। श्रोताओं की कमी, स्थान वृहद्—सो अनेक लोग फैलकर बैठे। कुछ सज्जन सोकर कार्यवाही देखने लगे।

दूर रंग-बिरंगे बादल हवा में तैर रहे थे। खुशनुमा मौसम, दूर पहाड़ियाँ, बाँध और मन्दिर अभूतपूर्व माहौल था। ऐसे मादक मौसम में कजली का प्रोग्राम चला शेरवां, अहरौरा, काल भैरव की 'गायिकाओं' ने 'झुमुर-झुमुर बदरा बरसे, पिया घर आ जा' गाने लगीं। कजरी का प्रोग्राम इतना दिव्य हुआ कि नालेसे अनेक मेढक आकर ताल देने लगे।

दिव्य भांग छनने के कारण गुरु लोगों ने सोचा कि इतने श्रोता कहाँ से आ गये। हरिराम ने एक टिप ऐसी ली कि बाँध का एक फाटक अपने आप खुल गया।

कैलाशनाथ चौबे बहुत देर से उछल रहे थे कि मेरा भी कार्यक्रम हो जाय। जब उन्हें मौका दिया गया तो उन्होंने कुत्ता, हुड़ार, बिल्ली और इसके बाद ससुराल जानेवाली लड़की के रोने का अभिनय किया! यह दृश्य देखकर एक अन्य सज्जन ने कहा कि मैं पनचक्की, मोटर, स्कूटर की आवाज सुनाऊँगा।

अध्यक्ष ने कहा—आज की गोष्ठी में अजीब-अजीब नमूने आये हैं, गोया शिव की पूरी बरात है। आज कुछ गजण्ड भोजन हो गया है। विशेष कुछ नहीं कहना है। आज जितने लोग यहाँ मौजूद हैं यही असली ठलुए हैं बाकी अधिकतर रुपये में तीन अठन्नी भुनाने वाले हैं। इस गोष्ठी में डाक्टर भानु का न आना जरा दाल में घी का न होना सा लग रहा है। वे रहते तो पंच मेल का मजा देते।

तभी विश्वनाथ मुखर्जी ने कहा—वे किसी अधिवेशन में गये हैं।

अन्त में राजा गुरु ने कहा - गोष्ठी खत्म कीजिए। पानी बरसने लगेगा तो सारा नशा हिरण हो जायगा।

गुलाब दास वर्मा ने कहा—मेरी जीभ अभी से चटक रही है। अगर इस वक्त मलाई का पुरवा मिलता तो सोने में सोहाग हो जाता।

तभी किसी ने कहा—रह गये पूरे लाला। भांग पर मलाई सोने में सोहागा नहीं, सोने में सुगन्ध होता है। चलिए, मैं मलाई खिलाऊँगा।

अहरौरा में कुछ लोग मलाई खाने के लिए उतरे तो पुनः अपनी आदत के अनुसार विश्वनाथ मुखर्जी झल्लाए। खासकर कबाब में हड्डी वाले सज्जन के कारण बस के सभी ठलुए नाराज हो उठे। यहाँ तक कि लोगों की राय हुई कि बस बढ़ा दिया जाय। आयेगा पैदल।

लेकिन राजा गुरु ने कहा—जाये दऽ। लिहाड़ों के साथ लिहाड़ापना करना उचित नहीं है।

रात को आठ बजे बस गोदौलिया होते हुए रास्ते में सभी सदस्यों को उतारते डिपो पहुंच गयी। इस बार न किसी की बिस्टी गायब हुई और न अण्डर बीयर। अगले दिन १५ अगस्त की धूम में सभी ठलुओं ने कहा-कम सदस्यों में कम से कम ढेर जोगी मठ उजाड़ वाली स्थिति नहीं रही।



दूसरी गोष्ठी [११६]

इस वर्ष १७ अक्टूबर १९७७ ई० को 'ठलुआ बीरबल' मुरारीलाल केडिया ने ६६ठवें बार जन्म लिया यानी उस दिन उनका जन्म दिवस था। इस बार यह निश्चय किया गया कि यह आयोजन 'विक्रम-परिषद' के सहयोग से मनाया जाय।

वह इसलिए कुछ मुन्नाधी लोगों की भुनभुनाहट से ठलुआ बीर मन्ना गये थे। ठलुआ क्लब बार-बार केडियाजी का जन्म दिवस क्यों मनाता है? फलतः अखिल भारतीय विक्रम परिषद की ओर से आयोजन करने का निश्चय हुआ। कार्यक्रम ठलुआ क्लब की ओर से बनाया गया।

केडियाजी स्वयं भी नहीं चाहते थे कि हर बार ठलुआ क्लब उनका जन्म दिवस मनाये। यह आयोजन कर्णघण्टा स्थित प्रह्लादका भवनमें मनाया गया। दोनों संस्थाओं का सहयोग रहने के कारण काफी भीड़ इकट्ठी हुई। श्रोता से अधिक जलपान करनेवाले कवि आ गये थे।

आचार्य पण्डित विश्वनाथ प्रसाद मिश्र को सभापति के पद पर बैठाया गया। मुख्य अतिथि के रूप में आचार्य पण्डित सीताराम चतुर्वेदीजी बैठे। इस गोष्ठी की विशेषता यह थी कि स्वयं केडियाजी सभा का संचालन कर रहे थे।

वेद पाठ के बाद विभिन्न लोगों ने इतने प्रकार की मालाएँ केडियाजी पर लाद दिया जिसे दो दौरी में उठाकर फकना पड़ा। केडियाजी के व्यक्तित्व के बारे में डाक्टर आनन्द कृष्ण, डा० रेवा प्रसाद द्विवेदी, पं० मधुसूदन शास्त्री, डा० भानुशंकर मेहता, पं० सीताराम चतुर्वेदी, राधेश्याम खेमका, कृष्णदास गुप्त आदि के अलावा अन्य खचिया भर लोगों के भाषण हुए।

इस अवसर पर काशी के नवयुवक कवि श्री श्याम उपाध्याय की प्रथम कृति 'भारत रश्मि' का उन्मेष पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने किया। चूंकि इस पुस्तक के वे भूमिका लेखक थे, इसलिए संकोच के साथ प्रशंसा करते रहे। बोले—मुझे यह अच्छा नहीं लग रहा है।

इसके बाद काव्य पाठ का दौर चला। ठलुआबीर को यह ज्ञात नहीं था कि चार दर्जन फालतू कवियों को जलपान का न्यौता देकर केडियाजी ने बुलाया है। फलतः अपने लोगों का काव्य पाठ उन्होंने कराया। सर्वश्री हरिराम द्विवेदी, श्रीकृष्ण तिवारी, उद्धव प्रसाद द्विवेदी बुद्धिनाथ मिश्र के बाद कुछ ऐसे कवियों को मंच पर केडियाजी बुलाते गये जिनकी कविताएँ सुनकर मंचीय कवियों का रोम-रोम सुलगने लगा, पर केडियाजी बाबाजी की तरह निर्विकार रहे। एक से एक नमूने के कवि काव्य के बिल से प्रकट होते रहे और साहित्य-रस का जायका बिगाड़ते रहे। इस बाढ़ को रोकना कठिन था।

किसी सूरत से काव्यपाठ का प्रकरण समाप्त हुआ तो अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने केडियाजी की प्रशस्ति में बताया कि वे क्या हैं! अपनी कितनी बहुमूल्य सामग्री इन्होंने भारत कला भवन को भेंट में दी है। अपने प्रभाव से श्री रामकुमार भुवालका से हिन्दू विश्व विद्यालय को दान दिलवाया। आज भी मुमक्षु भवन के संन्यासियों और काशी गोशाला की गायों की सेवा कर रहे हैं। चन्दा जुटाने में आप उस्ताद है। हर नेक कार्य के लिए अपना गला फँसा देते हैं। अपनी इस सरलता के कारण नगर के एक प्रसिद्ध रईस की जमानत दी और अन्त में इन्हें अपने मकान के आधे भाग से हाथ धोना पड़ा। इनका संग्रहालय अद्भुत है जहाँ अकबर का निपटने वाला लोटा से लेकर प्रेमचन्दजी का सोंटा तक है। मेरी टोपी पर इनकी नजर है, पर मैं इन्हें और कुछ दे जाऊँगा।

(शेष पृष्ठ ९ पर)

तीसरी गोष्ठी (११६)

विवाह, मूड़न—कनछेदन का दौर नवम्बर से जनवरी तक इतना चला कि बनारस के सभी ठलुए उसी में व्यस्त रहे। अचानक जनवरी के अन्त में सभी के लेटर बक्स में डाकिया निम्नलिखित कार्ड घुसेड़ गया—

मान्यवर,

जय शिव-शनि। आगामी शनिवार, २८ जनवरी १९७८ को सायंकाल ६ बजे लक्सा रोड के आगे गुरु-बाग त्रिमुहानी के समीप, अभिमन्यु पुस्तकालय में एक गोष्ठी होगी जिसमें स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी, अभिमन्यु पुस्तकालय के प्राण, पण्डित बनारसी लाल पाण्डेय का ससमारोह मुण्डन होगा। कृपया कोट-स्वेटर-गुलेबन्द पहनकर आयें। बोरसी का प्रबन्ध नहीं है। केवल चाय का प्रबन्ध है। गोष्ठी ८ बजे समाप्त हो जायगी।

निवेदक

बुद्धिनाथ मिश्र	राजकिशोर गुप्त	चन्द्रशेखर शर्मा	प्रभाशंकर मेहता
(शनि)	(राहु)	(केतु)	(गुरु)

इस आमन्त्रण को पाकर सभी ठलुओं को नशा चटक गया। कुछ लोगों को 'स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी' के नाम से चिढ़ हो गयी, क्योंकि 'वन्दे मातरम्' के उत्सव में उनका रंग-रूप अनेक लोगों को पसन्द नहीं आया था। वस्तुतः देश में जहाँ इतनी बेकारी और भूखमरी फैली है, वहाँ सत्ता में रहने वालों ने इन्हें पेन्शन देकर उनके प्रति उत्पन्न होने वाली श्रद्धा को समाप्त कर दिया है। वास्तव में जनता अब इन्हें श्रद्धा की दृष्टि से नहीं देखती, बल्कि सुविधाभोगी समझती है। यही वजह है कि अनेक लोग नहीं आये।

लेकिन ठलुआ क्लब अपना कार्यक्रम स्थगित नहीं करता। पण्डित कल्याणजी नागर ने शंखध्वनि की। मंगलाचरण के बाद अध्यक्ष पद पर पण्डित भीमराव देशपाण्डे जैसे विद्वान को बैठाया गया। नाम के अनुसार उनकी काया नहीं थी। गणपति और उपगणपति दोनों गायब थे। वेद पाठ के बाद पण्डित बनारसी लाल पाण्डेय को उत्तरीय, नारियल के साथ ही सोपाड़ी थमाया गया। इसके बाद जलपान का दौर चला।

रूमाल से हाथ पोंछते हुए लोग वापस आकर बैठे। अभी तक किसी भी व्यक्ति को बनारसी लाल के प्रति श्रद्धा उत्पन्न नहीं हुई थी। केवल उनके मित्र उनके बारे में जानते थे।

जब वशिष्ठ मुनि ओझा ने खद्दर के बेठन में अभिनन्दन पत्र भेंट करते हुए उसे पढ़कर जब सुनाया तब लोगों को पाण्डेयजी के बारे में ज्ञात हुआ कि उन्होंने कितना बड़ा त्याग किया है।

इस अवसर पर ठलुआ वीर ने कहा—'ठलुआ क्लब' में चूतिया शब्द गाली नहीं माना जाता। इसलिए मैं यह कहना चाहूँगा कि आज सबसे बड़े चूतिये का अभिनन्दन हो रहा है। इन्होंने जिस निष्ठा से, जिस सेवा भावना से अभिमन्यु पुस्तकालय की स्थापना की और निःस्वार्थ भाव से कार्य कर रहे हैं, आज के जमाने में इतना त्याग कोई भी नहीं कर सकता। मैं स्वभावतः पुस्तकें किसी को नहीं देता। यहाँ के पुस्तकालय कैसे हैं, यह मैं जानता हूँ रिसर्च स्कालरों के पढ़ने के लिए पुस्तकें नहीं जाती। रजिस्टर दिखाया नहीं जाता। ठीक उसी प्रकार आज के रिसर्च स्कालर हैं जो सामग्री चोरी करते हैं। पुस्तकें ले जाकर गायब कर देते हैं। पर इन्होंने मुझे फाँस लिया और इस पुस्तकालय का सदस्य बना लिया।

इस अवसर पर श्री मुन्नूलाल स्वतन्त्र ने कहा—आज जिस व्यक्ति का अभिनन्दन हो रहा है, वह एक ऐसा व्यक्ति है जो स्वतन्त्रता संग्राम का गुमनाम सिपाही है। इस व्यक्ति ने अपने जीवन के कितने सुनहले दिन देश ही नहीं, जन मानस की सेवा में गवाँ दिया। मैं स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को पेन्शन देने का घोर विरोधी हूँ।



कारण अनेक सम्पन्न लोग जिन्हें इसकी जरूरत नहीं, कंगले की तरह प्राप्त कर रहे हैं और सरकार केवल उनसे वोट पाने तथा अपना चेला बनाये रखने के लिए दे रही है। इससे स्वतन्त्रता सेनानियों की सेवा कलंकित हो रही है, पर बनारसी लाल जैसे लोगों को पेन्शन देने का हिमायती हूँ। आप कई बार जेल जा चुके हैं आपने विवाह नहीं किया और अपना सारा जीवन पुस्तकालय में लगा दिया। आप ने एक कर्मठ और ईमानदार आदमी का सम्मान किया जिसे लोग नहीं जानते। ठलुआ क्लब के द्वारा अब जान लेंगे।

डा० मेहता ने अपने भाषण में कहा—बनारसी लालजी के बारे में लोगों ने जो कुछ कहा, उससे इनके बारे में पर्याप्त जानकारी हुई। हम बार-बार ऐसे लोगों का ढूंढ ढूंढ कर अभिनन्दन करना चाहते हैं। उम्र की दृष्टि से ठलुआ वीर ने अपने बाप का स्वागत करके अच्छा किया है। तिहत्तर वर्ष में आप नवयुवक से ज्ञात हो रहे हैं।

इस अवसर पर पंडित रमापति शुक्ल, मोहन लाल तिवारी, गंगा शंकर दीक्षित, मुरारी लाल केडिया के भाषण हुए।

केडिया जी ने कहा—ठलुआ क्लब ने इनका अभिनन्दन करके कोई कमाल नहीं किया। पांडेय जी बड़े सयाने हैं। इन्होंने अपने जीवित काल में ही अपना स्मारक अभिमन्यु पुस्तकालय के रूप में बना लिया जो अन्य लोगों के लिए दुर्लभ है।

ठीक इस समय परमानेण्ट अध्यक्ष यशवन्त (चह्वाण नहीं) मेहता पधारे। देर से आने के कारण उन्हें किसी ने जलपान नहीं दिया। यशवन्त मेहता ने यह जरूर कहा—देर हो गयी मुझे आने में। क्षमा चाहता हूँ, पर पांडेय जी नारियल-सोपाड़ी के भार से दबे क्यों जा रहे हैं। अब इन्हें मुक्ति दे दें।

सर्वश्री अभयनाथ तिवारी, बुद्धिनाथ मिश्र और उद्धवजी के काव्य पाठ के बाद अध्यक्ष देशपांडेजी ने कहा—बनारसी लाल जैसे लोगों के पुण्य प्रताप से हमारा देश-समाज टिका है, वर्ना अब तक भरसाईं में चला गया होता। आज की दुनिया में स्वार्थ, छल, कपट इतना प्रवेश कर गया है कि इस तरह के आदमी नहीं मिलते। ठलुआ क्लब का नाम बहुत सुनता था, आज का कार्यक्रम देखकर मुझे सन्तोष हुआ कि इसका कार्य बहुत अच्छा है। कभी मेरा भी अभिनन्दन होगा, ऐसी आशा है।

अन्त में धन्यवाद दिया डाक्टर भानुशंकर मेहता ने।

●

॥ अभिनन्दन पत्र ॥

न किसी मदरसेके मौलवी, न किसी पाठशाला के आचार्य, हे बनारसी लाल आर्य !

अभी हाल ही में 'हिन्दी प्रभा' के स्वतन्त्रता-संग्राम सेनानी विशेषांक के पचीसव सफे की दूसरी पंक्ति में जब आपने कानून को परवा किए बगैर लिख मारा, कि—'यह जीवन ठलुआगीरी में ही व्यतीत हुआ', तब से अब तक हमारे ठलुआ समाज में एक विवाद चलता रहा है कि भगवान सनीचर के दरबार से लाइसेंस लिए बिना ही ठलुआगीरी करने वाला यह सींग-पूँछ विहीन जन्तु है कौन ? समाज की पंचायत में आप के खिलाफ कार्यवाही के लिए तरह-तरह के प्रस्ताव आते रहे हैं, जैसे—इस अहमक पर चार सौ बीसी का मुकदमा चलाया जाय, अथवा हजरत को सरे बाजार जलील किया जाय, किन्तु कोई अश्लील कदम उठाने से बेहतर मानकर और भारतीय सस्कृति में आपकी निष्ठा को देखकर यह निर्णय लिया गया कि आप को कुछ समय के लिए पंचों के बीच ऐसी स्थिति में रखा जाय जैसी स्थिति में पंचपतिका द्रौपदी तब होती जब उसके पाँचों पति एक ही समय सहवास के लिए उसे घेर लेते।

हे काशी के रेडीमेड बटुक

यह देखने के लिए कि इस मानद स्थिति की पात्रता आपमें है कि नहीं, जब आपके ७५ वर्षों के प्रकट व गुप्त विकास क्रमों की छान बीन की गयी तो हमें एक सुखद आश्चर्य हुआ कि आप १९०४ ई० के शुद्ध वैसाखनंदन हैं। आजमगढ़ जिले के ऊँचासराय गाँव में किसानी करनेवाले श्री महेश पांडेय के पुत्र श्री जगेश्वर पांडेय की धर्मपत्नी रामदेई की कोख से आपका अवतार इतना शुभ सिद्ध हुआ कि कुछ ही दिन बाद आपके पिताजी को घरेलू विवाद के कारण न केवल गाँव छोड़ देना पड़ा, बल्कि काशी के नीलकंठ महल्ले में अपनी नौजवान पत्नी और छः मास की पहिलौठी सन्तान को बेसहारा छोड़ कलकत्ता जाकर दुनिया से भी रूखसत हो जाना पड़ा। माता रामदेई ने बड़ी मुश्किल से आपका पालन किया। आपकी शिक्षा-दीक्षा के लिए भी माँ ने भरपूर कोशिश की, लेकिन दर्जा चार तक हिन्दी और नशीम तक उर्दू सीखने के बाद आपने एक बारगी 'इत्यलम्' बोल दिया। पाठशाला से गैरहाजिरी के कारण आप पीटे भी गए, किन्तु आपके आवारा मिजाज में जब कोई फर्क नहीं आया और मेले-तमाशे और पूजा-पाठ में आपकी लगन बढ़ती ही गयी तो पाठशाला में मास्टरों तथा सड़क छाप ज्योतिषियों ने आपकी माताजी से कह दिया कि बच्चे में जरूर कोई ऐब है। उस ऐब का पता लगाने के लिए आपको बेचूबीर में लगनेवाले भूतहा मेले में ले जाया गया। पहली बार ऐब का पता तो नहीं चला, पर यह पहाड़ी यात्रा आपको अच्छी लगी और दूसरे साल देवोत्थान एकादशी के समय आपकी इच्छा से फिर आपको मेले में ले जाया गया। कहते हैं कि ब्रह्मस्थान पर जाने के पूर्व गड़ई नदी में स्नान के समय पत्थर में ऐसी ठोकर लगी कि आपकी आंखों में आंसू भर आए और यह देखते ही लोगों ने कहना शुरू कर दिया कि आप पर कुछ आ रहा है—"कुछ" अर्थात् ऐब। मुख्य स्थानपर पहुंचकर जहाँ लोग खुद व खुद बन रहे थे, आपने उन्हें कुछ और बनानेके लिए नाटक के तौर पर हबुआना शुरू कर दिया। आपको मेले में ले जानेवाले लोगों ने यह देखकर अपनी बेवकूफियों का मेला लगा दिया जिसे देखकर आप जोर से हंसने लगे। इसपर लोगोंका संदेह और बढ़ गया। लोग आपके ऐब को अब भी नहीं समझ सके, किन्तु भगवान सनीचर ने अपने दलका एक "होनहार बिरवा" मानकर आपकी चांद पर "टिकमार्क" कर छोड़ दिया।

हे त्रिमार्गी

१९२१ के जुलुसों से लेकर १९३० वाले बाबू संपूर्णानन्द और आचार्य नरेन्द्र देव के व्याख्यानों तथा अपीलों तक राष्ट्रीय आन्दोलन में आपकी बढ़ती हुई रूचि देखकर जहाँ श्री रमाकान्त मिश्र ने आपको कांग्रेस का सक्रिय सदस्य बना दिया, वहीं सन् २५-२६ में नेता श्री मुन्नू लाल के पिता और कट्टर आर्यसमाजी श्री नन्हकू प्रसाद से सामाजिक सुधार सेवा की प्रेरणा लेकर आप सामाजिक आन्दोलन में भी सक्रिय हो गए और अपनी सहज वीर प्रवृत्ति के कारण आपने क्रान्तिकारियों जैसी कुछ छोटी-छोटी खुराफातें भी शुरू कर दीं। इस तरह जवानी के नशे में आपने अपने दो पावों को तीन नावों पर रख दिया। गनीमत थी कि तीनों नावें एक ही दिशा में चलीं, कहीं विपरीत दिशाओं में चलतीं तो क्या होता, यह कहना शर्म की बात होगी। आप कितने मजबूत और चीमड़ हैं, इसका एक सबूत यह भी है कि उन दिनों आप तीनों में से जिस किसी मार्ग पर होते थे, एक ही समय दो दिशाओं में चलते थे ''......मसलन, एक आर्यसमाजी के रूपमें आप मन्दिरों में पशुबलि का विरोध और हरिजनों के मंदिर-प्रवेश की पहल भी करते थे और अपने ब्राह्मणबोध को जाग्रत भी रखते थे जिसके कारण वांसफाटक स्थित मंगलमठ के संस्थापक व महन्त स्वामी शील स्वरूपानन्द के पास बहुत दिन रहकर भी उनका "गरीबदास संप्रदाय" जान लेने के बाद आप उसके शिष्य नहीं बने, इसी प्रकार शांतिपूर्ण आंदोलन से जुड़े रहकर भी आप क्रांति में विश्वास करते थे, नौजवान भारत सभा के सदस्य थे, और देश तथा संस्कृति की रक्षा के लिए समाज में वीरत्व एवं युयुत्सा जगाने के उद्देश्य से १९३० में एक वीर अभिमन्यु दल भी गठित कर लिया था जिसका पहला कार्यालय दुर्गाकुण्ड स्थित पुलिस चौकी के पास ही एक बगीचे में खोला गया जहाँ बाद में एक रात भयंकर बम विस्फोट हुआ और रातोंरात आपको अपने दल का कार्यालय दशाश्वमेध स्थित बुधिया धर्मशाला में लाना पड़ा। बमकाण्ड के संदेह में आपको गिरफ्तार किया गया था और कार्यालय की तलाशी में एक पिस्तौल तथा एक बम भी बरामद हुआ, जबकि आपके बंगाली दोस्त आपको ठंढी नीतिवाला सत्तूखोर कहते थे।

हे अनासक्त राष्ट्रभवन,

इतिहास साक्षी है कि प्रयाग के पं० जवाहरलाल नेहरू ने अपनी प्रेरणा से अपने बापको राष्ट्रीय आन्दोलनमें खींच लाने के बदौलत स्वतंत्रता के बाद प्रधान मन्त्री का पद प्राप्त किया, किन्तु आप काशी के ऐसे पण्डित निकले जिसने बिना कोई पद या अन्य सुख के प्रति आसक्ति रखे ही स्वतन्त्रता संग्राम में अपनी मां को कुदा दिया। वास्तव में आंदोलन से बचाने के लिए माता रामदेई ने घर के सामने एक बिसातखाने की दुकान खुलवा आपको सौंप दी थी। लेकिन दुकान बन्दकर आप आन्दोलन में शामिल होते रहे। इसी क्रम में ५ जनवरी १९३१ के टाउनहाल काण्ड में आपके दाहिने पैर में दो गोलियां भी लगीं जिनके निशान अब भी हैं। इस घटना के बाद मां के फिर मना करनेपर आपने साफ-साफ बताया कि हमलोग वचनबद्ध हैं, आंदोलन में हर घर से एक सदस्य को जाना है। इसपर मां ने कहा, "तो मैं जाती हूँ, तुम मेरे अंतिम संस्कार के लिए रहो।" और इस प्रकार आंदोलन में कूद कर माताजी दो बार जेल से लौटाने के बाद १९३६ में स्वर्ग सिधार गयीं। उधर नमक सत्याग्रह, विदेशी वस्त्र बहिष्कार तथा पिकेटिंग, असहयोग, धारा १४४ तोड़ने, "रणभेरी" की प्रतियां बांटने आदि के सिलसिले में आपको भी तीन बार जेल जाने और सजा भुगतने का सौभाग्य मिला।

हे "हैवी" समाजसेवी,

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, पिछले संघर्षों के लिए अपनी सरकार से मिलने वाले पुरस्कार स्वरूप कंदे-बड़े के लालच में न आकर आप समाज सेवा में जुट गये और अबतक लगे हुए हैं। सामाजिक जागरण के लिए आपने दशाश्वमेध से "शांतिदूत" पत्रिका के कुछ अंक निकाले जो १९३६ से "हिन्दी प्रभा" के नाम से अबतक प्रतिवर्ष

प्रकाशित होता है। समाज के बौद्धिक विकास के लिए अभिमन्यु पुस्तकालय के रूप में आपने जो चिरंतन माध्यम दिया है, वह १९३२ में पुस्तकालय की स्थापना से लेकर १९६७ में उसके निजी भवन के निर्माण और अबतक के पुस्तक संग्रह तक आपके जीवट चट्टानी सबूत है। आपकी एक समानान्तर गति देश दर्शन में भी रही है जिसके लिए कुछ गिने-चुने मित्रों के साथ आपने १९५६ में एक घुमक्कड़ टोली बना डाली थी। आपने दो बार अमरनाथ तथा एक-एक बार पुरी, राजस्थान, नेपाल, जनकपुर, वैशाली, राजगृह, पावापुरी और कुशीनगर की यात्राएँ की हैं तथा अब दक्षिण यात्रा की योजना बना रहे हैं। इसी तरह अध्ययन और लेखन की दिशा को भी आपने रोशन किया है और "मालवीय श्रद्धांजलि ग्रन्थ" के संपादन के अतिरिक्त "खंडहरों के देश में", "काश्मीर दर्शन", "महाराजा बलवन्त सिंह और काशी का अतीत" जैसे महत्वपूर्ण यात्रा एवं इतिहास ग्रन्थों की रचना भी की है। निकट भविष्य में ही आपकी दो अन्य पुस्तकें "हिंदू देवताओं के विविध रूप और वाहन" तथा "शहीदों का तीर्थ चित्तौड़" भी प्रकाशित होने वाली हैं।

हे बनारसी पाण्डे,

हर साल जाड़े की रातों को बिना रजाई या बोरसी के आप कैसे काटते हैं, यह रहस्य अब भी बना हुआ है, क्योंकि चढ़ती जवानी से आज तलक आप ब्रह्मचारी ही दिखायी देते रहे हैं। पिछले दो एक वर्ष से कभी-कभी आपकी गोद में एक बच्चा और आपके पास गवनिहारिन बुद्धिनाथजीकी उपस्थिति देखकर कुछ लोग ऐसी-वैसी बातें भी करते हैं, किन्तु छानबीन करने के बाद हम इसी निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि आप इस सुख से भी उतने ही उदासीन हैं जितने अन्य सांसारिक सुखों से।

और इसी लाचारी में आज हमें आपको "उदासीन ठलुआ" की उपाधि प्रदान करनी पड़ रही है। अब आप लाइसेंसशुदा हो गए और अगले पचास वर्षों तक आप ठलुआगीरी करते रहें, यही हमारी कामना है।

(वशिष्ठ मुनि ओझा)

●

(पृष्ठ ४ का शेषांश)

केडियाजी ने कहा—वह मुझे नहीं चाहिए। चतुर्वेदीजो को दे दीजियेगा।

इस बात पर इतना अट्टहास हुआ कि कर्णघण्टा स्थित बरगद पर बैठे सभी चमगादड़ मैदागिन चले गये। अन्त में डाक्टर भानुशंकर मेहता ने धन्यवाद दिया।

बाहर निकलते ही ठलुआ क्लब के कवियों ने कहा—आज की गोष्ठी में काव्य पाठ बेजायका हो गया। अगले शरद पूर्णिमा २६ अक्टूबर गुलाबजी के घर केवल काव्य गोष्ठी का आयोजन हो।

इस निश्चय के बाद कार्ड छपवाया गया। डाक में सभी निमंत्रण पत्र डालने के बाद बनारस में अचानक दंगा हो गया और इस प्रकार शरद पूर्णिमा के अवसर पर गोष्ठी नहीं हो सकी। केवल हरिराम और गुलाब अपने अपने घर पर अपनी पत्नियों से कजरी सुनते हुए खजड़ी बजाते रहे।

●

चौथी गोष्ठी [११७]

फरवरी के द्वितीय सप्ताह के अन्त में मिर्जा गालिब के पोता शायर अभयनाथ तिवारी एक दिन सवेरे ठलुआवीर के घर पहुँचे और फरमाया कि भोजपुरी का एक मशहूर कवि काशी आ रहा है। मेरी इच्छा है कि आप ठलुआ क्लब की ओर से उनका अभिनन्दन कर दें।

ठलुआ बीर के पूछने पर पता चला कि कविवर श्री कुंज बिहारी प्रसाद 'कुंजन' बिहारी हैं। बिहारी के नाम से ठलुआवीर को एलर्जी है। सिवाय राधाकृष्ण और कविवर नागार्जुन के अन्य कोई व्यक्ति ठलुआ क्लब के स्वागत योग्य साबित नहीं हुआ। बिहार में दर्जनों राष्ट्रीय कवि हैं। असली कौन है, इसका निर्णय आज पण्डित रामचन्द्र शुक्ल जीवित रहते तो हिन्दी साहित्य के इतिहास में उसका जरूर उल्लेख करते। बिहार के प्रत्येक शहर में ही नहीं, प्रत्येक गांव में राष्ट्र कवि, महाकवि भरे पड़े हैं। सभी एक दूसरे की जड़ खोदने के चक्कर में रहते हैं। भाई राधाकृष्ण ने ठलुआवीर से साफ कह दिया था कि यहाँ भूमिहारवाद, ठाकुरवाद और कायस्थवाद का बोलबाला है। इतना सम्पन्न प्रान्त भारत में इसीलिए पिछड़ा हुआ है। सावधान रहना बन्धु।

सो इस चेतावनी का संस्मरण करते ही ठलुआवीर ने कहा —अभी मेरा मूड ठीक नहीं है। यह सब नहीं होगा। अगर आप चाहते हैं कि उनका अभिनन्दन हो तो एक काम यह करें कि उनका अभिनन्दन पत्र तैयार करें और टाइप करके ले आइये। इसके साथ ही उसे पढ़ने का जिम्मा लें। इस नाम के महाकवि को देखने को कौन कहे, मैंने नाम तक नहीं सुना है।

श्री अभयनाथ तिवारी ने कहा कि ठीक है मैं उनका अभिनन्दन पत्र बना दूंगा और कुछ बाहरी कवियों को इस अवसर पर बुला लूंगा।

अब सिवा इसके कि ठलुआवीर सारा प्रबंध करते, अन्य कोई चारा नहीं था। फलतः उन्होंने झटपट निम्न-लिखित निमंत्रण कार्ड छपवाकर वितरित कर दिया।

मान्यवर,

जय शिव-शनि। आगामी २५ फरवरी, '७८ शनिवार को सायंकाल ६ बजे गुरुबाग (लक्सा रोड) स्थित अभिमन्यु पुस्तकालय में भोजपुरी लोकगीतों के सुप्रसिद्ध कवि श्री कुंज बिहारी प्रसाद 'कुंजन' का अभिनन्दन होगा और इस अवसर पर अनेक छोटे, बड़े, मंझोले कवियों का कवि सम्मेलन भी होगा। आपके पास फालतू फुरसत हो तो चले आइयेगा।

निवेदक

विश्वनाथ मुखर्जी
(ठलुआ बीर)

अभयनाथ तिवारी
(संयोजक)

शंख ध्वनि, मंगलाचरण के पश्चात् अभिनन्दन पत्र श्री अभयनाथ तिवारी ने भेंट किया। जीवन के हर क्षेत्र में राजनीति का प्रवेश हो गया है। जो लोग संयोजक श्री अभयनाथ तिवारी से नाराज थे, वे नहीं आये। लेकिन इससे कार्यक्रम में कोई अन्तर नहीं हुआ।

आकर्षक हीन आकृति। अनेक लोगों को भ्रम हुआ कि यह कवि क्या करेगा। लेकिन कुंजनजी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से जो अभिव्यक्ति प्रकट की, वैसी अभिव्यक्ति किसी भी अभिनन्दित व्यक्ति ने नहीं की थी। निस्सन्देह कविवर कुंजन कौवों में हंस प्रमाणित हुए। भोजपुरी भाषा में इस तरह का व्यंग्य पहली बार सुनने में आया। डा० श्याम तिवारी अवधी भाषा के व्यंग्य लेखक हैं, पर कुंजनजी के आगे फीके प्रमाणित हो सकते हैं।

इस अवसर पर जौनपुर, गाजीपुर, बलिया आदि से आये हुए कवियों का काव्य पाठ हुआ। मजे की बात यह रही कि सभी लोगों ने यह अनुभव कर लिया कि श्रोता ठलुआ भले ही हों, पर वे असामान्य विद्वान हैं और सही जगह प्रशंसा करते हैं। हल्की रचनाओं को पसन्द नहीं करते।

धन्यवाद देते हुए ठलुआ मांत्रिक डा० भानुशंकर मेहता ने कहा—आज की गोष्ठी इस वर्ष की श्रेष्ठ गोष्ठी रही। मुझे इस बात की सबसे अधिक प्रसन्नता है कि बिहारी लेखकों के प्रति हमारे ठलुआवीर जो बराबर नाराज रहते हैं, आज की गोष्ठी में सबसे अधिक प्रसन्न दिखाई दे रहे हैं। अब भविष्य में उनकी यह नाराजगी दूर हो जायगी। अब वे चुन-चुनकर ऐसे बिहारी लोगों का अभिनन्दन करेंगे। इनका भ्रम दूर करने के लिए कुंजनजी ने सचमुच में कमाल कर दिखाया। ठलुआ क्लब ऐसे छिपे हुए व्यक्तित्व का अभिनन्दन करने में गर्व का अनुभव करता है। कुंजनजी जब भी काशी आयें, हम उनका सम्मान करने को तैयार हैं। उनके आज के आगमन के लिए हम सब धन्यवाद देते हैं।



बायें से श्रीकृष्ण तिवारी तथा श्री हरिराम द्विवेदी। श्री देवी प्रसाद मिश्र अभिनन्दन पत्र पढ़ रहे हैं।



पांचवी गोष्ठी [११८]



प्रत्येक वर्ष होली पर भयंकर गोष्ठी होती है जब बूढ़े भी जवान हो जाते हैं। शायद इसीलिए महिलाएं कहती हैं—'भर फागुन बुढ़ऊ देवर लागें।' बुढ़ऊ 'देवर लगें' या न लगें, पर कलेजोंवालों का मुण्डन ठलुआ क्लब जम कर कर देता है। इस बार हिन्दीके प्रसिद्ध गीतकार श्रीकृष्ण तिवारी और भोजपुरी कोकिल हरिराम द्विवेदी का मुण्डन निश्चित किया गया। अभिनन्दन पत्र की रूपरेखा सामान्य रहने पर भी गोष्ठी असामान्य रही जिसकी पूरी रिपोर्ट छापने पर १० लाख की हवेली में भर्ती होना पड़ेगा—

॥ जय सनीचर महराजकी ॥

कल्पनाकार—पं० शिवनाथ शास्त्री, संस्थापक – बाबू गुलाबराय

मान्यवर,

आगामी शनिवार १८ मार्च ७८ को होली-गोष्ठी होगी जिसमें हिन्दी जगत के दो प्रमुख गीतकार सर्वश्री हरिराम द्विवेदी तथा श्रीकृष्ण तिवारी का मुण्डन-संस्कार होगा। इस गोष्ठी में ठीक समय पर आयें। कृपया निम्न-लिखित हिदायतों पर ध्यान दें—

१—यह गोष्ठी अभिमन्यु पुस्तकालय, (गुरुबाग लक्सा रोड) में सायंकाल ७ बजे प्रारंभ होगी।

२—ठीक समय पर आयें। देर से आकर नशा न उखाड़ें। साढ़े सात बजे के बाद प्रवेश नहीं दिया जायगा।

३—कृपया इस परिपत्र को साथ लायें और गेट पर दिखाए क्योंकि गोष्ठी 'ए' क्लास की है। भूल जाने, खो जाने पर प्रवेश नहीं दिया जायगा।

४—साथ में महिला, नाबालिग, अनामंत्रित को न लायें। एक पत्र पर एक ही व्यक्ति का प्रवेश होगा।

५—कृपया अपने साथ एक तौलिया या गमछा अवश्य लायें और संभव हो तो उसे पहन कर गोष्ठी में बैठें। ज्ञात रहे लगाया जायगा अबीर।

६—अगर प्रेम हो तो वटुक के लिए उपहार लेते आयें।

७ - गोष्ठी ठीक समय पर प्रारंभ होगी। समाप्ति का कोई निश्चय नहीं है अतएव ओढ़ने-बिछाने की सामग्री के साथ-साथ भोजन को लेते आयें।

निवेदक

विश्वनाथ मुखर्जी गुलाबदास वर्मा

ज्ञातव्य है कि इस गोष्ठी में भाग लेने के लिए गोरखपुर से डा० शशिकान्त शुक्ल, डा० माता प्रसाद त्रिपाठी, आजमगढ़ से श्री देवनारायण सिंह 'राकेश', अयोध्या से डा० स्वामीनाथ शुक्ल, मुरादाबाद, लखनऊ, इलाहाबाद से भी कुछ लोग आये थे। मुंडन दो नवयुवक बटुकों का था।

शंख ध्वनि और मंगलाचरण के बाद पण्डितों ने यजुर्वेद से स्वस्तिवाचन किया। दोनों बटुकों को तरकारियों की माला पहनायी गयी। खास प्रकार की टोपी पहनाकर जौनपुरी मूली दिया गया।

श्रीकृष्ण तिवारी का अभिनन्दन पत्र श्री वशिष्ठ मुनि ओझा और हरिराम द्विवेदी का अभिनन्दन पत्र श्री देवी प्रसाद मिश्र ने पाठ किया। ये दोनों इसके लेखक थे।

इस अवसर पर फटीचर नामक एक स्मारिका का उद्घाटन किया गया। अपनी मूर्खता के कारण ठलुआबीर ने ठलुआ तांत्रिक को झटककर शायद कोई अपशब्द कह दिया जिसके कारण वे पूरी गोष्ठी में खस्ता कचौड़ी की तरह मुंह फूलाये कोंहाये रहे। अपनी व्यस्तता के कारण ठलुआबीर ने उधर ध्यान नहीं दिया। उसका प्रमुख कारण यह था कि वे स्मारिका में ४००० रुपया व्यय कर चुके थे, विज्ञापन कम मिला था। फोकट में किसी को कापी नहीं देना चाहते थे। गोष्ठी में दुकान लगाये स्मारिका बेच रहे थे। इसी झटके में वे झटक गये।

ठलुआ मंत्रिका को जब संदेश—शुभकामना पत्र पढ़ने को दिया गया तो बड़े बेमन से पढ़ने लगे। फलतः जो लोग वहाँ मौजूद थे, उसे लेकर स्वयं पढ़ने लगे। जो निम्नलिखित हैं—

हे ठलुआ कम्पनी के गुनहगारान् !

यह जानकर मैं हक्का-बक्का रह गया कि इस बार आप लोगों की तबीयत जिन दो लोगों पर आ गयी उनमें भाई हरिरामजी द्विवेदी भी एक है। सिर्फ देर से आप लोगों की तबीयत आई, दुरुस्त नहीं आई। भाई हरिराम जी की उमर तो निकल चुकी है, भाई श्रीकृष्ण तिवारीजी के वय कद-काठी से वाकिफ नहीं हूँ।

राहुकेतु आप सबकी रक्षा करें। आप सब पर शनि की शुभ दृष्टि रहे जो आप लोगों ने इन दो बेचारों पर अपनी शनि दृष्टि डाली है, और जल्दी ही अभिनन्दन के नाम पर उन्हें ग्रसने वाले हैं।

कल्याण कहिये कि भाई हरिरामजी की शादी हो गई है (दूसरे बेचारे पर खुदा ने यह रहम अब तक की है या नहीं ?), नहीं तो इसके पहले अगर कहीं इनका नाम भी ठलुओं में शामिल हो गया होता तो ...हल्दी न लगती, और न मियां जिन्दगी भर मेरी तरह टापते रह जाते। खतरा तब भी था अगर ये लगभग आधा दरजन बच्चों के बाप, या (यह कहना कम सन्देहास्पद होगा कि) इनकी श्रीमतीजी उन बच्चों की माँ न हो गई होतीं।

दूसरी आफत यह है कि बड़ी-बड़ी कुर्सियाँ, बड़े-बड़े ओहदों और बड़े-बड़े बंगलों के साथ सचमुच के ठलुओं की जगह भी आप लोगों ने छेका ली। अब वे अभागे कहाँ जायें ? क्या आप लोग अपनी कुर्सियाँ और अपने बंगले उनके लिए खाली करेंगे ? ईमानदारी का तो यही तकाजा है।.........

सिंहासन खाली करो कि ठलुए आते हैं !

× × ×

भाई हरिराम जी के साथ परिचय मे अपनी जिन्दगी के महत्तम दुर्भाग्यों में से एक मानता हूँ। यह बिछुरते ही प्रान हर लेने वाले हैं। यह मार-मार कर जिलाते हैं और जिला जिला कर मारते हैं। यह किसी निर्गुनी उद्धव से सन्देश दिला देते हैं कि अमुक तारीख को आ रहे हैं, पर न जाने कौन सी कुब्जा इन पर बार-बार जादू डाल देती है।

मैं बलिया ददरी मेले के कवि-सम्मेलन में इनके प्रथम दर्शन (कवि का सच्चा दर्शन उसकी कविता में होता है) में ही पागल हो उठा था। अगर मैं लड़की होता तो लोकलाज छोड़कर इनके साथ हो लेता। (इनका कविता सुनाना क्या था, विष बगराना था।) लड़का भी ऐसा नहीं था कि इनको रिझा सकता, यद्यपि इनकी रुचि का अभी

तक विशेष पता मुझे नहीं, ··· ··· हाँ, शायद ठलुआ-क्लब वालों में बिना दाढ़ी-मूछ वाले कोई हों तो उनको इसका करीब से अनुभव हो।

इनका वह गीत ··· ···· 'रेंगँ नन्हकी किरिनिया' ··· ··· "वाला मेरे लिए कई महाकाव्योंसे बढ़कर और, प्रियतर है। कई जन्म लेकर भी यदि एक भी ऐसी रचना बन पड़े ··· ··· तो कवि को अपनेसे और उस सृजनहारसे कोई शिकायत नहीं करनी चाहिए। यह उनकी काल-विजयिनी कृति है। इससे मैं इतना अभिभूत हूँ कि इनकी शेष रचनाओं के बारेमें अभी कोई धारण नहीं बना पाया हूँ, और दुःख है कि शेष रचनाओंको उतने ध्यानसे अब तक देख-सुन नहीं सका हूँ। पर मेरी अपनी छोटी समझसे ग्रे की 'एलिजी' या गुलेरीजी की 'उसने कहा था' की तरह इनका यह गीत अकेले इन्हें काव्य साहित्य के इतिहास में जिन्दा रखने के लिए पर्याप्त है।

मेरे यह शब्द उड़ जायेंगे ' द्विवेदी जी की यह कविता रहेगी। क्या इससे सुन्दरतर कोई गीत भोजपुरीमें लिखा गया है? लिखा जायेगा? लिखा जा सकता है? ··· ···

यह तो रही इनकी चापलूसी क्योंकि 'अभिनन्दन' का माने ही यही होता है। 'अभि' पूर्वक 'नन्द' धातुसे निष्पन्न 'अभिनन्दन' का अर्थ और उसकी सार्थकता यही है कि उससे सम्बद्ध सभी··· ··· दूल्हासे लेकर नाऊ-बारी-कहाँर तक, विशेष रूपसे 'नन्दित' हों। इस अभिनन्दनसे मैं स्वयं अभिनन्दित हूँ कि जिसका दुनियामें कोई पूछन्तर नहीं उसको ठलुआ-कंपनी (मेरा सुझाव है कि 'ठलुआ-क्लब' की जगह उनका नाम 'ठलुआ-कंपनी' रख दिया जाय, क्योंकि ठलुओंका 'क्लब' नहीं, उनकी 'कंपनी' होती है) जिसके एक-एक सदस्य का दर्शन हम लोगोंको केवल चित्रोंमें सुलभ होता है ··· ··· की ओरसे इस कुकर्ममें शामिल होनेके लिए छपित-पँडोपरि आमतन्त्रण, वह भी सादर-सस्नेह, मिला है।

वन्दनीय हैं ये ठलुए जो न केवल अपनी नाक कटाकर स्वर्ग देखते हैं, बल्कि औरोंको भी दिखाते है, न केवल खुद डूबते हैं, बल्कि औरोंको भी ले डूबते हैं।

इस मुण्डन-संस्कार (लगता है, पुनर्जन्म हुआ हो।) के अवसर ऊँटोंकी इस जोड़ीको दीर्घायुकी मैं कामना करता हूँ ताकि इनकी पीठ पर सवार होकर ठलुआ-कंपनी, अपना बोरिया-बिस्तर लादे, झपकी लेते, रेगिस्तान की सैर करे, और इन सुघर रूप पशुद्वयके व्यवहार पर मेरे जैसे—संगीत विशारद बैसाख-नन्दन मगन होकर गीत गायें :—

ब्याह ऊँटों का औ गदहों ने गीत गाये थे, स्यार पण्डित ने निकाही सबक पढ़ाये थे,
तेल सर में था चमेली का, बँधा जूरा था, माँग सिन्दूर सुअरिया ने चौक पूरा था,
कपड़े-लत्ते का इन्तजाम किया चुहिया ने, उल्लू ने रोशनी का, मददगार परवाने,
जिम्मे बिल्ली के दही - दुध - मलाई-माखन, माँस-मछली का बना कुत्ता आवारा चासन,
गरी गधी ने, लोमड़ी ने छुहारे काटे, छछूँदरी ने इत्र बेकार है बाँटे,
सारे जंगल में मचा शोर, धूम छायी थी, खुदा कसम न कभी ऐसी बरात आई थी।

·········॥ इति श्री ठलुआ-खण्डे चर्मस्कन्धे नरकाध्यायः॥

स्वामीनाथ पाण्डेय ब्राञ्च मैनेजर
ठलुआ-कंपनी अयोध्या शाखा

श्री देवनारायण सिंह—राकेश

आदरणीय बन्धु (श्री विश्वनाथ मुखर्जीजी) जय शिव शनि!

तो अबकी बार आपकी तबीयत हमारे मित्र पं० हरिराम द्विवेदी और श्रीकृष्ण तिवारी पर आ ही गई।

मुण्डन संस्कारान्तर्गत दोनों बन्धुओंको बधाई ! और आपको······ जो भी उक्ति समझें दे दूँ। श्रीकृष्ण तिवारी के नाम और रूपसे दूर का ही परिचय है। हाँ ! पं० हरिराम मेरे जघन्य आत्मीय हैं। उनको न केवल जानता पहचानता हूँ वरन् इनकी कुंडली और लच्छन-कुलच्छन का मिलान रावण-संहितासे किया तो पता चला कि उसके पूर्व यह मिर्जापुर के दक्षिणांत के जंगलमें भालू योनिमें थे। पूर्व जन्मके अवशेष स्वरूप इनके सम्पूर्ण गात्र पर बाल ही बाल हैं विश्वास न हो तो विवस्त्र करके स्वयं ही अवलोकन कर लें। मुझे क्या ? मैं तो बधाई देकर अलग हो जा रहा हूँ किन्तु इनका सांगोपांग-मुंडन करनेमें आपको बड़ा कष्ट होगा—एड़ी का पसीना माथे तक पहुँच जायगा। अतः जरा सँभल कर। हाँ तो ये बासन्ती निशान्तमें महुआ खाते जंगलमें वृक्षों पर उल्टे चढ़कर शहद चूसते और लुलुहा पर हाथ रखकर आदिवासी गीत गुड़गुड़ाते रहते थे। एक दिन एक आदिवासी ललनाके नयन वाणसे ये दिवंगत हो गये और 'अन्त मतिः सा गतिः' के अनुसार अपने सम्पूर्ण मोह को समेट मिर्जापुरके दक्षिणीसे उत्तरायण होकर अवतरित हुए। यही कारण है कि पूर्व संस्कार और नव अवतार की अर्जनाके संगमसे उनके गीतोंमें महुए की मादकता, शहदकी मिठास और लोक धुनके साथ-साथ आदिम-रस-गन्ध भी बड़े वेधक रूप में व्यक्त होता है। यह रहस्योद्घाटन करके मैंने आपको सजग कर दिया है। जंगल में बास का संस्कार जहाँ प्रकृति का वर्णन एवं चित्रणमें उनकी मूल प्रवृत्ति है। वहीं अपने जीवनांतर दायिनीकी खोजकी अहकमें (जिसके वाणसे ये हत हुए थे) "छोटकी टिकुली" "मटमैला आँचल मधु धारी बानी" गाते-गाते गांव की गोरी की खोज करते हुए गीतोंमें अहकते-डहकते रहते हैं। यही नहीं, इनका गीत सुनने वालोंका मन भी बहक कर झट्ट-झट्ट करने लगता हैं। इनके कुकर्मों की लिस्ट बहुत लम्बी है : सुकर्म अगर ढूंढ़ता भी हूँ तो उसमें इनकी तौहीन है। इनकी एक ही शिकायत है कि इनके कुछ मित्र उनके पीछेसे ही वार करते हैं फिर भी सब कुछ सहकर ये उसे प्यार करते हैं। ऐसा इनके मित्र भी स्वीकार करते हैं जिनको उठाते हैं वे ही इन्हें गिराने का कोशिश करते हैं। पता नहीं जिनको ये गिराते हैं वे क्या करते हैं। यह बात मुंडन कार को ज्ञात होनी चाहिए। इनकी वाणी, इनके गीत, इनकी भक्ष इतनी मीठी है कि यह चाहे जितना भी भागना चाहें लेकिन इन्हें लोग खिंचियाये ही रहते हैं। इस समय इनके··· में एक महाकाव्य पल रहा है। पता नहीं उसे बाहर क्यों नहीं करते इतना कंजूस क्यों रहे हैं।

अतः ये मेरी शुभ कामना है कि पं० हरिराम द्विवेदी बाल-बाल मूँड़ दिए जांय ताकि नव बाल जमकर उनका काया कल्प कर दे और इनका कुकर्म दिन दूना रात चौगुना बढ़कर इन्हें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बदनाम कर दे।



श्री हुल्लड़ मुरादाबादी—मुरादाबाद

कहते हैं कि कवि आधा पागल होता है मैंने स्वयं इसको अनुभव द्वारा सही पाया है लेकिन हरिरामजीके साथ यह बात नहीं है रेडियो स्टेशन पर ठीक-ठाक रहेंगे पर कवि सम्मेलनों में यह शख्स इतना डूबकर सुनाता है कि सुनने वाला किसी और लोक में पहुँच जाता है। द्विवेदीजी के सरल, निष्कपट और प्रेमपूर्ण स्वभाव ने मुझे अक्सर आश्चर्यमें डाल दिया है। ऐसा विकट कलयुग और इतना खरा व्यक्तित्व। अतः इन्हें कवियों की श्रेणीमें नहीं रक्खा जा सकता ये महाकवि हैं कवि आधे पागल होते हैं तो महाकवि ··· ··· पूरे ··· ··· पागल।

श्री बालशौरि रेड्डी—मद्रास

अमाननीय महोदय,

न्यारी नगरी वाराणसीके विश्वनाथ मुखर्जी द्वारा यह जानकर अपार संकट हुआ कि ठलुआक्लब पंडित त्रिभंगी (श्रीकृष्ण) तिवारीका उनकी असाहित्यिक एवं असांस्कृतिक करतूतके अपराधमें सिर मुड़ाया जा रहा है और लोहेके गधेपर बिठाकर उनका जुलूस निकाला जा रहा है ताकि भविष्यमें वे ऐसी हरकतें बराबर किया करें और बार-बार उनका अभिनंदन करने का मौका दे।

सिद्धगिरि 'बाग' में संपन्न होनेवाले इस महा-संस्कारकी खबर जानते ही मेरा भी दिल बाग-बाग हो गया।

छापरके "गीताकार" श्रीकृष्ण कलयुग (खलयुग) में 'गीतकार' बनकर पाठिका-गोपिकाओंके प्रति जो ऊधम मचा रहे हैं, उसका दण्ड मिलना वाजिब ही था। आपके इस फैसले की मैं दिलसे दाद देता हूँ।

पंडित सिरिया ('श्री) कृष्ण सदा पान चबाते थूक-थूककर गायन-रुदन करते अपने गीतोंमें रंग भर देते हैं, उन्हें पढ़कर पाठक-वृन्द स्वयं पान चबानेका मजा लेता हैं। एक बार मैंने बनारसकी गलियोंमें खुद देखा कि श्रीकृष्णने वहींके साहित्यकार-फोटोग्राफर एस (yes) याने 'हाँ' अतिबल-महा बलके छायाचित्रोंको रंगीन बनाकर उनके कलर फोटो बनानेका खर्चाकर दिया था। उस वक्त श्रीकृष्णकी यह कलाबाजी देख तन्मय हो, हंसते-हंसते लोट-फोट हो गया और केलेके छिलकेसे हठात् त्यार हो जानेके कारण उस नशेमें गिरने लग गया था। तब शायद 'ठलुआ' ने ही मुझे बचाया था। इस खुशीमें एस. अतिबल ने नही हाँ, 'नाहीं' अतिबलने उनके गलेमें बाहोंका हार डालकर उनका हार-धिक् अभिनन्दन किया था।

ऐसे महान (मोहन) काला-कार (कलाकार) एवं पत्थर कार (पत्रकार) का आप लोग अभी नंदन (अभिनंदन) कर रहे हैं। इस "उप"-लक्ष्य में आप सब ठलुआ क्लब (ढकेलने वाले क्लब) के सदस्य मेरी बाधाएं (बधाइयाँ) 'ग्रहण' करें।

मैं भविष्य में भी अपना 'योग' दान (योगदान) क्लब को देनेको तैयार हो रहा हूँ।

आपका 'अ' नहीं स्नेहाकांक्षी

महेन्द्र शंकर—गाज़ीपुर

श्री हरिराम द्विवेदी

ओ भूरिश्रवा के खंडहर से निकले
संगमूसा।
कहाँ गयी तुम्हारी असा ?
अच्छा! तो अब भी गुरु गोरखनाथ से
माँग लाओ
ओ भोजपु के षड्ज में गाने वाले कोकिल
हे हरिराम
तिब्बत की राजधानी सी तुम्हारी बातें
फसलों पर करती हैं भुरकाव
एण्ड्रिल की
तुम उन्हीं में पकड़ते हो तितलियाँ
हो गए स्त्रैण बोधक लखनउवा
अबकी बार अपने नाती के बरही में
तुमको बुलाऊँगा
और सुनूँगा तुम्हारे मुख से
अँगुली चमकाकर तुम्हारे प्यारे लोक गीत
ओ शनि के मीत
जिओ - जिओ रे लला
जिओ - जिओ
पत्तल भर पूड़ी और
दोनें भर चटनी से करूँगा अभिनन्दन
अभी इसी वक्त करता हूँ बन्दन।

श्री कृष्ण तिवारी

अब तक तुम उखाड़ते रहे हो
छीलते रहे हो शब्दों के प्याज
अपने सिर पर उन्हीं के सण्डे
लगा लिए सिर पर फिर आज
मोर पंखे के बदले
ओ युगीन बोध के अनुरूप
मेरे श्री कृष्ण
भावों शुभावों की गोपियाँ बन गयी है जनता
नेतागिरी, दल-बदलू नये गीतकार
लगता है जमाने की समय की शिलापर
घीसने के लिए खोज रहे हो लाल पत्थर का लोढ़ा
सेत - मेत में चंदन
अरे निठल्ले
'सन्मार्ग' पर चलकर तुम पा नहीं सकते
नन्दिनी या नन्दन
तुम्हारा अभिनन्दन।

डा० विश्वम्भरनाथ उपाध्याय—जयपुर

आदमी मेरे लिए मेरा अनुमान है, सबके लिए एक उलटबांसी रहा है जिसका अर्थ पंडित तो खैर लगा ही नहीं सकते, अपंडित कबीर भी नहीं लगा पाए। वह विस्मित होते रहे बनारसके पंडितोंको देख देख कर !

श्रीकृष्णजी तिवारी, श्रीकृष्ण की अनुकम्पासे उलट बांस ही नहीं, पुराण-पुरुष—मिथीकल मैन, भी हैं। भगवान भोलानाथ ने भंगकी तरंगमें जो भारतीय कल्पना की, वह श्रीकृष्ण तिवारी में मूर्त्तिमान हुई है। नन्दीगन ने उन्हें आँखें (दोदे समझिए) दीं, कैलास ने जड़ लेकिन धवल आत्मा दी; रुद्रगण ने शरारत और अकड़ दी, नागोंने आँखों की चमक दी, डमरूने बड़बड़ाहट और स्वामिकार्त्तिकेयने यश दिया तथा गणेश ने उन्हें अपनी नहीं, अपने चूहे की अक्ल दी !

मंचपर चमत्कारक बात कहनेके लिए तिवारी अपनी मूषक-मेधाको छेड़ते हैं और असलियत को वह पत्रकारके पैनेपनके साथ पकड़ लेते हैं। चूहा सर्वाधिक यथार्थदर्शी होता है। सूरते हालको करतब लहजे में चमत्कारक सूक्तियों

में बदलनेमें तिवारी की चुहिया चतुर है। उनके गीतोंमें भी चूहेको काटकी कुशलता होती है। उसकी वाणीमें दाँत हैं पर सभी जानते हैं, चुहियाएं जहरीली नहीं होतीं हैं, उनसे कोई ज्यादा हानि भी नहीं होती फिर भी श्रीकृष्ण तिवारी किसीके फन्देमें नहीं फंसते, फंसे हुए को उसका जाल काट कर निकाल भी सकते हैं, बशर्ते कि बनारसीपन स्थगित हो जाए और कमंठता जग जाए।

तिवारी विनोदमें जब आँखें मंचपर निकालते हैं तब लगता है कि वह अब मुंहसे गोला निकालेंगे। वह बातों के गोले निकालते भी हैं पर उसे इतने गुदगुदेपनके साथ पेश करते हैं कि उस आघातका लक्ष्य व्यक्ति चोट पर हंस पड़ता है और उसे जान पड़ता है कि उसके साथ दिल्लगी हो रही है जबकि तिवारी समझते हैं कि वह युद्ध कर रहे हैं। प्रतिपक्ष धराशायी न होकर हास्यशायी हो जाए, यह करतब कोई तिवारीसे सीखे।

तिवारीमें बनारसका देहात अभी भी है। बम्बईमें ताज होटल मे चलते हुए बोले, आतंक सा प्रतीत हो रहा है, जैसे हम यहाँके नहीं हैं, यहांके लायक नहीं हैं। हमने हुंकारा भरा, वाकई आप यहां के योग्य नहीं हैं, यहां के योग्य तो धनाढ्य लोग हैं, हम लोग तो उनके सामने चरकटे हैं। तिवारी का चित्त ठिकाने आया और वह लेखकीय नैतिक उच्चता में उड़ने लगे।

तिवारी मिलते ही कतर-ब्योंत शुरू कर देते हैं। वह स्थितियों और व्यक्तियोंमें छिपे हास्य को तो पकड़ते ही हैं, गप्प लगा कर पैदा भी कर लेते हैं। वह कभी बोर नहीं करते, बयाकी तरह—चहचहाते रहते हैं। अब चहचहानेसे ही कोई बोर हो जाए तो बात और है। लोगोंका क्या है, श्रीकृष्ण तिवारीके गीतोंसे भी कुछ वक्त बाद, बोर हो जाते हैं। हम इसलिए बोर नहीं हुए माँ कि हमें उसमें और उसके गीतोंमें तुरन्त ही काशीवास महसूस होने लगता है। तिवारी मेरे सामने रहते ही नहीं, उनकी जगह बनारस अपने दर्शन देने लगता है। तिवारीका देखनेसे तीर्थराजके भी दर्शन हो जाते हैं, बल्कि तीर्थराजके ही अधिक होते हैं, तिवारी लुप्त होने लगते हैं। . .

जनपद जिसमें जिन्दा हो, ऐसे मानुसका क्या भरोसा? वह जन नहीं, जनपद होता है, पता नहीं, क्या-क्या दृश्य दिखा दे, क्या कर गुजरे क्या कह दे, लेकिन जनपदीय व्यक्तित्व हमेशा जीवन्त और जलेबीनुमा होते हैं, मीठे और घुमावदार। आप कहीं से भी शुरू कीजिए अन्तमें केन्द्रमें पहुंच जाएंगे, इसी तरह श्रीकृष्ण तिवारी एक ऐसे चित्र का नाम है, एक ऐसा पिकासोनुमा चित्र, जिसमें अन्यत्र तो अमूर्त्तन है, लेकिन उस अमूर्त्तता में दिल और दीदे बड़े आकारमें लटके हुए हैं, आँखें उबल रही हैं और दिल पिघल रहा है !!

शशिकान्त शुक्ल एडवोकेट ए० ८० अलहदाद पुर, गोरखपुर

संदर्भ : पत्र दिनांक ३१-१-७८ = मुण्डन संस्कार

हे विश्वनाथ, लिङ्गात्मक रूपमें आपने समस्त चराचरको घेर रखा है···मेरा अर्घ्य स्वीकार करें, आशीर्वाद दें, किन्तु बता दें कि आपकी मुझपर शनि दृष्टि कैसे पड़ गई कि मैं निहंग हो गया···बोहनी न बट्टा ऊपरसे मुण्डन संस्कारका आमन्त्रण।

भूतनाथ, आपकी नगरीमें जाकर मेरा छोटा भाई हरिराम भूत हो गया···अक्षय पीड़ा कारक। बड़ा मायावी है वह रुला कर छोड़ता है किन्तु है "सखी सम्प्रदाय" का। आप गौरसे देखें सही लगेगा। एक दिन कचहरी से लौटा तो देख रहा हूं कि दो सखियां गा रही हैं···"झुरं झुरं डोले बयार यही अंगना ऽऽ" ध्यान दिया तो पाया कि पहले हरि भैय्या थे और दूसरी मेरी गृहलक्ष्मी। मेरे दिलपर क्या गुजरी होगी आप भली भांति जानते हैं। अरे उसने मेरी साध्वीको मुझसे छुड़ाकर आकाशवाणी गोरखपुर से सम्बद्ध कर दिया। यही क्या कम है कि उसके और कुकर्मोंका क्यों करूं?

शिशुसे दीप्तमान प्रभामण्डलपर तीसरे नेत्रका चित्रांकन रोरीसे करता है काजल लगाता है और गाता है "कजरवा ए गोइयां बड़ा नीक लागेऽ।" और तो और "सुरज मुख न जइबे बिंदियां कऽ रंग उड़ जाय।" आपकी

मण्डलीमें शामिल होकर वह सचमुच भोलानाथ हो गया है अतः यथोचित ही है कि उसका मुण्डन संस्कार आप करा रहे हैं वर्ना यह खर्च भी मुझे ही उठाना पड़ता। वह रस युक्त भोजन करता है और गीतोंमें रस वर्षण करता है "अंजुली भर रूप" सब पर निछावर करके खुद "धूपके लिए तरस" जाता है।

यह भी एक संयोग है कि सखी-सम्प्रदायके प्रतिनिधिका मुण्डन संस्कार साक्षात परब्रह्म श्रीकृष्ण सहित आप करने जा रहे हैं। भोजन वाटिकाका यदि कोई आयोजन हो तो बुलाना न भूलें। गोपी-कृष्णकी जोड़ी सबको अभयदान दे।

अन्तमें आप सभीको मनसा रूपसे १-१ गोली बिजिया-तर्पण के साथ अपना "पिण्ड" छुड़ाता हूँ।

श्री भवत्रातन नम्पूतिरि—पटना

जोग लिखि पाटलीपुत्र नगरीसे भवत्रातन नम्पूतिरी उर्फ "लक्ष्मी वाहन" का यथा योग्य वंचना अपरंच आपकी चिट्ठी आई। आगे निवेदन है कि आपने सदस्योंसे आग्रह किया कि तौलिया या गमछा अवश्य लावें और सम्भव हो तो उसे पहनकर गोष्ठीमें बैठें। मेरे विचारसे यह ठीक नहीं है। दिगम्बर बनकर या कौपीन धारण करके गोष्ठीमें बैठना चाहिए। प्रमाण है—"कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः"। होलीका मौका है, कोई बुरा नहीं मानेगा। आशा है, कम से कम मुण्ड्य व्यक्तिद्वय केवल कौपीन धारण करके या अण्डरवियर पहन कर गोष्ठीमें विराजमान होंगे। द्विवेदी-त्रिवेदी को मेरी होली वन्दनाएं। इति शुभ।

डा० माता प्रसाद त्रिपाठी —गोरखपुर

ठलुआ कांग्रेसके प्रधानमंत्री जी

राम! राम!!

रुद्रधाम काशीसे (नन्दी-उच्छ्वासकी) दिव्य अनुगूंज हुई कि वहांके दिग्गज हज्जामोंने इस बार जिन 'महामहिमा' को मूंड़नेका 'नाटक' रचाया है वे मेरे चीन्हे जाने 'कवि' मित्र हैं। इस अनोखे उत्सव-धर्मने कितने ही चतुर सुजानोंकी 'खबर' ली है। इसकी 'हेमवती शृङ्खला' यद्यपि शनि-कृपा (?) से 'लौहायस' में परिणत है, किन्तु दमकती है नटराजकी 'मणिमेखला' सी! अब इसी 'मेखला' में कमर कसनेका सुअवसर पाने वाले हरी भाई क्यों न फूले समायेंगे? चलो अच्छा हुआ कि रांड़ सांड़-संन्यासीसे निपटते हुए और अपनी राह पगे 'गवन्धु' का भाण्डा फूट ही गया। —गोया वे सचमुच 'धूलिमाटीसे रिश्ता' रखते हैं। काशीके पण्डों-षण्डों और भण्डोंके हथकण्डोंसे भला कोई भलामानुष बच सका है? अरे शिव-नगरीके ठेलुहोंने आचार्य्यप्रवर द्विवेदी जो (जिनके मुंडनमें कमसे कम एक हजार हज्जामोंकी 'नौव्वाझामड़ पार्टी' सम्मिलित हुई होगी) को तो बक्सा नहीं फिर बटुक—जी हाँ बटुक द्विवेदी' किस खेतकी सलजम हैं?......लेकिन सम्मान तो वही है जो होता आया है। लगता है मुझे ही अपने हरी भाई के कुकर्मोंका पूरा अभिज्ञान न था।

वस्तुतः हरीभाई हैं बड़े 'कुशल'। 'प्रधानमंत्री' जी का आदेश हुआ है कि अभिनन्दनीय यानी मुंडनीय सज्जनसे न्यूनसे किंचित् बेसी जान पहचान रखने की हैसियतके कारण, मैं उनके कुकर्मोंका पर्दाफाश करूं। पत्रसे सिर्फ बयान देनेका हुक्म हुआ है; हाजिर होनेके लिए शायद 'वारण्ट' जारी हो। फिलहाल, मैं अभीसे 'कंगा' बननेकी सोच रहा हूँ। 'बड़े भाईका मुंडन' हो तो छोटोंकी उपस्थिति अनिवार्य हो हो जाती है।

समझमें नहीं आता कि अपनी दृष्टिका 'लेंस' कहाँ तक उनके 'कार्यवृत्त' पर लगाए रखूं जब कि वे कर्त्तव्यकी पगडंडी पर 'ऋषिपत्तनकी सारतत्ववीणा' कंधेपर लटकाए कहीं भी 'चारिका' कर सकते हैं। न जाने कैसे पड़ गए बनारसी ठेलुहोंके चक्करमें? सुना है कि रचनात्मक प्रतिष्ठाके लिए यह कर्म निहायत जरूरी होता है ठीक उसी तरह जैसे आत्माकी सद्गति और शान्तिके लिए तर्पण।

हरी भाई इस राजको भलो भाँति समझते थे अन्यथा इस बातका उन्हें किस विधि एहसास हो पाता कि बिना इन्द्रधनुषी रंग वाले बनारसी दुपट्टेमें लिपटे, बिना श्रद्धा-प्रेम-स्नेहके घोलमें चन्दन चर्चित हुए और इससे भी ऊपर—बिना शीर्षोपचार मुंडन करवाए इस विश्वनाथ नगरीमें कोई भी कवि-कथाकार-कलाकार-चाटुकार-फनकार-बेकार' कुछ भी नहीं हो सकता ? इस राजकी तह तक पहुँचते ही 'बड़े भाई' ने (पहला कुकर्म यह किया होगा कि) बड़े-बूढ़े यानी जमे और मजे हुए ठलुओं, बिचौलिए—उदीयमान ठलुओं, संस्था जीवी यानी उत्सवधर्मी ठलुओं, बैजगाड़ोके भारवाली पोथियोंके लिक्खाड़—डाक्टर ठलुओं, शत-सहस्र-कोटि सर्गो वाले विलक्षण महाकाव्योंके प्रणेता ठलुओं और 'प्रत्यक्षरं लक्षं ददौ' की शान रखने वाले रश्मिरथी ठलुओं······के 'चरण-रज' में अपने (मुंडनीय) शीर्षपद्म (जहाँ विश्वशक्ति का सम्मिलन होता है) में अंकुरित तत्त्व (वीर्य) का रेतःसेक करके, जिस किसी तरह, अपने आपको इस योग्य बना ही लिया कि प्रतिष्ठा—पापिनीसे आशनाई हो ही जाय। सचमुच, गजबकी सांधिविग्रहिक दृष्टि है 'गवन्धुको माटी कै बोली' में ! लाजवाब !!

ये बातें तो हैं परदेके पीछेकी। परदेके बाहर ठलुआ मंडलने उनके एक विशिष्ट (कु) कर्मकी ओर इशारा कर ही दिया कि 'भोजपुरीके एक प्रतिष्ठित कवि' हैं। जाहिर है कि वे और जो कुछ भी करते हों—सब इसी आंचलिक प्रतिष्ठाके आंचलमें लिपटता जायगा। मुश्किल यह है कि दूर दराज बैठा हुआ मैं कैसे समझाऊं कि वे और भी बहुत कुछ करते धरते हैं। भोजपुरी इलाकेसे लेकर अवधी और ब्रज भूमि तककी काफी खाक छान चुके हैं। जादूनुमा कोई ऐसा तिलस्मी 'गुर' अवश्य है—उनके ताम्बूल मंडित मुखाभा और सनातनी टीकामें जो 'हरबोले' की बोलीको धरतीसे अन्तरिक्ष तक अंकृत करता है। प्रत्येक घर-आंगनमें उनके प्रेम-विरह गीत गूंजते हैं और हर कस्बे-नगर (विशेष कर महिलाओं) के स्वर उन्हें लोकप्रिय बनानेके सशक्त माध्यम हैं। अपनी इस मधुर पूंजीके सहारे उन्होंने महर्षि पाणिनि उस सिद्धान्तको बेकार सिद्ध कर दिया है कि 'बहुव्यापकोसामान्यः'। वे बहुव्यापक भी हैं और असामान्य भी। तभी तो हजामत करानेका सुयोग मिला

हरी भाई असाधारण हैं—हो गए हैं। इस बातका खयाल आते ही मुझमें इतनी हिम्मत ही नहीं रह गई है कि उनके कुकर्मोंका बखान करूं। आप ठलुए लोग नाउम्मीद न हों अस्तु पहले विन्ध्यवासिनीको सिर झुकाकर ही आगे कुछ कहूंगा। हां तो आप जानते ही होंगे कि काशीसे थोड़ी दूर गंगातीर पर हो जमीं हैं—'देवी'। भाई हरिराम जी की जन्मभूमि दोनोंके बीचमें है। उनका पहला मुंडन अवश्य ही माँकी गोदमें ही हुआ होगा और अब कितने ही रांड़-सांड़ संन्यासी उन्हें अर्घ्य चढ़ाएंगे। क्या खूब ! ठलुआ-क्लबके 'अक्ल-मंदों' को यदि थोड़ी भी अक्ल आ जाती तो वे हरी भाईका मुंडन वहीं करवाते जहाँ मुंडन होनेसे कोई ययाति सरीखे बूढ़ा चिरयुवा बन सकता है और कभी-कभी जहाँ मुड़ानेसे 'आम आदमी' बन बैठता है स्वास्थ्यमंत्री फिर इस धर्मयुगमें कितने ही रस भरे लोक गीत गाए जाते हैं।

अपने ठलुआ शिरोमणि भाईकी प्रतिष्ठाकी खबरसे दरअसल मैं बेहद दुःखी हूं। इसी उलझनमें, लगता है कि मैं बहक गया। अच्छा हुआ कि भारतेन्दुकी गंगामें बह नहीं गया।

करूं क्या दंभ करता हूं 'साहित्य' करनेका। पर शीर्ष पर मुलम्मा चढ़ जाता है 'इतिहास पुरातत्त्व' का। कहूं कुछ भी, कैसे भी—देखा जायगा वह 'पुरालोक' में ही।

'धन्य' हैं 'वे' जिन्हें अपनी मरम्मत करवानेका असमयमें भी समय मिल जाता है। 'धिक्कार' हैं उन्हें जो ऐसे आयोजनमें प्रभाकर-प्रवीण हैं—ताथेई ताथेई त किन धिन क धिन······करते हड़शिव,तकको नचा डालते हैं !! और 'धैर्यधन' हैं वे जो इस सफरमें शरीक होनेको लालाइत हैं। भले ही जन्मे हों वे मधु-माधव मासमें पर कहलाते हैं बैशाखनन्दन !!!.

× × ×

लाखों-करोड़ो पल साथ रहने वाला मैं भला हरी भाईको नहीं जान सकता ! आप उनके मुंडनयज्ञमें मुझे आमंत्रित करें या न करें सोचता हूँ असनी बिरसा लेखनीके सहारे हरीभाईके 'कुशल क्षेम' का परिचय दे ही डालूँ।

हरी भाईकी कुशलता (मट्ठा डालकर जड़ समेत कुश खोदनेकी कला) उनके क्षेम (वैदिक परंपरानुसार हर किसीके घरकी अपना बना लेने वाली कला) उनका हाल (दरबारे खाससे दरबारे आम तक की पहुँच । सामर्थ्य) उनकी चाल (साक्षात् राधेश्यामकी त्रिभंगी-विभंगी मुद्रा) ताल (बनारसी अखाड़ेसे कवि-सम्मेलनों तक) उनका राग (चंदन चर्चित नखसे शिखा तक ऊपर से मधुरा बानी जो नसीबदारोंके हिस्सेमें ही आती है) उनका रोमांस (अन्तः संवेदनाके नाम पर कण-कणसे और स्थूलतः विश्वनाथ जाने !) और उनका सौमनस्य (उस हद तक जो हर किसीको अपनेसे ऊंचा समझे पर जिसके कारण आगे बढ़नेकी सामर्थ्य खो दे)······इन सब रंगोंका 'एक रंग' जो मधुवनके बीच सिर्फ कन्हाईको सुलभ था—मिला हरीभाईको।······को उस अलौकिक छविका जो भी 'रूप' बने, मैं कहूँगा 'अरूप'। इस 'अरूपकी व्याख्या तो वे करते जो ठलुआ कांग्रेसके आद्य संरक्षक थे (दुर्भाग्यसे सभी स्मृति शेष !)।

आवरण गांधी जी के खद्दरका, आभरण बनारसी, चालढालसे वृन्दावनी—क्या ठाठ हैं बड़े भाईके जो हर किसीके 'स्वरमंडल' में अपने राग मिला सकते हैं—हर किसीको अपनानेका तरकीब से वाकिफ हैं :—

यह ऐजाज है हुस्नो आवारगीका जहाँ भी गए दास्ताँ छोड़ आए।

हुस्ने आवारगी की भला कोई सीमा होती है फिर क्यों न वे अपनी दास्ताँ छोड़ते जाँय 'चहुँओर' ? काशी के बाहर कम से यही ठाठ हैं हरी भाई मे। रही बात काशी में जमने की—अलग अलग वैतरणी वाली इस न्यारी पुरी में एक गली आगे (भी) मुड़ती है जो पुनर्नवता का संदेश देती है। हरी भाई इस बात से कायल करने की सामर्थ्य रखते है। पर इस सामर्थ्य का क्या अर्थ जब कि सरकार उनकी बोली में गुहार लगाकर—बहिनी हो बिरनवाँ दे दऽ मंगिया कै सेनुरवा दे दऽ······गा गाकर लाखों रूपये इकट्ठा कर ले और वे 'मोची के मोची' बने रहें ? संभव है मुंडन के बाद बड़े भाई अपनी अक्ल के द्वार खोल सकें।

कितने ही साँझ-कितने ही बिहान, कितनी हो घटा-कितनी ही छटा किंवा कितने ही घनघोर अँधेरे-पुरजोर उजाले। की उसी तरह छानबीन हरीभाई ने की है जैसे आप लोग संध्यावंदन के पूर्व 'छानते' हैं। नहीं मालूम कि हरिभाई कितनी छानते हैं ? बिरादरी में आजाने पर यह आशंका शायद निर्मूल सिद्ध हो कि फिल्मों में गीत लिखने के वास्ते वे काशी छोड़ (मगहर नहीं) मोहमयी पुरी जा बसेंगे ?

'श्रेयश्च प्रेयो विविनक्ति धीरः'—आप सब, सचमुच, 'धीर' हैं जो श्रेय और प्रेम का सही मूल्यांकन कर लेते हैं—अस्तु विश्वास है कि जो कुछ इस क्लब में करते रहे हैं सब 'प्रेम' समझकर। धीरजनों का श्रेय से क्या वास्ता ?

तो आइए हरीभाई का परिचय कराऊँ उन्हीं की बोली में—

गंगा जमुना मोरा दूनहू नयनवाँ ई मनवाँ दुआरिका कै धाम।
सुधिया के बिनराबने गइया चराइ धूमि—वँसिया बजावे मोर स्याम॥

—जिनके दोनों बनारस नयन गंगा जमुनी धार बरसाते हैं; जिनका निठल्ला मन द्वारकाधाम है और जिनकी सुधियों का संसार साक्षात् वृन्दावन है वे हरीभाई क्यों न डगर-डगार वंशी की तान छेड़ें ? कमाल की बात यह है कि नायिका की ओर से खुद ही विरह के गीत भी गाते हैं—"सपनवाँ जरि जरि छार भये। नोहर सिंगार भये।स···प···न वाँ···" इसी स्वप्निल यात्रा में अपनी मरनी को टीका लगाते रहने और गिन गिन कर अगोरने की सलाह देकर स्वयं उसकी दृष्टि से हो जाते हैं ओझल। कभी कभार रोते हैं तो यशोधरा बनकर। झंखना कोई सीखे तो उनसे। हाँ उनके उस दुःसाहस की भी याद हो आई जो वे नई कविता की क्रान्तधर्मी बानगी में दिखाते हैं।

मगर असली तसवीर उनकी अपनी बोली से ही निखरती है यह बात दीगर है कि बोली और भाषा या कि आस्था और अनास्था के बीच 'सैण्ड विच' बन जाते हैं बेचारे। और इसी उधेड़ बुन में भारी उमड़ी-गं गं फरजती-नटराज के डमरू-निनाद पर थिरकती-गंगा-को भी उसी यक्ष-चश्मे से निहार कर कह देते हैं—'नदियो गइल दुबराय'। उस पर तुर्रा यह कि (सुना है) अपनी बोली को इसी नाम से संकलित भी कर रहे है—जब वह प्रकाशित होगी तो लोगबाग क्या समझेंगे—'विश्वनाथ' जाने। लगता है, ऐसे ही किन्ही 'सिनिक' क्षणों में ही उन्होंने अपनी 'रसा' को झिंझोड़ा होगा—"भला अकेले कोई किस तरह जिये।"

एक बात और है 'नोट' करने की। वह है आंगनं की जो भक्त ही 'अन्तः पुर' समझा जाता रहा हो और पुरुषजन के लिए 'आम' न हो या कि वर्जित हो पर 'बड़ेभाई' इस मामले में पूरे 'घुसपैठिए' हैं। वे अपनी शकवीणा की झंकार के सहारे पहुंच जाते हैं कितने ही घर-आँगन में—पहुंचते ही गुनगुनाते हैं—

झरै सुख सपना अँगना में रे। झरै......
निर्माणों में उमर गंवाई जोड़े तिनके-तिनके

निशिदिन सांझ-सवेरे। झरै'' '''और उसी अंगनइया में—

बाजै परग परग गोड़वा से बिछुवा जइसै अँगना सगुनवाँ कै गीत जगै

फिर मेघ का बरसना स्वाभाविक है लेकिन उनका मन तब भी तरसता रहता है—

झुकि झुकि अइलैं बदरवा अँगनवाँ बरस गइलैं सून बखरी में मनवाँ तरस गइलैं।

मन तरस रहा हो—तरसता रहे पर कवि का तन थिरक-थिरक उठता है किसी दूसरी आंगन वाली को देख कर। वे उसकी ओर से गाते हैं—युगल स्वर में—

मोहिया कै रसरी पिरितिया कै पलना गाइ गाइ गितिया झुलाय रही ललना
....
अँगुरी पकरी कै सिखाइ रही चलना गाइ गाइ गितिया डोलाय रही ललना।

—फिर वही 'अंगना' फिर वही कोरस और फिर वही अनुगूंज-हरीभाई चुस्त-दुरुस्त-तन्दुरुस्त—

राखीला तोहें परनवाँ में-लोटेला काहे अँगनवाँ में
सब कुछ बा तोहरे कहनवाँ में लोटा ना भुइयाँ अँगनवाँ में

इस तरह कभी आंगन कभी मन-आँगन से रिश्ता जोड़ जोड़कर वे आत्मविह्वल हो उठते हैं—"अंगनइया लगै उजियार"—यह उजाला कातिक में कुछ और ही रंग लाता है—

बिखरी गइलैं अँगना में एतना अँजोर करियई रइनियाँ लगैले बड़ी गोर।

'मोरे अंगना लगाया द चनन बिरवा' की हुलास लिए उसी-रस में डूबने उतिराने वाले भाई ईमानदारी से कहते हैं—जोगिया जोग रमाये कवन गुन! बस इसी 'गुन' की तलास में वे एक बार

फिर जा बसे हैं काशी और अलाप रहे हैं अपना पुराना राग—चारों खूंट घुमरी घुमावै हो मोरा पवन पहुनवाँ!

अब, जिसकी पहुनाई करने पवन सरकता रहे वह कितनी ही ऊंची आवाज में गाये कि "ज्योति की चादर बिछाने हम चले हैं"—आश्वासनों की परेड करती व्यवस्था में धुंध तो छायेगा ही। संभव है कि आंगन की अंजोरिया उस धुंध को छांटने का काम करे, लेकिन तभी जब 'भाई' के शीर्ष का आवरण छिल जाय!

एक होली पिछले बरस हो ली तो फिजां ही बदल गई और एक होली इस बार की है—देखें, क्या रंग लाती है ? लगता है कि कंगा बनकर ही प्रकट होना पड़ेगा इस 'समाज' (जिसे देवानांप्रिय अशोक ने कहा था—न च समाजो कतब्बो !) में । अनाहूत पहुँचने का मजा कुछ और ही है । सो, सोचता हूँ कि इस अभिनन्दन-मुंडन समारोह में चार चांद लगाने के निमित्त अपने नगर (गोरखपुर) के कुछ अवकाशप्राप्त और कुछ उदीयमान-बुद्धि निरपेक्ष मच्छरों को ट्रकों पर लादकर पहुंच जाऊं ठलुआ कांग्रेस के महाधिवेशन में । एक 'कैम्प' अपना भी होगा फिर इस सुनियोजित समर्थन से चहक उठेंगे प्रधान मंत्री जो अपने ही मुँह उपाध्याय बनते हैं—साक्षात् विश्वनाथ हो जाने का दंभ पालने लगेंगे । संभव है तब वे अखिल अन्तर्राष्ट्रीय ठलुआ कांग्रेस के स्वयंभू प्रधान मंत्री बन जांय । लेकिन दुःख की बात यह होगी कि श्रेय मिल जायगा 'हरिराम द्विवेदी' को । इससे कुछ यथास्थितिवादी निराश होंगे । शायद वे कुछ होकर साँस भरने लगें कि काश ! इस कथित सज्जन का पहले ही फ्री-स्टाइल (बनारसी) में मुंडन करवा दिया होता ।

श्री कन्हैयालाल नंदन--नयीदिल्ली

माननीय श्री मुखर्जी साहब,

आपने हमारे एक मित्र पण्डित हरिराम द्विवेदीका मुण्डन-संस्कार किया, इसके लिए बनारसके सभी नापितों का बहुत-बहुत शुक्र गुजार हूँ, जनाब हरिराम द्विवेदी जी बड़े भिनसारे अपने पिछवारे मैना बुलवाते हैं और देहरीसे अंगना को बिना बात रुठन में डालकर आलेका आईना चटकवाते हैं, ऐसे खतरनाक परिवार द्रोही कवि का सालमें एक नहीं, दस बार मुण्डन होना चाहिए, आपने बहुत उत्तम काम किया है, इसके लिए मैं ठलुआ-परिवारके सभी सदस्योंका अभिनंदन करता हूँ और होलीके अवसरपर विलकिन्सन ब्लेड भिजवानेका जुगाड़ करता हूँ, सुना है विलकिन्सन ब्लेड संसारमें सबसे अच्छा ब्लेड होता है, उससे मित्रोंकी हजामत बहुत सफाईसे हो सकती है ।

ऊपरकी सारी बातें भंगके नशेमें लिखी गयी हैं, इसलिए कोई सही बात लिख गया हूँ, तो पण्डित हरिरामसे मेरी ओरसे माफी माँग लें ।

× × × × × ×

संदेश शुभकामनाओंके बाद काव्यगोष्ठी प्रारंभ हुई । पहली कविता वशिष्ठ मुनि ओझाने इस ढंगका पाठ किया कि लोग त्राहिमाम कर उठे । यहां तक कि राजा गुरुको सुहागरातकी यादें सताने लगी । नवयुवकोंकी बुरी स्थिति हो गयी । कुछ लोगोंने 'हाय राजा—मार डाला' आदि शब्द कहने लगे ।

इस अवसरपर पुनः अन्य कवि काव्यपाठके लिए राजी नहीं हो रहे थे । बड़ी मुश्किलसे राजी हुए । काव्य-पाठके बाद दिव्य जलपान कराया श्री घनश्याम गुप्तने । जब ठंढई पीनेका आग्रह ठलुआ मांत्रिकसे किया गया और वे इनकार कर गये तब बीरको पता चला कि बात कुछ गड़बड़ है, पर भाँगके नशेमें वे कारण खोज नहीं पाये ।

अध्यक्ष महोदयने इस अवसरपर ठलुआ बोरकी भद्रा जी भरकर की । अभिनन्दितोंने भी जी भरकर कोसा । यहांतक धन्यवाद भाषणमें मांत्रिक महोदयने कहा—ठलुआ क्लबका यह असली रूप नहीं है जिसे आपने आज देखा ।

इस अवसरपर सर्वश्री महेन्द्र शंकर, स्वामीनाथ पाण्डेय, अभयनाथ तिवारी, हरिराम द्विवेदी, श्रीकृष्ण तिवारी, उद्धव द्विवेदी, घनश्याम गुप्त आदि अनेक लोगोंने काव्यपाठ किया ।

रात अधिक होनेके कारण पुस्तकालयके व्यवस्थापकने कहा—'हल्ला बन्द करिये । पड़ोसी कह रहे हैं—कहाँके लिहाड़े आ गये हैं । मुझे नींद आ रही है ! मैं फाटक बन्द करने जा रहा हूँ ।'

इतना सुनना था कि सभी ठलुए पत्ते झार भाग खड़े हुए । उन्हें भय हुआ कि कहीं वे पुस्तकोंको तरह आलमारीमें बन्द न कर दिए जायं ।

●

॥ अभिनन्दन पत्र ॥

हे महा-अनुभाव,

हम आज आपके दर्शन से कृतकृत्य हैं। नाट्यशास्त्र के प्रणेता भरतमुनि ने मनोगत भावों के सूचक शारीरिक विकारोंको अनुभावकी संज्ञा दी है, आप साक्षात् अनुभव के अवतार हैं, इसी से आपके गीत सरस होते हैं। इसका सबसे बड़ा प्रमाण जब आप कुर्ता-गंजी उतार केवल जाँघिया पहन कर 'बिरला उपवन' में टहलते थे, उसी समय रसज्ञोंको मिल चुका है। आपका नाम हरि-राम भी आपके पिता श्री सुखदेव द्विवेदीजीने अत्यंत समझ-बूझ के साथ रखा है जैसे हरि (बंदर) के समान आनन एवं सम्पूर्ण देह यष्टि पर राम की श्यामल आभा आपके सजीव चित्र का बोधक है। छापक कद, भाल पर लाल गोल टीका, श्मश्रु विहीन मुखमंडल, आँखोंपर रखा कम पावर का चश्मा और हसने पर ताम्बूल चर्वित मुख गह्वरसे झाँकती नकली दंतावली आदि जिस रस की निष्पति करते हैं उसे अभिव्यक्ति देने के लिए किसी नए महान आचार्यको पुनः जन्म लेना होगा।

हे भोजपुरी कोकिल,

रिवाजके अनुसार जब मिथिलाके लोक गायक विद्यापति को मैथिल-कोकिल कहा गया तो आपको भी भोजपुरी कोकिल क्यों न कहा जाय ? यद्यपि आपने भोजपुर में नहीं मिर्जापुर मंडलान्तर्गत भुइली परगना के सुप्रसिद्ध शेरवाँ ग्राम में लोक विश्रुत द्विवेदी वंशमें अवतार ग्रहण किया है, किन्तु भाषाके आधारपर यह ग्राम भोजपुरी भाषाभाषी क्षेत्रके अन्तर्गत है एवं इस प्रदेशमें प्रचलित पारंपरिक एवम् अपारंपरिक लोकगीतों का एक बड़ा भंडार आपके जेबमें नहीं जबानपर है। वैसे आपके अग्रज-अग्रजा एवं अनुज-अनुजा सभी सुकंठ हैं (मुझे भय है कि कहीं आप सुकंठका अर्थ त्रेताके सुग्रीवजीसे न लगा बैठें)। यथोचित स्वागत एवं खातिरदारीमें द्विवेदी जीके पूर्वजोंने बहुत बड़ी ख्याति प्राप्त कर 'राजा जनक' की उपाधि पाई थी। प्राकृतिक सुषमा एवं ऐतिहासिक ख्यातिसे समृद्ध शेरवाँ ग्राम एक पहाड़ीकी गोद में बसा है। कहा जाता हैं कि पौराणिक राजा भूरिश्रवा ने यहाँ अपनी राजधानी बनाई थी और उसी के नाम पर इसका नाम भुइली शेरवाँ पड़ा। ५२ बीघाकी कोटिया प्राचीन किलेके अवशेषके रूपमें यहाँ वर्तमान है। कुछ लोगोंका कथन है कि शेरशाह सूरी कुछ समय यहाँ पड़ाव डालकर निवास करता रहा और उसीने इसका नाम शेरवाँ रखा। कुछ भी हो मुगलकालीन मीनारों, मदरसा एवं मस्जिदोंके ध्वंसावशेष इसकी ऐतिहासिक समृद्धि की गाथा आज भी सुना रहे हैं। यहाँके खेतोंमें मुगलकालीन मुहरें एवं सिक्के यदा कदा आज भी मिल जाया करते हैं। इसी ऐतिहासिक ग्राममें सम्वत् १९९२ की माघ कृष्ण द्वितीयाके दिन आपका प्रादुर्भाव हुआ। हाँ, इस गाँवके लिए एक विचित्र किंवदन्ती है—इस गाँवसे सटे पहाड़ीकी चोटी पर एक पुरानी कुटिया (जो आज भी वर्तमान है) में एक तपस्वी रहते थे। वे उसी कुटियामें वीतराग होकर नंग-धड़ंग पड़े रहते थे, यही कारण था कि लोग उन्हें झाँटू बाबाके नामसे जानने लगे। एक बार गाँव की कुछ लड़कियाँ झुंड बनाकर पहाड़ी घूमने निकलीं। घूमते हुए उस कुटिया तक चली गईं जहाँ बाबा नंग-धड़ंग अपनी समाधिमें लीन पड़े थे। लड़कियोंने उनके साथ मजाक किया। बाबा चौंककर उठ बैठे। नारियोंकी समवेत स्वरमें खिलखिलाहट गूंज उठी। बाबाको बड़ा क्रोध आया। क्रोधमें भी बाबाने अपना संतुलन न बिगड़ने दिया और शाप दिया कि यहाँकी लड़कियोंके वंशका क्षय और बहुओंके वंशकी जय हो। गाँववालों ने जब यह सुना तो बड़ी निरौरी-बिनती करके बाबाको खुश किया और आज भी शादीके पूर्व लड़कियाँ उनकी समाधि का दर्शन करने एवं आशीर्वाद लेने जाती हैं तथा बहुएँ तो लाभमें ही थीं, यही कारण है कि इस परिवार नियोजन युग मे भी आज लगभग आधा दर्जनके बाप कहलाते हैं।

हे कविवर,

राजकी बात हैं कि कविता तो कम, गलेबाजीने अधिक आपका साथ दिया। जब आप पी० डी० एन० डी० इन्टर कालेज चुनारसे इन्टरमीडियट पास करके बी० ए०के लिये काशी हिन्दू विश्वविद्यालयमें सन् ५७-५८ में आए और धर्मनगर नगवा में रहने लगे उस समय हीरालाल चौबे, हरिश्चन्द्र मिश्र आदिके साथ आर्ट्स कालेजकी लान में बैठकर तरह-तरहके गाने गाया करते थे। गानेका अभ्यास भाइयोंके साथ बैठकर रामायण गाने के कारण खूब हो गया था। आपके भाई श्रीजयराम द्विवेदी एक अच्छे लोकगीत गायक हैं मित्रमंडलीमें आपको तुक जोड़नेका चाव पैदा हुआ और 'पिपराके पतवा सरीखे डोले मनवाँ, निमियाँ तले डोला धई द कहरवा, बाबा निमिया क पेड़ जिन काटेउ आदि हृदय स्पर्शी गीतों ने आपको रसिक साहित्यिकोंके सम्पर्कमें ला खड़ा किया। कवियों में आप खूब चले और कवि बन गये। केशवानन्द तिवारी के सम्पर्क में आपने कोल्हुआ में कुछ दिन बिताकर और किसी तरह काशी विद्यापीठ से एम० ए० एवं टी० टी० सी० से बी० ए० तक शिक्षा प्राप्त की। पं० रमापति शुक्ल की आप पर विशेष कृपा रही है। नाचे गावे तोरे तान, लेकर दुनिया राखे मान—आधार पर आपकी हर जगह 'मान' ली गयो और फिर क्या था, 'जानकी बाई इलाहाबाद और छप्पन छुरी लखनऊ को भो आपने रिकार्ड बनवाने में मात कर दिया और अब तो आकाशवाणी से आपका कोई गीत प्रायः नित्य सुननेको मिल जाता है। आप मंच पर भी खूब जमते हैं हालांकि आपकी काशी और काशीके बाहरके तथाकथित कवि जो मंच पर कविता कम भड़ैती और गलेबाजी ज्याद करते हैं, उखाड़ने में अधिक सक्रिय दिखाई देते हैं।

हे सहज-सनेही,

महज एक बार भी आप मिल जाते हैं, उससे चटपट दोस्ती गाँठ लेते हैं फिर उसके दुःख-सुख समझ कर उसीमें दिन रात काजी जी की तरह शहर के अंदेशेसे दुबले होने लगते हैं। इनके साथ आप शहरमें निकल जाइये फिर देखिए! क्या मजाल कि इनका कोई परिचित चेहरा बगली देकर निकल जाय। अगर वह दूर होगा तो भी आप सलामी ठोक ही देंगे। अगर वह संकोचवश रुक जाय तो फिर उससे आप इस तरह हीं-हीं करके चिपकेंगे कि चींटा गुड़ के साथ क्या चिपटवा होगा। फिर सुन लीजिये शहर भरका सुख-दुख। आप भले ही किसीके काम न आ सकें पर मौखिक रूपसे आकाशवाणी के 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' के नारेके समान सदैव आपके ये हर बसर। यही कारण है कि केवल काशी ही नहीं, इलाहाबाद, रामपुर, गोरखपुर या यह समझिये कि देशके हर कोनेमें आपके चहेते वर्तमान हैं। यह है आपकी मिलनसारिता। 'लागी नाहीं छुटे रामा चाहे जिया जाय।' वैसे आपका कुंवारापन प्राइमरी पाठशाला शेरवाँ तथा सेन्ट्रल हिन्दू स्कूल कमच्छासे एडमिशन की परीक्षा पास करनेके पहले छूट चुका था। यह सब बातें बाद की हैं।

हे लोक जीवनके चितेरे,

द्विविधामें दोनों गये माया मिली न राम' की कहावत आ पर पूरी चरितार्थ होती है क्योंकि गृहस्थी और नौकरी दो स्त्रीलिंगोंके बीच कचौरीकी पीठीकी तरह आप ऐसे चंपे हैं कि कहीं भी आप रह नहीं सकते। बाहर रहते हैं तो गृहस्थी बिगड़ती है और काशीमें रहते हैं तो जन्म भरके लिये आकाशवाणीके कम्पीयर एनाउन्सरसे आगे बढ़नेके सभी रास्ते बंद मिलते हैं। कुछ भी हो, जहाँ तक मौजमें पूरी परोसी जाती है अर्थात् भोजपुरी बोली और समझी जाती है —दक्षिणी अफ्रीका, मारीशस, त्रिनीडाड, एम्सटर्डम आदि देशोंमें भी आपके गीत का एक विशिष्ट स्थान एवं महत्व है। आपने भोजपुरी गीतोंको एक नयी वाणी दी है। आपका नूतन बिम्ब-विधान लोक जीवन को सहज ही प्रतिबिंबित करनेमें समर्थ है। करीलकी तरह देह, सरपतकी तरह सोझ मन, मथवाकी नन्हकी टिकुलियाका बोझ, पवनके द्वारा सनईका घुघुना बजाना, सुख घर असरवा टहरि परै आदिके अतिरिक्त आपके गीतोंमें गाँवकी माटीका सहज गंध है। हाँलांकि इस गुण विशेषपर साड़ी पहन कर, ढोलकी लेकर 'रमजानके अब्बा-हां जी' कहने वालोंकी बपौती है और शायद इसका कुछ अंश आपमें भी वर्तमान है।

हे प्रियंवद,

वे दिन हवा हुए जब पसीना गुलाब था। ये हैं आपकी धर्मपत्नी सत्यभामा जीके विचार। उनसे पूछने पर कहने लगी—'का कहीं बाबू, हम ई नहीं जानत रहली कि ई कवि हउवन। सन् १९५३ में मार्चके एनके संगे हमार बियाह भयल। जब तक पढ़त रहलन तब तक त जसतस। जबसे रेडियोपर नौकरो भइल, हमका जानत रहली कि इहै हमार सौत बनी। अब त एनके भाभी अउर बहिनिन से हमार जिउ उबियाय गइल बाऽ।' सचमुच सत्यभामा भाभी का विचार सुनकर अपार हर्ष हुआ। भला जो लोक है वह एक का कैसे हो सकता है। बहुत पहले से सुना जा रहा है कि द्विवेदोजी अपना गीत संग्रह 'नदियो गइल दुबराय' प्रकाशित करवा रहे हैं किन्तु अभीतक 'गदराइल नदिया'के फेरमें दुबराइल नदियाका कहीं भी पता नहीं है।

हे हरि भइया,

दीर्घ आयुकी कामना करनेके लिये जब हमने आपकी कुंडलीका शोधन किया तो पाया कि ग्रहराज शनि, राहु एवं केतु अपनी वक्रदृष्टि आप परसे हटाना ही नहीं चाहते अतः इन ग्रहोंकी दृष्टिसे बचनेके लिये आप निम्नलिखित उपाय करें—

१—सवेरे ही सवेरे जो आप 'रामकी सुधि आई आजु मोहें' गाते हुए उंघते हैं उसे एकदम बंद कर दें। उषाकालमें मीराकी तरह प्रेममगन हो आप वन्दना करें।

२—काशीमें विश्वनाथके ज्योतिर्लिंगपर नवनीत मर्दन आपको पातग्रहोंसे मुक्त रखेगा

३—षडरसमेंसे कटु और तिक्त आपके लिये नितांत वर्जित है। यह आपमें पल रहे बवासीर जैसे दुष्ट रोगको दृष्टिमें रखकर किया जा रहा है।

४—रेडियोके स्टुडियोमें महिला कलाकारोंके सम्मुख खजड़ी बजाकर आपका नाचना गाना आपकी उन्नतिमें सहायक है अतः इस अवसरसे आप कभी न चूकें।

५—भूल कर भी सिनेमावालोंके चक्करमें मत पड़े। इस स्थानपर शनि महाराजकी विशेष दृष्टि है।

अंतमें हम ठलुआ क्लबके सदस्य आपको 'ठलुआ कोकिल' की सम्मानित पदवीसे विभूषित करते हुए यह चाहते हैं कि हम पर आपका स्नेह अक्षुण्णता बना रहे तथा भूत भावन भगवान आशुतोषसे प्रार्थना करते हैं कि वे आपका मार्ग प्रशस्त करते हुए आपको उत्तरोत्तर उन्नतिके शिखरपर चढ़ाते रहें।

(देवी प्रसाद मिश्र)

होली की

शुभ

कामनायें

फागके भीर अभिरनि सो गहि गोविन्द लै गई भीतर गोरी।
भाय करी मनकी 'पद्माकर' ऊपर नाय अबीरकी झोरी॥
छीन पितंबर कम्मर तें, सुविदा दई भीड़ कपोलन रोरी।
नैन नचाय कही मुसकाय लला फिर आइयो खेलन होरी॥
—पद्माकर

धीरज एण्ड कम्पनी

वा रा ण सी

॥ अभिनन्दन पत्र ॥

कविकुलमें राजवधू कैकेयीकी तरह मान दिखानेवाले और समाजमें नगरवधू चित्रलेखाकी तरह सम्मान पानेवाले हे रूप-गुण-आगार सर्व-सार !

लगभग डेढ़ दशक पहलेकी बात है जब भगवान शनि और शिवने एक साथ इच्छा व्यक्त की थी कि अबकी बार हम किसी चढ़ी जवानीवाली गणिका के कान फूंकना चाहते हैं। एक योग्य गणिका तलाशनेके लिए दोनोंने अपने एक-एक गण भेजे। घर-घर जाकर और जन-जनकी पूंछ हटाकर नर और मादाकी पहचान करने वाले वे गण झपट्टू और निखट्टू, आपके मोहक रूप जाल और उत्तेजक चाल-ढाल पर ऐसे लट्टू हो गये कि आपकी पूँछ हटाना भी भूल गये। गणिकाकी तलाशका कार्य स्थगितकर वे सीधे दरबारमें लौटे और अठान पड़ गये। दोनोंने फौरन आपात सभा बुलायी। विचित्र बात तो यह हुई कि अनशनकारी गणोंने भरी सभामें जो बयान दिया, उससे सारी सभा ही सनक गयी। उसी समयसे यह ठलुआमंडल आपको सार्वजनिक उपभोग योग्य व्यक्तिके रूपमें अपने बीच लानेका अवसर ढूंढता रहा है। आज अकस्मात, खूंटा उपारकर दौड़ती हुई साँड़ोंके पास पहुँचनेवाली बछियाकी तरह आप स्वय हमारे आगे आ गये हैं। इसे हम चिर प्रतीक्षित महान अवसर मानते हैं और घर आयी लछिमीकी तरह आपका अभिनंदन करते हैं साथ ही पूरी आशा रखते हैं कि आप दोनों देवों, दोनों गणों और सभी भक्तोंका मन रखेंगे।

नगद, उधार, दोनोंपर राजी रहनेवाले हैं परमसे भी परम उदार ! अपनी परंपराके अनुसार हम आपका अभिनंदन भी चार चरणोंमें पूरा करेंगे, अर्थात् पहले नयी लछिमीके समान सिंगार और पूजनके बाद अब हम आपकी पूंछ हटाकर देख रहे हैं कि आप नर हैं या मादा ? आप झाऊँ-झाऊँ करें या एकलत्ती मारें, हमें तो प्रमाणित करना ही है, इस आम चर्चा की कि आप उभयलिंगी हैं।

हे गौरांग श्रीकृष्ण

परंपरागत अर्थमें यदुकुलसे, किंतु आधुनिक अर्थमें द्विजकुलसे आप जुड़े हैं। बड़े-बूढ़े बताते हैं कि चौधरी चरण सिंह और चंद्रजीत यादवकी नेतागिरी शुरू होने पर आपकी मीसामें पकड़ा गया था। बादमें मुकदमा चलाकर यादवोंकी अदालतने आपको तीन दिनका जेल और ९ मासकी फांसी दे दी। अपमान जनित आक्रोशके कारण वर्षों तक अण्डरग्राउँड रहनेके बाद आपने भोजपुरिया बाम्हनके रूपमें फिर सामने आनेका निर्णय किया। शिक्षाके सदनमें दर्ज तारीखके अनुसार आप १ सितम्बर १९५० जो पुनः प्रकट हुए थे, लेकिन प्रत्यक्षदर्शियोंका कहना है कि शिक्षा सम्बन्धी तिथि उतनी ही गलत है जितनी स्वयं आजकलकी शिक्षा। दर असल आरा जिलेमें डुमरांव स्टेशनसे करीब ६ मील दक्षिण लार्ड सच्चिदानंद सिन्हाके गांव मुरारके एक बाम्हन श्री दलसिंगार तिवारी काशीमें संस्कृत पढ़ने आये थे जो शहरसे श्मशान तककी यजमानिका वाले चेतगंजके कर्मकांडी पंडित तुलसी मिश्रके घरमें रहते थे। संयोगसे जब तुलसी मिश्रका स्वर्गवास हुआ तब उनके लड़के नाबालिग थे और बड़े ब्यौरेसे दल सिंगार तिवारी पूरी यजमानीका दायित्व संभालकर उसे बटाईपर चलाने लगे। फिर तो उन्होंने अपने लड़के सूरत तिवारी को यहीं बुला लिया और मेडिल पास कराकर नगर महापालिकामें एक आदमीवाली जगह दिला दी। कमाईके दो अच्छे जरिए कायम होनेके बाद तिवारीजी का परिवार भी यहीं आकर गया। यह १९३८ ईस्वीकी ठीक जन्माष्टमी थी—भादो बदी अठिमीकी रात जब प्रसाद और पूजाकी सामग्री रखकर और खीरे पेट चीरकर उसमें ठाकुरजीकी मूर्ति रखनेके बाद बुढ़ऊ पंडित दल सिंगार महाराज बारह बजनेका इन्तजारकर रहे थे। रातके अभी दस ही बजे थे कि घरके भीतर औरतोंकी व्यस्तता और शोरगुलके बीच नवजात छौनेका सा शिशु क्रंदन सुनकर पंडितजी चौंक गए। बादमें उन्होंने जाना कि ठाकुरजी

खीरेके पेटसे नहीं बल्कि सूरत तिवारीकी पत्नी श्रीमती सहोदरा देवीकी कोखसे प्रकट हुए हैं। बुढ़ऊ पंडितने बिना सोचे समझे ही नये मेहमानका नाम श्रीकृष्ण रख दिया।

हे विघाधरोंके प्रिय बटुक

पहिलौठी संतान होनेके कारण परिवारमें आपको बेटवा और बिटिया दोनों रूपमें भरपूर दुलार मिला और ब इयां चलनेकी उम्रमें ही पास पड़ोसके बालकों ने आपको कलम, पेंसिल थामने और चलानेकी आदत लगा दी। फलतः प्राइमरी स्कूल हवीबपुरा, जायसवाल स्कूल और आदर्श सेवा इन्टर कालेजकी सभी कक्षाओंमें आप औव्वल लड़के बने रहे और अधिकांश अध्यापकोंका लाड़-प्यार पाते रहे। रातके अंधेरे में आप लहुराबीर-गोदौलिया सड़कपर अपने दोस्तोंके साथ कबड्डी गुच्चीपाड़ा और चीयां खेलते थे। फागुनके महीनेमें होलकी काटनेकी भी धुन सवार होती थी और इसके बहाने रात-रात भर उन शोहदोंके साथ आप क्या करते रहते थे, इसका खुलासा करनेकी वेहायई हम नहीं दिखा सकते, लेकिन उस घटनाका जिक्रकर देना हम अपना कर्तव्य समझते हैं जब एक रात हथुआ कोठीके अहातेमें एक अन्य मित्रके साथ आप एक पेड़पर चढ़े हुए थे और अचानक लाठी लिए हुए कई चौकीदार आ धमके और एकबारगी डंडा ही भिड़ानेपर अड़ गये। उस रात आप कितने डरे हुए थे, इसका संकेत इस बातसे मिलता है कि जब अहातेके बाहरसे आपके दोस्तों द्वारा पथराव किये जानेसे चौकीदार भागे तो आप पेड़ से इतनी तेजीसे उतरे कि आपके दांये पैरमें एक गहरा खरौच आ गया जिसका निशान अब भी देखा जा सकता है। उन्हीं दिनों आदर्श

सेवा विद्यालयमें आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिताके निर्णायकोंने आपकी प्रांतभरके छात्रोंमें प्रथम स्थान दिया था जिसके पीछे उनके अपने उद्देश्य थे। उसी साल अपने कविताका शौक दिखाकर अपनेमें एक नया आकर्षण जोड़ा और बाल प्रेमी मोहन एल० गुप्तने "आज" के बाल संसदमें आपको पहली रचना छापकर आपसे नाता जोड़ना चाहा, किंतु आप उन्हें झांसा देकर हिन्दीके फिराक डा० शंभुनाथ सिंहके संपर्कमें आये और तब तक रहे जबतक मध्यकालकी मीराकी तरह प्रसिद्ध नहीं हो गये। हरिश्चंद्र कालेजसे बी० ए० और हिन्दू विश्वविद्यालय से एम० ए० करते हुए भी आप अपने सहपाठियोंमें विशिष्ट बने रहे और कम्पिटीशनोंमें लीड लेते रहे।

हे कविवर श्री कृष्ण तिवारी

अपनी तमाम आदतों और हरकतों को चालू रखते हुए हास्य-व्यंग्य और रोमानी रचनाय छोड़कर सन् ६० के आस-पाससे आप नवगीत आन्दोलनको सक्रिय रूपसे आगे बढ़ाने लगे हैं और गंभीर साहित्यिक रचनामें रत हो गये इसके पहले आप 'आज' के साहित्य विभागमें रह चुके हैं, 'सन्मार्ग' में अब भी हैं। 'प्रसाद परिषद' परमानन्द रंगकी 'विद्यार्थी परिषद', 'भारती' और और अखिल भारतीय हिन्दी लेखक सम्मेलनमें सक्रिय सहयोग देकर आप इन सबको प्रायः निष्क्रिय और निरर्थक बना चुके हैं। इधर आपने 'साहित्यायन' को भी एक फ्राड डाक्टरसे छीनकर एक महा-फ़ाड धनपशुके चरणोंमें डाल दिया है। आपने बंगालके बंकिम, शरत, रवीन्द्र; विमल मित्र, उर्दूके मंटो, किशन चन्दर, धर्मवीर भारती; अज्ञेय, निर्मल वर्मा और मोहन राकेश का साहित्य पढ़ा है। आपने ओम प्रभाकर, नईम, देवेन्द्र कुमार, शलभ श्रीराम सिंह, बालस्वरूप राही, उमाकान्त मालवीय और शंभूनाथ सिंह को भी प्रभावित किया है जिससे अब आप प्रौढ़ रचनाकार बन गये हैं।

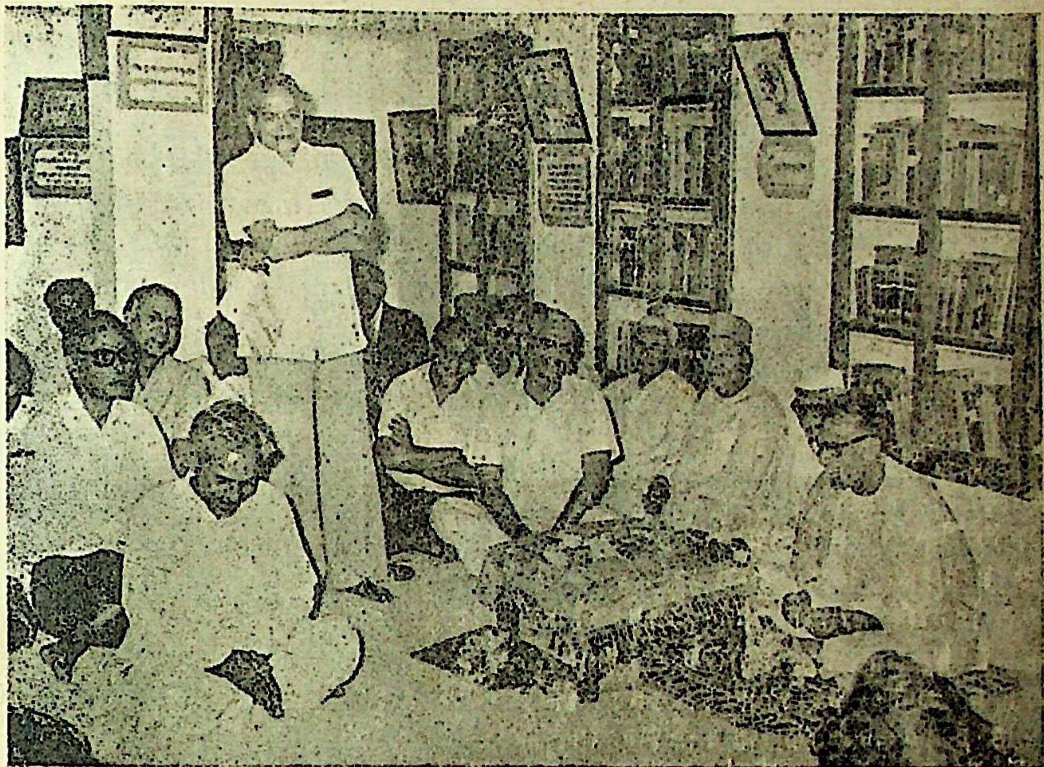
हे जमानेके पेशेवर मंच गायक,

यह मानते हुए कि मंचसे जुड़े साढ़े निन्यानबे प्रतिशत कवि भ्रष्ट और चरित्रहीन हैं, आप बराबर मंचका साथ देते हैं, इसलिए कि उससे अर्थागम होता है। यही बात राजनीतिके साथ आपके लगावमें भी लागू होती है। दससे बीस रुपये तक प्रतिदिनके व्यक्तिगत व्ययके साथ ही परिवारको भी देखनेके लिये आप तीन पेशे करते हैं—दो प्रकट और एक गुप्त! सब जानते हैं कि 'सन्मार्ग' से मिलने वाले दो सौ रुपये आप कार्यालयमें ही खरच डालते हैं, कवि सम्मेलनोंकी आमदनीसे आपका पाकेट खर्च चलता है।

हे हिन्दीके विचित्रवीर्य!

आप व्यवस्थापकको सीधे-सीधे छेड़ने वाले आक्रोशको दरबारी अदाके साथ मधुर कंठसे गाते हैं। सुना है कि आजकल आप गजलिया गये हैं। ५५ वर्षीय कवि राहगीरसे भाई का नाता रखते हुए अभी हाल ही में उनकी शादीके अवसर पर आपने कन्यापक्षको ओरसे लावा मेराने की भूमिका निभाई है। इतना बहुश्रुत, बहुमुक्त, बहुरूप और बहुधन्धी व्यक्ति प्रायः दुर्लभ होता है जो चालीसवेंसे गुजरते हुए भी षोड़शीकी तरह सदाबहार बना रहे। इसलिये फगुनाये हुए मौसमकी इस गुलाबी रातमें मस्ताये हुए ठलुआ समाजके बीच आज हम आपको विशेषरूपसे अभिनंदित करते हैं और आपको 'सदाबहार ठलुआ' की उपाधि प्राप्त करते हैं। आशा है, आप हमारी इस मानद उपाधिको सहर्ष स्वीकार करेंगे।

(वशिष्ट मुनि ओझा)



छठीं गोष्ठी [११९]

रविवार २ अप्रैल का दिन। ठलुआ क्लबके कार्यक्रममें व्यतिक्रम हुआ। ठलुआ क्लब हमेशा शनिवार को गोष्ठी करता है। बहरी अलंग, संगीत गोष्ठी या आवश्यक गोष्ठी ही रविवार को होती है। इस बार शनिवार १ अप्रैल के दिन आया। इस दिन को देखकर डाक्टर परमेश्वरीलाल गुप्त भड़के।

बोले—मुझे मालूम हैं कि आप लोग मेरी भद्रा करेंगे, पर पहली अप्रैल मुझे पसन्द नहीं।

केडियाजीने कहा—तुम ठहरे परम दुकड़हा। निमंत्रण कार्डपर यह तिथि देखकर ही लोग नहीं आयेंगे। जिस आदमी पर यह भरोसा नहीं कि कब किसे चूना लगा दे, उसके प्रति विश्वास नहीं किया जा सकता बल्कि आगे कोई दिन रख लो।

गुप्तजीने कहा—आगे जरा दिक्कत होगी। मैं लम्बे अर्सेके लिए ४ अप्रैल को वाराणसीसे बाहर जा रहा हूँ।

केडियाजीने कहा—तब इनका मुण्डन २ अप्रैलको रख दो ताकि इनकी मुद्रा ठीक रहे, मुद्रास्फिति न होने पाये।

इस निश्चयके बाद यह निश्चय किया गया कि आगामी २ अप्रैल को अभिनन्दन किया जाय। श्री विश्वनाथ प्रसादने कहा कि गुप्तजी हमारी बिरादरीके एक रत्न हैं अतएव मैं स्वागत-भाषण दूंगा। श्री दयासरन उनकी बिरादरी के रहे तो वे फोटो खीचने को तैयार हो गये। कहनेका मतलब सभी गुप्त-बनियोंमें उत्साह भर गया। उस दिन ये लोग छौंक-बघारकर आये थे यानी चुन्नटदार धोती, अद्धी-तंजेब झारे, दुपलिया टोपी, कानमें इत्रका फाहा खोंसे हुए थे। शेष लोग दरिद्र पोशाकमें नहीं थे, पर सभी बुर्राक थे।

सर्व प्रथम उस्ताद खादिम अलीने शहनाईपर तावड़तोड़ ठुमरी, कजरीका अवतरण किया। सभी लोग इस कदर इनाम देने लगे जैसे ठलुआ क्लब की गा...में नहीं, किसी बारातमें बैठे हों। इनाम पर इनाम पाते रहनेके कारण खादिम मियां उछल-उछलकर बजाते जा रहे थे।

अन्तमें खिजलाकर ठलुआ बीरने कहा — अमां पें-पें बन्द करो। रात को दिव्य निपटान नहीं होगा।

इस अवसरपर सर्वप्रथम विश्वनाथ प्रसादजीने भीषण भाषण दिया जिसमें यह ज्ञात हुआ कि उनमें हास्य की विकट प्रतिभा है। हास्य किसीकी बपौती नहीं है। कोई भी व्यक्ति ठलुआ क्लबके योग्य भाषण दे सकता है।

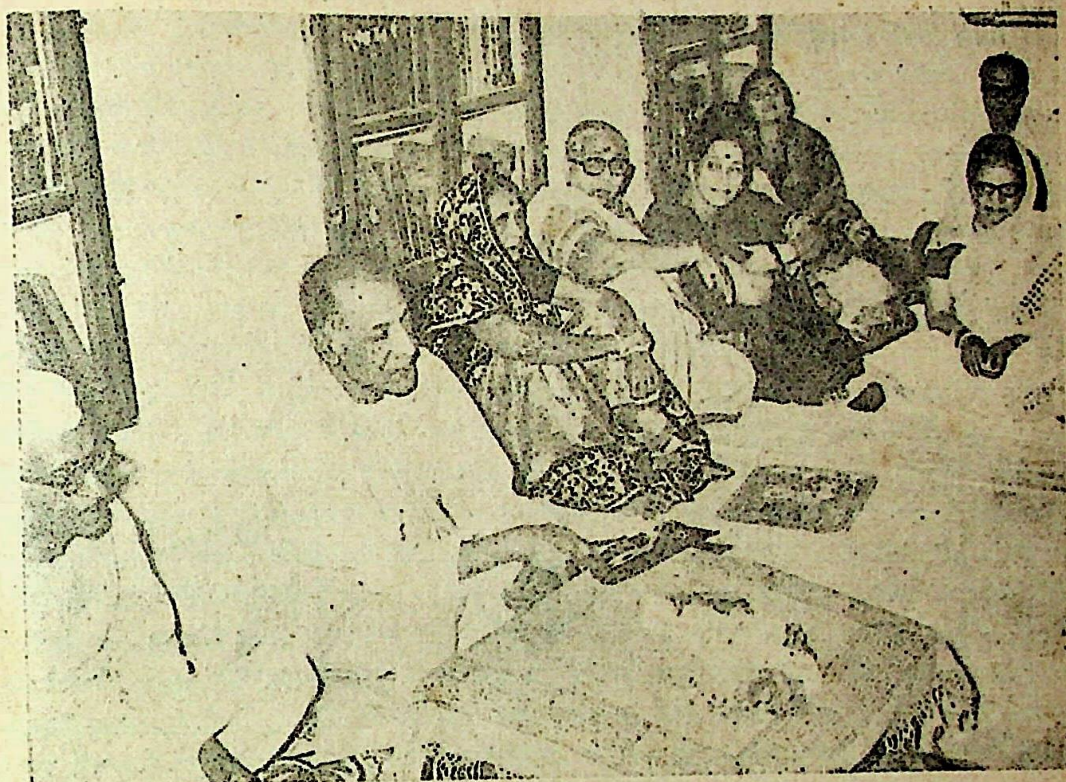
इस अवसर केडियाजीने कुछ सिक्के भेंट किये। ज्ञात रहे कि इस गोष्ठीमें महिलाएँ भी आमंत्रित थीं और अध्यक्ष पदके लिये श्रद्धेय पत्रकार शिरोमणि बाबू मुकुन्दी लाल श्रीवास्तवजी को आमंत्रित किया गया था। इस अवसरपर सर्वश्री कृष्णदत्त भट्ट, डा० मोहनलाल तिवारी आनन्द कृष्णके भाषण हुए। तभी कहानीकारके संपादक श्री कमल गुप्तने कहा मैं भी बोलूंगा।

और वे लगे पोथन्ना पढ़ने। ठलुआ बीरके पास दनादन अपशब्दोंकी पुर्जियां पहुँचने लगी। तब उन्हें ध्यान आया कि कार्यक्रम बड़ा बोर हो गया। अधिकांश लोग आँख तरेरकर ठलुआवीर की ओर देखने लगे और इशारेसे नाराजगी प्रकट करते रहे।

कहाँ गुप्तजी को मनोरंजक भाषण और संस्मरण सुनानेके लिए तैयार किया गया था और यहाँ श्रीकमल गुप्तके भाषणके आधारपर उन्हें मूर्त्तियोंकी चोरीपर भाषण देना पड़ा।

बीच-बीचमें श्री मुरारीलाल केडियाजी फुलझड़ी छोड़ते रहे।

अभिनन्दन पत्र भेंट किया श्री वशिष्ठ मुनि ओझाने। कवियोंका मन उखड़ा हुआ था, इसलिए काव्य-पाठ साधारण हुआ। अन्तमें श्री जसवन्त प्रसादने धन्यवाद दिया।



॥ अभिनन्दन पत्र ॥

ज्ञान और अनुभव के संसार में स्याही की तरह सफल शब्दार्थवादी डा० परमेश्वरी लाल गुप्त ।

शिव-शनिके इस दरबार-ए-आममें एक खास शख्सके मानिन्द आनेवाले लोगोंकी लंबी श्रृंखलामें आप एक-मात्र ऐसी कड़ी हैं जो अपने नाम के पाँच पूरे-पूरे शब्दोंमेंसे प्रत्येकको सार्थक बनाती है, भले पाँचों अर्थों की जोड़ देनेपर पूरा पद निरर्थक हो जाय। अमूर्तन और निरर्थनकी आधुनिक शैलीमें आपका चित्र बनानेपर सिर्फ एक पूँछ बनती है जिसके सिरेपर एक चेहरा दिखाई देता है, इसलिए हम परंपरागत स्थूलतावादी शैलीमें आपका स्वागत करते हैं ताकि आपके विस्तारका प्रत्येक आयाम दिखाई दे। पढ़ाई-लिखाईकी डिग्रीको उजागर करनेवाले शब्द 'डाक्टर' को आप इसलिए सार्थक करते हैं कि आप मुद्रा विशेषज्ञ हैं। बकौल आपके सगे चचेरे भाई बैजनाथ प्रसाद अग्रवाल आज आप जो कुछ हैं, उसकी कल्पना कभी परिवार का कोई व्यक्ति अथवा आपका सगा-सम्बन्धी नहीं कर सकता था। इस तरहके असंभवके संभव होनेमें व्यक्तिके पुरुषार्थ और संघर्षसे कहीं अधिक ईश्वरका हाथ रहा करता है, इसलिए आप 'ईश्वरीय' हैं, वह भी ऐसे वैसे नहीं, 'परम' हैं—यह आपकी उपलब्धियों से स्पष्ट हो जाता है। परम्परामें 'लाल' शब्दके दो अर्थ लिए जाते रहे हैं—एक तो मूल्यवान जवाहरातका अर्थ और दूसरा बालक या पुत्रके अर्थमें जैसे यशोदाके लाल, दशरथके लाल, छोटे लाल, श्यामलाल आदि। पहले अर्थमें आप विद्याके क्षेत्रके एक लाल तो हैं ही, अपने स्वभाव और व्यवहारमें एक बालसुलभ अल्हड़पन बनाये रखकर आप दूसरे अर्थको भी सनाथ करते हैं। इतना सब होते हुए आप प्रकट बहुत कम और गुप्त बहुत ज्यादा हैं—बूँदमें छिपे समुद्र के समान।

आर्ष तपस्वी,

आधुनिक दृष्टिसे देखनेसे यह बात चाहे जितनी विचित्र लगे, उत्तर प्रदेशका आजमगढ़ जिला आज भी भारतीय समाजकी इस परंपराको निभा रहा है कि महत्वपूर्ण विषयोंके विशेषज्ञ जन तपस्वी बनकर ज्ञानके वर्जित प्रदेशोंकी खाक छानते हैं और परम अज्ञ जन मुख्य मन्त्री, उपमन्त्री तथा अफसर बनकर मजा लेते हैं। इसी आजमगढ़में आजसे कोई सवा चौंसठ वर्ष पहले २४ दिसम्बर १९१४ ई० अर्थात् कार्तिक सुदी ११ सं० १९७१ को यश और धनसे सम्पन्न चालीस वर्षीय विधिवेत्ता श्री गोपालदास की चौथी धर्मपत्नीकी सन्तानके रूपमें आपने धरती को धन्य किया। बुढ़ापेका बेटवा होनेके नाते न केवल आपका लाड़-दुलार अधिक हुआ, बल्कि कल्पनाकी ऊँची उड़ान भरते हुए पिताजी सबसे बताने लगे कि मेरा बेटा बैरिस्टर बनेगा और इसे सच मानकर लोग बचपनमें ही बैरिस्टर कहने लगे। संस्कृतकी सूक्ति है—मनसा चिंतितं कार्यं वचसान प्रकाशयेत, अन्य लक्षित कार्यस्य यतः सिद्धिर्न जायते।' पिताजी ने शुरूसे ही आपको इंगलैण्ड से शिक्षा दिलानेके लिए आपको पांच वर्षकी उम्रमें ही लंदन भेजनेकी पूरी तैयारी कर दी। लेकिन अचानक वे बीमार पड़े और एक लम्बे अर्से तक खाटपर पड़े रहे, फलतः उनकी योजनाकी सिद्धिको नियति ने धपलेमें डाल दिया। उस बीमारीके दौरान भी वकील गोपालदास अग्रवाल आपको अंग्रेज बच्चोंके साथ पढ़ानेकी इच्छासे देहरादूनके कैंब्रिज प्रिपेयरेटरी स्कूल में, फिर कानपुरके एक पब्लिक स्कूलमें आपको प्रविष्ट करानेकी योजना बनाते रहे। बाधाओंसे कई योजनाओंके टूटनेके बाद आजमगढ़में ही जिला-बोर्डके एक प्राइमरी स्कूलमें आपको भर्ती किया गया। आगे चलकर वहीं वेस्ली हाई स्कूलके दर्जा चारमें आपका नाम लिखा गया। कहते हैं, स्कूलमें आपका कैरियर इतना बुलंद था कि लोगोंके बीच आपकी चर्चा हास्यरसमें ही होती थी, मसलन—बड़े बापके बेटे हैं, पैदा हुए तभीसे लेटे हैं, पट्ठा खींच-खींच कर हाईस्कूल तक जा सकता है, कुछ भी हो नाम तो 'बैरिस्टर' रहेगा। दो वर्ष बाद ही लोगोंकी यह धारणा तब फलित हुई जब छठीं कक्षाकी परीक्षामें ही आप लटक गए। इसी ढर्रे कैरियरको लेकर अबकी जो आगे बढ़े तो दो वर्ष बाद दर्जा आठकी परीक्षा के कुछ दिन पहले जब आपको सोलहवां सालका कुछ ऐसा फटका लगा कि अचानक आपने एक अजूबा कर दिखाया। काशीके दैनिक 'आज' में आपने एक खबर पढ़ी कि जवाहरलाल नेहरू गिरफ्तार कर लिए गए और खबर पढ़ते ही आप नेहरूके अवतार हो गए। आप सीधे कक्षा में गए, अपनी कापी फाड़ी और सारी कक्षाओंमें सूचना भिजवा दी कि नेहरूकी गिरफ्तारीके विरोधमें सभी छात्रोंको हड़ताल करनी चाहिए। फिर क्या था, चौथी घंटीके बाद रिसेसका घंटा लगते ही हड़ताल शुरू हो गयी। बादमें हेडमास्टरकी धमकीसे डरकर अधिकांश छात्र कक्षाओंमें लौट गए, फिर भी करीब तीन दर्जन छात्र आपके नेतृत्वमें स्कूलसे बाहर चले गए। आपके भीतर बगावत की चिनगारी देखने वाले हेडमास्टरने इन सभी छात्रोंकी हाजिरी रद्द करनेवाली लाल स्याहीका निशान ही नहीं बनवाया बल्कि छात्रपर चार आने अर्थदण्डका आदेश भी जारी कर दिया। उन दिनों एक गैरहाजिरीके लिए दो पैसेके दंडकी व्यवस्था थी, 'बैरिस्टर' यह देनेके लिए तैयार था, लेकिन अठगुना जुर्माना तो सरासर दमनात्मक कदम था। अतः आपने यह जुर्माना देनेसे साफ इन्कार कर दिया और इसी अकड़बाजीमें आप एक दिन स्कूलसे निकाल दिये गये। बड़े-बूढ़े बताते हैं कि इस निष्कासनके विरोधमें पहली बार 'आजमगढ़ बन्द' का आह्वान पूर्णतः सफल हुआ था और आप स्वतंत्रता संग्रामसे सीधे जुड़ गए थे।

हे स्वयंभू,

इस संग्रामके सक्रिय स्वयं सेवक होते हुए आपने स्वतंत्र अध्ययन तथा लेखनका एक नया सिलसिला शुरू किया। उन दिनों ऐसे कार्य आमतौरपर गदहपचीसी अथवा आवारागर्दीके काम समझे जाते थे। एक सुनहरा स्वप्न टूट जानेके बाद वृद्ध पिताने १९३२ में भारी रकम लगाकर आपके लिए एक छापाखाना खोला जिसका नाम था

प्रभात प्रिंटिंग काटेज और जिसके पीछे उद्देश्य था कि आप इस व्यवसाय के जरिए एक संपन्न जीवन जिएं। आपने इसी प्रेससे 'संदेश' नामक एक साप्ताहिक भी शुरू किया जिसके लिए आजमगढ़ एक छोटा और अज्ञात स्थान साबित हुआ। पिताके निधनके बाद आपकी सामाजिक, राजनीतिक और साहित्यिक सक्रियताको देखते हुए काशीके 'आज' अखबारमें कार्य करनेके लिए आपको बुलाया गया और १९४३ में आप प्रेस बेचकर यहां 'आज' के संपादकीय विभागमें काम करने लगे। इस बीच आप दो बार, १९३२ में धारा १४४ तोड़ने और १९४१ में व्यक्तिगत सत्याग्रहके चलते जेल भी हो आए थे। 'आज' में कुशलताके साथ कार्य करनेके बावजूद आपको डिग्रीके अभावका तीखा अनुभव हुआ और एक दृढ़ संकल्पके साथ आपने कोई चार वर्ष बाद फिर पढ़ाई शुरू कर दी हालांकि जब आप पाँच बच्चोंके बाप बन चुके थे। कहते हैं कि आप आचार्य सीताराम चतुर्वेदीके घरमें सपरिवार थे और दफ्तरके समयको छोड़कर बाकी पूरा समय अध्ययनमें लगाते थे। परिवारसे संबंधित सारा कार्य आपकी श्रीमतीजी ही संभालती थीं। इसी क्रमसे ३३ वर्षकी आयु होनेपर १९४७ में आपने हाई स्कूल, १९४८ में इंटरमीडिएट और १९५० में बी० ए० की परीक्षाएँ उत्तीर्ण करनेके बाद भारत कला भवन काशीमें सहायक क्यूरेटर हो गए। आगे चलकर १९५० में आप प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति विषयमें एम० ए० की उपाधि ली और सन् ५३ में नागरी प्रचारिणी सभाका हीरालाल स्वर्णपदक तथा सन् ५४ में मुद्रातत्व परिषदका सर्वोच्च पदक 'चक्रविक्रम' प्राप्त करनेके बाद उसी साल प्रिंस आफ वेल्स म्यूजियम बम्बईमें पुरातत्वविद् नियुक्त हुए। चार वर्ष बाद सन् ५९ में मुद्रापरिषदके गोहाटी अधिवेशनकी आपने अध्यक्षताकी और छठे वर्ष १९६० में आहत मुद्रापर शोध प्रबंध प्रस्तुत कर पी० एच० डी० की उपाधि प्राप्त की। १९६२ में आपको मुद्रा परिषदका नेल्सन पदक मिला और अगले वर्ष आप पटना संग्रहालयके अध्यक्ष बना दिये गए। फिर तो आपकी विद्वता और कार्यको इतनी अहमियत मिली कि भारतीय प्राच्य विद्या, भारतीय इतिहास और मुद्रातत्व संबंधित कोई भी अधिवेशन या संगोष्ठी होती, आपकी अध्यक्षताके बिना अधूरी मानी जाती थी। एक मुद्रा विशेषज्ञके रूपमें आप क्रमशः ब्रिटिश संग्रहालय, केनबरा विश्वविद्यालय, आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, सन् ७६ के इस्लामिक फेस्टिवलके अवसर पर ओरिएंटल न्युमिस्मेटिक सोसाइटी फिर रायल न्युमिस्मेटिक सोसाइटीके निमंत्रणों पर १५ वर्षोंके भीतर पाँच बार विदेश यात्रा कर चुके हैं और एक-एक यात्राके दौरान कई कई देशोंमें घूम आए हैं।

मनीषी अध्यवसायी

पुरातत्व, मुद्रातत्व और इतिहासके एक दर्जन अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ, पाँच संयुक्त प्रयासीय ग्रंथ और इन विषयोंपर लगभग डेढ़ सौ शोध निबंध देनेके अलावा आपने राजनीति, समाजशास्त्र, विज्ञानकी छह उपयोगी पुस्तकें भी लिखी हैं और साहित्यमें तो 'कर्णिका' जैसे कहानी संग्रह, फंदीकी कल्पना जैसे गद्यगीत संग्रह, 'बिसरामके बिरहे' जैसे लोक साहित्य 'प्रसादके नाटक' जैसे समीक्षा ग्रंथ लिखकर और 'चंदायन' तथा 'मिरगावती' जैसे दुर्लभ सूफी काव्योंका शोध और संपादन कर आपने एक उच्च और ध्यानाकर्षक स्थान बना लिया है।

इस तरह आपके व्यक्तित्वके कई आयाम हैं और एक-एक आयामके कई कई उपायाम हैं जिनमें प्रत्येकको विषय बनाकर एक पुस्तक लिखी जा सकती है। यह कार्य यहाँ संभव नहीं है, अतः हम आपके व्यक्तित्वके उस आयामको लेते हैं जिसे राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय दोनों स्तरोंपर समान रूपसे प्रसिद्धि मिली है। वह व्यक्तित्व है मुद्रातत्ववेत्ताका और इसे ही प्रामाणिक मानकर आज इस विद्वगोष्ठीमें हम आपको 'मुद्रातत्व-ठलुआ' की उपाधिसे अलंकृत कर अपनी बिरादरीमें शामिल कर रहे हैं। अस्तु।

(वशिष्ठ मुनि ओझा)

●

प्रभात प्रिंटिंग काटेज और जिसके पीछे उद्देश्य था कि आप इस व्यवसाय के जरिए एक संपन्न जीवन जिएं। आपने इसी प्रेससे 'संदेश' नामक एक साप्ताहिक भी शुरू किया जिसके लिए आजमगढ़ एक छोटा और अज्ञात स्थान साबित हुआ। पिताके निधनके बाद आपकी सामाजिक, राजनीतिक और साहित्यिक सक्रियताको देखते हुए काशीके 'आज' अखबारमें कार्य करनेके लिए आपको बुलाया गया और १९४३ में आप प्रेस बेचकर यहां 'आज' के संपादकीय विभागमें काम करने लगे। इस बीच आप दो बार, १९३२ में धारा १४४ तोड़ने और १९४१ में व्यक्तिगत सत्याग्रहके चलते जेल भी हो आए थे। 'आज' में कुशलताके साथ कार्य करनेके बावजूद आपको डिग्रीके अभावका तीखा अनुभव हुआ और एक दृढ़ संकल्पके साथ आपने कोई चार वर्ष बाद फिर पढ़ाई शुरू कर दी हालांकि जब आप पाँच बच्चोंके बाप बन चुके थे। कहते हैं कि आप आचार्य सीताराम चतुर्वेदीके घरमें सपरिवार थे और दफ्तरके समयको छोड़कर बाकी पूरा समय अध्ययनमें लगाते थे। परिवारसे संबंधित सारा कार्य आपकी श्रीमतीजी ही संभालती थीं। इसी क्रमसे ३३ वर्षकी आयु होनेपर १९४७ में आपने हाई स्कूल, १९४८ में इंटरमीडिएट और १९५० में बी० ए० की परीक्षाएँ उत्तीर्ण करनेके बाद भारत कला भवन काशीमें सहायक क्यूरेटर हो गए। आगे चलकर १९५० में आप प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति विषयमें एम० ए० की उपाधि ली और सन् ५३ में नागरी प्रचारिणी सभाका हीरालाल स्वर्णपदक तथा सन् ५४ में मुद्रातत्व परिषदका सर्वोच्च पदक 'चक्रविक्रम' प्राप्त करनेके बाद उसी साल प्रिंस आफ वेल्स म्यूजियम बम्बईमें पुरातत्वविद नियुक्त हुए। चार वर्ष बाद सन् ५९ में मुद्रापरिषदके गोहाटी अधिवेशनकी आपने अध्यक्षताकी और छठे वर्ष १९६० में आहत मुद्रापर शोध प्रबंध प्रस्तुत कर पी० एच० डी० की उपाधि प्राप्त की। १९६२ में आपको मुद्रा परिषदका नेल्सन पदक मिला और अगले वर्ष आप पटना संग्रहालयके अध्यक्ष बना दिये गए। फिर तो आपकी विद्वता और कार्यको इतनी अहमियत मिली कि भारतीय प्राच्य विद्या, भारतीय इतिहास और मुद्रातत्व संबंधित कोई भी अधिवेशन या संगोष्ठी होती, आपकी अध्यक्षताके बिना अधूरी मानी जाती थी। एक मुद्रा विशेषज्ञके रूपमें आप क्रमशः ब्रिटिश संग्रहालय, केनबरा विश्वविद्यालय, आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, सन् ७६ के इस्लामिक फेस्टिवलके अवसर पर ओरिएंटल न्युमिस्मेटिक सोसाइटी फिर रायल न्युमिस्मेटिक सोसाइटीके निमंत्रणों पर १५ वर्षोंके भीतर पाँच बार विदेश यात्रा कर चुके हैं और एक-एक यात्राके दौरान कई कई देशोंमें घूम आए हैं।

मनीषी अध्यवसायी

पुरातत्व, मुद्रातत्व और इतिहासके एक दर्जन अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ, पाँच संयुक्त प्रयासीय ग्रंथ और इन विषयोंपर लगभग डेढ़ सौ शोध निबंध देनेके अलावा आपने राजनीति, समाजशास्त्र, विज्ञानकी छह उपयोगी पुस्तकें भी लिखी हैं और साहित्यमें तो 'कर्णिका' जैसे कहानी संग्रह, फंदीकी कल्पना जैसे गद्यगीत संग्रह, 'बिसरामके बिरहे' जैसे लोक साहित्य 'प्रसादके नाटक' जैसे समीक्षा ग्रंथ लिखकर और 'चंदायन' तथा 'मिरगावती' जैसे दुर्लभ सूफी काव्योंका शोध और संपादन कर आपने एक उच्च और ध्यानाकर्षक स्थान बना लिया है।

इस तरह आपके व्यक्तित्वके कई आयाम हैं और एक-एक आयामके कई कई उपायाम हैं जिनमें प्रत्येकको विषय बनाकर एक पुस्तक लिखी जा सकती है। यह कार्य यहाँ संभव नहीं है, अतः हम आपके व्यक्तित्वके उस आयामको लेते हैं जिसे राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय दोनों स्तरोंपर समान रूपसे प्रसिद्धि मिली है। वह व्यक्तित्व है मुद्रातत्ववेत्ताका और इसे ही प्रामाणिक मानकर आज इस विद्वगोष्ठीमें हम आपको 'मुद्रातत्व-ठलुआ' की उपाधिसे अलंकृत कर अपनी बिरादरीमें शामिल कर रहे हैं। अस्तु।

(वशिष्ठ मुनि ओझा)

●

सातवीं गोष्ठी [१२०]

पिछली गोष्ठीकी दुर्घटनासे अधिकांश कवि पीड़ित रहे और रसभंग हो जानेके कारण लोग नाराज रहे। ठलुआबीरको कहा गया कि आप पूरे निकम्मे और गधे हैं। ठलुआ क्लबमें आनन्दके लिए हम आते हैं या थीसिस सुनने ? वेढब जी के जन्म दिवसपर दो घण्टा श्री शंकर शुक्ल बोलते रहे, पर हम बोर नहीं हुए। लेकिन इस कार्यक्रममें तो सब कुछ जल गया। आप तुरत एक गोष्ठी करें और वह भी काव्य-गोष्ठीका, अभिनन्दनका पचड़ा न रहे।

अब ठलुआबीर क्या करते ? चारों ओरसे डाँट सुनते रहनेके कारण उन्होंने एक सरकुलर जारी किया—

मान्यवर,

आगामी रविवार २३ अप्रैल ग्रीष्म पूर्णिमाके दिन एक गोष्ठी होगी। अगर आपको विवाह, तेरही या सिनेमामें न जाना हो तो आ जाइयेगा। विशेष आग्रह नहीं है। केवल बाहरी-भीतरी कवियोंके काव्यका श्राद्ध होगा। भांग छानना जरूरी होगा।

समय—सायंकाल ७ बजे गोष्ठी होगी, ९ बजे समाप्त। २३-४-७८ रविवार।

स्थान—महमूरगंज स्थित बिरला उपवनके पश्चिम वाले भवन (अन्नपूर्णा) में गोष्ठी होगी। भाँग-जलपान-निपटानका दिव्य प्रबंध है।

निवेदक

गुलाबदास वर्मा　　　　　　　　　　हरिराम द्विवेदी

ठलुआ क्लबकी यह विशेषता है कि वह कार्यक्रम निर्धारित समयपर प्रारंभ कर देता है। ७ बजने पर जब गणपति नहीं आये तो श्री श्रीशचन्द्र पाण्डेयको उस गद्दी पर बैठाकर कार्यक्रम चालू कर दिया गया। संचालक बन बैठे श्री देवी प्रसाद मिश्र।

इस अवसर पर सर्व श्री डा० श्याम तिवारी, श्रीमती कुसुम गिरि, श्रीमती संतोष श्रीवास्तव, कुमारी नीरजा, उद्धव प्रसाद द्विवेदी, अभयनाथ तिवारी, विनय श्रीवास्तव, हरिराम द्विवेदी, मधुर, कमलगुप्त तथा कुछ अन्य लोगोंने काव्य एवं गीत सुनाये।

भीड़ हचककर थी। जलपान में घाटा नहीं हुआ। पिछली गोष्ठी जो कि बदजायका हो गयी थी, इस गोष्ठीसे उसकी क्षति पूर्त्ति हो गयी। ऐन जलपानके समय गणपति आये तो किसीने कहा बड़ा कागा है। हमेशा लेट आता है और लक्ष्मीशंकर व्यास की तरह जलपानके समय हाजिर हो जाता है।

आखिर मुखर्जी का मामा है न ?

अन्तमें जसवन्त प्रसाद मेहताने आजके आयोजनके बारे चर्चा करते हुए धन्यवाद दिया।

●



आठवीं गोष्ठी (१२१)

इस बार पुनः लोग बरसाती गोष्ठीके लिए ठलुआवीर को कोंचने लगे, पर अपनी अस्वस्थताके कारण वे सन्नाटा मारे रहे। कुछ ऐसे वाहरी तेली-तमोलो जो रुपयेमें तीन अठन्नीं भुनाते हैं, बहुत सिर पटका, पर वे राजी नहीं हुए वर्षा गोष्ठीके स्थानपर उन्होंने एक अन्य गोष्ठीका आयोजन करनेका निश्चय किया।

कल्पनाकार—पं० शिवनाथ शास्त्री

संस्थापक—बाबू गुलाब राय

महोदय,

आगामी शनिवार को काशीके अनोखे रत्न, विद्वान, पत्रकार पण्डित उदयकृष्ण नागरका चूड़ामणि-संस्कार समारोह होगा। आपसे साग्रह निवेदन है कि निश्चित समयपर पधारनेकी कृपा करें!

स्थान—अभिमन्यु पुस्तकालय (गुरुबागके सामने) लक्सा रोड!

समय—दिनांक-शनिवार, १२ अगस्त, १९७८। सायंकाल ७ बजे।

कृपया समयका ख्याल रखें। पानी बरसे या न बरसे, पर कार्यक्रम पण्ड नहीं होगा।

निवेदक—नवग्रह

हरिराम द्विवेदी, (शनि)	अभयनाथ तिवारी, (राहु)	बी० एस० नायक, (केतु)	डा० एल० एस० शुक्ल (रवि)	
मातादीन अग्रवाल (सोम)	केवल कृष्ण सेठ (मंगल)	प्रदीप कुमार (बुध)	घनश्याम गुप्त (गुरु)	बृजपालदास अग्रवाल (शुक्र)

इस बार भी गणपति गायब रहे। फलतः कालभैरवके गोलसे आये श्री लक्ष्मी शंकर व्यास को जान बूझकर अध्यक्ष पद पर बैठाया गया। मंगलाचरण—वेदपाठ जमकर हुआ। कारण नागरजीके सभी बिरादरीके लोग उपस्थित थे। पं० उदयकृष्ण नागरजी तथा अन्य अनेक सदस्योंने पोस्टल विभाग को गालियां देते हुए कहा कि इनके कारण हमें निमंत्रण कार्ड नहीं मिला। वह तो कहिये पं० केशवलाल भट्ट से जानकारी प्राप्त हुई वर्ना हम न आते। चारों ओरसे शिकायत पानेके बाद ठलुआबीरने कहा—खेत खाये गदहा, मारा जाय जुलाहा। कमबख्तोंने कार्ड नहीं बांटा। हानि संस्था की हुई और गालियां घेलुएमें मुझे मिल रही है। यही क्या कम है कि सरकार चल रही है। कमसे कम इतने लोगों को कार्ड मिला और आ गये।

एकने कहा—शिकायत कीजिये।

ठलुआबीरने बताया कि एक-दो नहीं, कई रजिस्ट्रियां गायब हो चुकी हैं। कहां तक शिकायत करूं। यहां कुएंमें भाँग पड़ी है। संचार मंत्री तक निकम्मे हैं।

अभिनन्दन पत्र भेंट करनेके बाद ठलुआबीरने कहा—आज हमने जानबूझकर व्यासजी को अध्यक्ष बनाया है। वह इसलिए कि नागरजी का व्यासजीसे घनिष्ठ सम्बन्ध है। यह दृश्य मैं कलकत्ता स्थित हाटकेश्वर भवनमें देख चुका हूं। बन्द कमरेमें ये दोनों व्यक्ति कुछ यौगिक क्रियाएं करते रहे। अब कभी मैं उस भवनमें नहीं जाऊंगा।

आगे कुछ ऐसी बातें उन्होंने सुनाई जिसे लिखना उचित नहीं है। यह रहस्य खुलते ही कुछ बट्ठकबाज सरककर आगे आ गये और कहा—वाह राजा, तोहरेमें बड़ा-बड़ा गुन हव। कभी-कभी हमरे बखरियामें चलल आवल करऽ। लगावे कऽ मक्खन आउर खायेके मलाई देब।

उदयकृष्ण नागरजीने कहा—व्यासजी, आप चिंतित मत होइये। ये लोग जल रहे हैं। ईर्ष्या कर रहे हैं। आप पर तो मेरा एकमात्र कापी राइट अधिकार है। इन लोगों को कहने दीजिये। आज बर्दाश्त कर लें।

व्यासजी की आकृति काश्मीरी सेबकी तरह लाल होती जा रही थी—बिना बोरलिन लगाये चमक रहे थे। इन सब कार्यवाहियोंके बाद काव्यपाठ प्रारंभ हुआ। सर्वश्री विनय श्रीवास्तव, मधुर, वशिष्ठ मुनि ओझा, उद्धव प्रसाद द्विवेदी, हरिराम द्विवेदीने अपनी रचनाएं प्रस्तुत की।

पं० उदयकृष्ण नागरने कहा—आजकी उपस्थिति कम है। मैंने पन्तजी, महादेवी वर्मा, राजेश्वर शास्त्री का अभिनन्दन ठलुआ क्लबमें देखा। कलकत्तामें विनायक राव पटवर्धन और सीताराम सेकसरियाजी का देखा हैं। उसकी तुलनामें यह गोष्ठी सामान्य रही, पर इस गोष्ठीमें जो बनारसी पुट आ गया, वैसी अन्य गोष्ठियोंमें नहीं देखनेमें आयी है। मैं ठलुआ क्लबका सदस्य प्रारंभसे हूं। यहांतक कि चन्दा देनेमें भी ठलुआ हूं और उपस्थित होनेमें मैंने रिकार्ड तोड़ दिया है।

आप लोग बनारसी जिन्दगीको कायम रखे हैं, यह कम नहीं है। आजकल हर चौराहेपर जिस ढंगसे छिछोरापन होने लगा है, उसे देखकर मन घृणासे भर जाता है। मुखर्जी महाशय जबतक हैं तबतक ठलुआ क्लब है। मैंने अनुभव किया कि कोई भी संस्था एक व्यक्ति ही चलाता है। इस दृष्टिसे ठलुआ क्लबका कार्य सराहनीय है।

श्री लक्ष्मीशंकर व्यासने धन्यवाद देते हुए पण्डित उदयकृष्ण नागरके व्यक्तित्वपर प्रकाश डाला।

●

॥ अभिनन्दन पत्र ॥

हे नागरजी महाराज,

अपने नामके पीछे कृष्ण शब्द लगानेपर भी आप न तनके कृष्ण हैं और न मनके। आपका सौन्दर्य महाक भास द्वारा विरचित स्वप्न वासवदत्ता नाटकके पात्र उदयनकी तरह है। परम्परासे वर्षाकालमें केवल कालिदासको स्मरण किया जाता है, खासकर रसज्ञ विद्वान यही सत्कर्म करते हैं। बिजली कम्पनी अगर अपने कतईपनके कार बिजली गुलकर दे तो आपकी उपस्थितिसे हमें मोमबत्ती नहीं जलानी पड़ेगी। आपके अंग–प्रत्यंगसे गामा किरणों विस्फोट होने लगेगा।

बनारस अनादिकालसे संसारके विभिन्न क्षेत्रोंमें बसे उन लोगोंको बराबर आकर्षित करता रहा है, जो आनन्द और संतोषके महत्वको समझते हैं। बाबा भोलेनाथ ने जिस किसी में अक्खड़ता देखी, उसे अपना लिया। आपके पूर्वज बनारसमें उन दिनों आये थे जिन दिनों भारतमें गुलामवंशका प्रथम शासक कुतुबउद्दीन ऐबक दिल्लीमें तख्तनशी था। स्वनामधन्य विद्वान पण्डित सांवलजी नागरके मतानुसार बनारसमें गुजरातियोंका आगमन ११ वीं शताब्दी आसपास हुआ था। लगता है कि आपका परिवार भी १२ वीं शताब्दीमें आया था।

आपके वंशमें संस्कृतके पठन–पाठनकी पद्धति थी। वेदपाठ करना आम बात रही। छपाई कला आरम्भ होने पूर्व ही अनेक अमूल्य ग्रन्थोंका निर्माण आपके पूर्वजोंने किया था।

हे कृष्णजी,

आजसे ६१ वर्ष पूर्व १ जुलाई सन् १९१७ ई० के दिन पण्डित गोपाल कृष्ण नागरके यहां आपका उदय हुआ था, इसीलिए आपके पूज्य पिताने आपका नाम उदयके साथ कृष्ण जोड़कर उदयकृष्ण बना दिया। आजकल आप ६१ पारकर ६२ में चल रहे हैं। यह परम सौभाग्यकी बात है कि ६१–६२ के मध्य आपको विराजमान देखकर हम ठगुए गदगदायमान हैं।

परिवारमें संस्कृत साहित्यके पठन-पाठनकी परम्परा रहनेके कारण आपकी प्रारम्भिक शिक्षा धातु लिंगवाली भाषासे प्रारम्भ हुई। और वह भी सांगवेद विद्यालयमें। लेकिन आपको वैयाकरण या न्यायशास्त्री बनना तो था नहीं, सो वहांसे छटककर सनातन धर्म हाई स्कूलमें चले गये। यहां सातवीं क्लास पास करते ही हिन्दू स्कूल आये और यहांसे जो उछले तो सीधे मालवीयजीके बाड़ेमें जा गिरे। वहां आप प्राचीन इतिहासके गड़े मुर्दे उखाड़ते रहे। यह आजादी मिलनेके ७ साल पूर्व यानी १९४० की बात है जब आप अंट-शंट हिस्ट्रीमें एम० ए० की उपाधि लेकर छुट्टा साड़की तरह घूमते रहे। न कहीं टीचर हुए और न कहीं रंभा–कुदाल लेकर गड़े मुर्दे उखाड़ने गये।

न जाने क्या सूझा कि केशोराम काटन मिल चले गये। अब आप यह नहीं बताते कि वहां क्या करते रहे। रूई धूनते रहे या पोवगजा लेकर कपड़ा नापते रहे।

जमाना लड़ाईका था। पांच साल वहां आप गुटर गूं करते रहे। वहीं आपमें सन्मति उदय हुआ तो एक दिन स्वामी करपात्रीजीके अनुरोधपर सन्मार्गपर चलने लगे। सन्मार्गके संपादनसे हाकर तक आप ही रहे। आज भी सन्मार्गके संपादक हाकरी करते नजर आते हैं।

जिस प्रकार बोधि वृक्षके नीचे कुछको ज्ञान प्राप्त हुआ था, ठीक उसी प्रकार गोलघरमें बसनेके कारण आपको दिव्य ज्ञानकी प्राप्ति हुई। यह सन् १९५२ की बात है। दिव्य ज्ञान प्राप्त होते ही आप सन्मार्गसे हट गये, क्योंकि चन्द दिनोंमें यह ज्ञात हो गया कि यह पेशा सबसे गन्दा है और इसमें बुद्धि कुंठित हो जाती है। जिस प्रकार शरीफ आदमी राजनीतिमें नहीं जाता, ठीक उसी प्रकार प्रतिभावान व्यक्ति पत्रकार नहीं बनता। इसमें सभी पटराकर जाते हैं।

अपनी ज्ञान पिपासाको शान्त करनेके लिए आप अपने उन गुरुओंके सान्निध्यमें चले आये जहां बचपनके सुनहरे दिन व्यतीतकर चुके थे। आपको हमेशासे विद्वानोंकी संगतमें बैठना पसन्द था। आपको इस बातका गर्व है कि भारतके प्रकाण्ड विद्वानोंके पाद पद्मके निकट बैठकर आप दर्शन, शास्त्र, पुराण, वेदोंका भाष्य सुनते रहे। आपमें जो कुछ विद्वता, सज्जनता, शीलता आदि गुण है, यह सब उन विद्वानोंका प्रसाद है।

हे ज्ञान–गुण सागर,

आप कलकत्ता गये तो वहां बंगला सीखा। गुजराती होनेके कारण गुजराती जानते ही हैं। मालवीयजीके बाड़ेमें अंग्रेजी सीख चुके। सांगवेद विद्यालयमें मराठी भी सीख लिया। इस प्रकार त्रिभाषा नहीं, चारों भाषा पचा चुके हैं। इतना होनेपर भी आपने अबतक "वेदोंका अपौरुषेयत्व" नामक पुस्तकका अनुवाद मात्र किया है। अगर आप चाहते तो बहुत कुछकर सकते थे, पर व्यास-चक्करमें कुछ नहीं कर पाते।

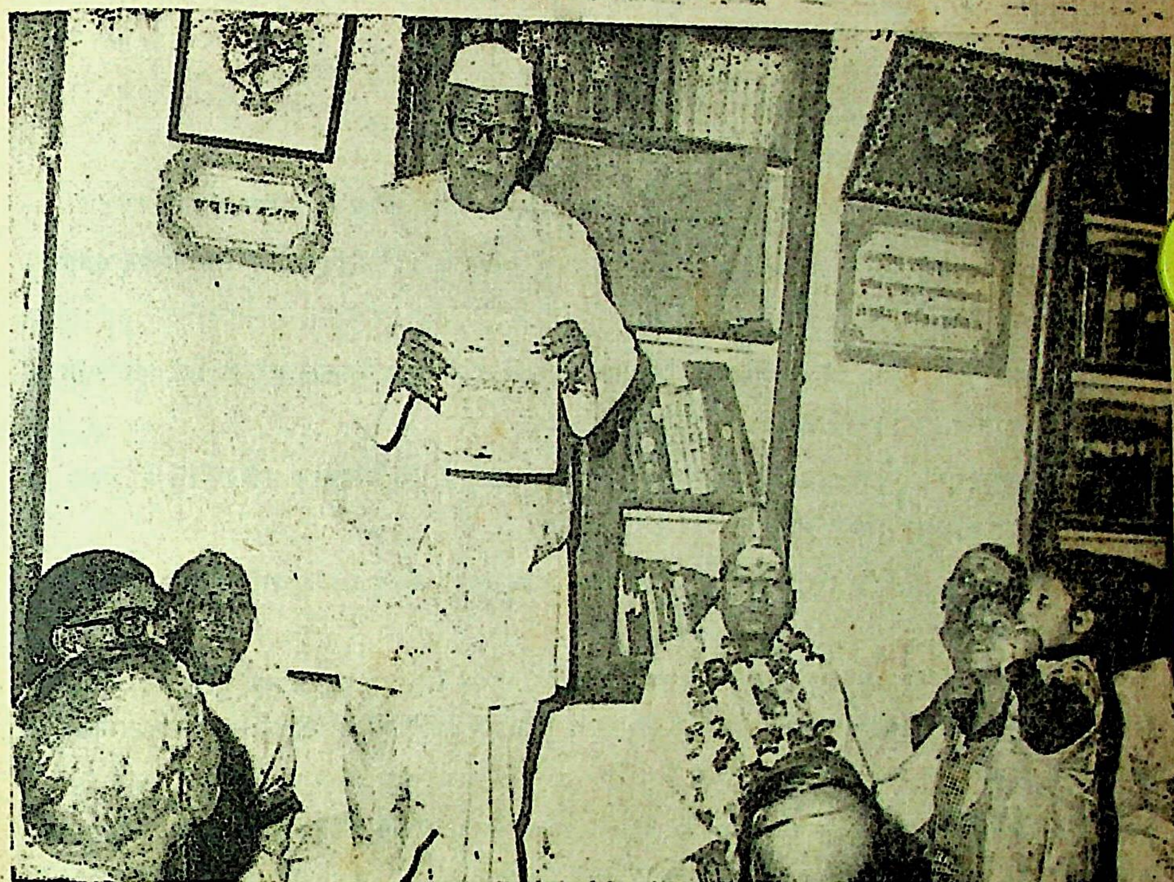
इसमें सन्देह नहीं कि आप खांटी बनारसी हैं। कहनेको हर अदना अपनेको बनारसी कहता है, पर उन नियमोंका पालन नहीं करता जिसके कारण बनारसकी प्रसिद्धि है। बनारसी जीवन जीनेकी कला गुजरातियों, मराठियों और खत्रियोंमें ही सीमित हो गया है। बहरी अलंगका आनन्द, देवी-पूजा, विद्वताकी साधना केवल उन्हींमें सिमट कर रह गया है। यही लोग बनारसके सांस्कृतिक धरोहर हैं। "नागर नैया काले पनिया जाला हरि" आज भी लोग बड़े गर्वसे गाते हैं जिसे रुद्र काशिकेयने अमर बना दिया है।

आपकी भुरटी मूछें, तनपर सफेद बुर्राक कुर्ता, कमरमें धोती, कंधेपर गमछा, गलेमें रुद्राक्ष, भालपर त्रिपुण्ड आदि इस बातके गवाह हैं कि कभी आप रामघाटके जानमारू हस्ती रहे। आपकी इस यूनानी कायाको देखकर काल भैरवकी गौनहारियोंनें कजरी गाती हैं—"रजऊ कब्बो चलल आवलकर हमरे अंगना।" कोई आश्चर्य नहीं कि दो-एक गौनहारिनें आज यहां आयी हों।

अगर आप अपने मुहल्लेमें सेंगरी लेकर दो-चार बटुकोंके साथ माचा मारें तो लाल मोहरीवाले या मिसिरजी के गोलके समझे जा सकते हैं। सुनते हैं एक बार किसी गुण्डेने डाक्टर सेठको हड़काया था तो आपने उसे ऐसा धोबियापाट दिया कि वह फिर उस मुहल्लेमें उभरा नहीं। आज भी जब पुरुवा हवा बहती है तब वह आपको याद करता है। यों भी आप जब कहीं बाहर जाते हैं तब अपने साथ काल भैरवसे अपना खास बटुक ले जाते हैं जिससे आपकी जवानी निखरती है और काम करनेकी स्प्रीट प्राप्त होती है।

भगवान आशुतोषसे प्रार्थना है कि आपका ठलुअत्व दिन-प्रतिदिन निखरता रहे और आरामसे पराठोंका सेवन करते हुए स्वास्थ्य बनाते रहें। परम्पराके अनुसार आज आपको ठलुआ उदयनकी उपाधिसे अलंकृत करते हुए अपनी बिरादरीमें सहर्ष शामिलकर ले रहे हैं।

(विश्वनाथ मुखर्जी)



श्रद्धेय आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र 'यह बनारस है' स्मारिका का उद्‌घाटन करते हुए। पास ही श्री मुरारी लाल केडिया, उनके पौत्रद्वय तथा काशी विश्वनाथ मंदिर के महन्त पं० रामशंकर त्रिपाठी विराजमान हैं।

नौवीं गोष्ठी (१२२)

ठलुआ बीरको पुनः मृगी को दौरा आया। सदस्योंके उलाहनोंकी बिना परवाह किये उन्होंने श्री मुरारी लाला केडिया के जन्म दिवस पर 'यह बनारस है' का द्वितीय भाग प्रकाशित कर दिया।

मान्यवर,

जय शिव-शनि! आगामी शुक्रवार ६ अक्टूबर, १९७८ ई० को सायंकाल ६ बजे काशी नगरीके बहु चर्चित व्यक्ति यानी 'ठलुआ बीरबल' श्री मुरारीलाल केडियाका ६७ वाँ जन्म दिवस अभिमन्यु पुस्तकालयके सहयोगसे मनाया

जायगा। इस गोष्ठीकी अध्यक्षता करेंगे—श्रद्धेय ठलुआ नन्दी पण्डित विश्वनाथ प्रसाद मिश्र। इस गोष्ठीमें आप सादर आमन्त्रित हैं। मनहूस, महिलायें, नाबालिक तथा बोर कविता पाठ करनेवालोंका प्रवेश वर्जित है। जलपान नहीं है। केवल पान-पानी है।

स्थान—अभिमन्यु पुस्तकालय, गुरुबाग, लक्सा रोड।

विशेष सूचना—इस अवसर पर क्लब की ओरसे 'यह बनारस है' स्मारिका का उद्घाटन होगा।

श्री मुरारीलाल केडिया दल-बदलके साथ समय पर पधारें। अध्यक्ष पदके लिए पहलेसे ही आचार्य पण्डित विश्वनाथ प्रसाद मिश्र को निश्चित कर लिया गया था।

परम्पराके अनुसार केडियाजीको माल्यार्पण, उत्तरीय नारियल देनेके बाद वेद पाठ हुआ। वेद पाठके बाद उस्ताद खादिम अली एण्ड पार्टीने जमकर शहनाई वादन किया।

इस अवसर पर 'यह बनारस है' का विधिवत उद्घाटन आचार्य पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने किया। पुस्तककी सभीने मुक्तकंठसे प्रशंसा की।

इस अवसर पर सर्वश्री राधेश्याम खेमका पण्डित लक्ष्मीशंकर शुक्ल, मोहन लाल तिवारी आदिने केडियाजी की प्रशंसा की।

इसके बाद सर्वश्री अभयनाथ तिवारी, हरिराम, बुद्धिनाथ, श्यामजी उपाध्याय, जख्मी, सुरेन्द्रनाथ, श्रीकृष्ण तिवारी, गणेश सिंह मानव आदि कवियोंने काव्यपाठ किया। खासकर गणेश सिंह जी का 'कोतवालीका कवि सम्मेलन' बहुत पसन्द की गयी।

केडियाजीके सुपुत्रोंने दिव्य जलपान का प्रबन्ध किया था। अन्तमें आभार प्रकट करते हुए ठलुआ बीरबल केडियाजीने अनेक चुटकुले और आम पर अपनी कविता पढ़कर सुनायी।

अध्यक्षीय भाषणमें आचार्य पण्डित विश्वनाथ प्रसाद मिश्रने कहा कि केडियाजी एक ऐसे नर रत्न हैं जो हर साल जन्म दिवस मनाते हैं और मुझे पकड़ लाते हैं। नगरकी शान आपके कारण है। ठलुआ क्लब वाले बड़े परम हैं। खासकर मुखर्जी यानी जिसके मुखमें उर्जा हो, बड़ा काइयाँ है। इसी बहाने सभीको जलपान का आनन्द देता है। मेरी कामना है कि केडियाजी दीर्घायु हों ताकि इनकी सौवीं वर्ष गाँठ आप लोग मनायें।

अन्तमें डाक्टर मोहन लाल तिवारीने धन्यवाद देते हुए कहा कि ठलुआ क्लब की तुलना भारतेन्दु हरिश्चन्द की संस्थासे की जा सकती है। जहाँ इसी प्रकार अनेक साहित्यकार आपसमें चोंचले बाजोंके साथ साहित्यक आनन्द लेते रहे। ठलुआ क्लबने हास्यके माध्यमसे इस वातावरण को बनाये रखा है। अन्य सभी संस्थायें धूमकेतु की तरह उदय होती है और कुछ दिनों बाद अस्त हो जाती है।



डाक्टर शिवनाथ जी के वचपन का एक अलभ्य चित्र जो उनके भाई श्री विश्वनाथ से प्राप्त हुआ है। चूँकि उस दिन कोई फोटोग्राफर नहीं आया था, इसलिये डुप्लीकेट शिवनाथजी का चित्र हम नहीं छाप पा रहे हैं।



दसवीं गोष्ठी (१२३)

ठलुआ वीर बहुत दिनोंसे चाहते थे कि वन्दे मातरम्‌के आयोजनमें सहयोग देनेवाले खांटी बनारसी डाक्टर शिवनाथजीका मुण्डनकर दिया जाय, पर वे पुट्ठेपर हाथ रखने नहीं देते थे। चर्चा करते ही चौराहे कुत्तेकी तरह खांव-खांवकर बैठते थे। इधर सूई लेनेके डरसे ठलुआवीर घबड़ाते रहे। सहसा उन्हें पता चला कि डा० शिवनाथजी सपरिवार २६ अक्टूबरको काशी आ रहे हैं। यहाँसे वे चित्रकूट दर्शन करनेके बाद खुजराहोमें खुजली मिटायेंगे। वहाँ की मूर्त्तियोंसे नये आसनोंका ज्ञान प्राप्त करेंगे।

इस आगमनका समाचार पाते ही उन्होंने चुपचाप तैयारी करके निमन्त्रण पत्र बाँट डाला—

जय शिव-शनि। आगामी शनिवार २८ अक्टूबर १९७८ ई०को सायंकाल ७ बजे ठलुआ क्लबकी ओरसे डाक्टर शिवनाथजी (प्रोफेसर-हिन्दी विभाग, शान्ति निकेतन, बंगाल) का मुण्डन-संस्कार-समारोह होगा। इस शुभकार्यके संपादनमें आपका दर्शन सादर अपेक्षित है।

विशेष सूचनाएं—अगर आपके पास फुरसत हो यानी घरमें चूना न लगवा रहे हों, बरतन खरीदनेका चक्कर न हो, फड़पर बैठकर नाल न उतारते हों तो अवश्य आयें। समयका ख्याल रखें, देरसे आकर नशा न उखाड़ें।

स्थान— गुरुबागके पास अभिमन्यु पुस्तकालय।

दर्शनाभिलाषी

नजीर बनारसी	हरिराम द्विवेदी	विनय प्रकाश श्रीवास्तव	अभयनाथ तिवारी
राधेश्याम खेमका	मुरारी लाल केडिया	कृष्णचन्द्र बेरी	पुरुषोत्तमदास मोदी

२६, २७ इसके बाद २८ अक्टूबरको भी काशी स्थित उनके भवनमें चक्कर काटनेके बाद पता चला कि वे नहीं आये। इधर निमंत्रण कार्ड बँट जानेके कारण ठलुआवीर परेशान थे। डा० शिवनाथजीके अधिकांश मित्रोंको जब यह पता लगा कि वे काशी नहीं पधारे हैं तो वे गोष्ठीमें नहीं आये।

धीरे-धीरे असली ठलुए आये। सभी उत्सुकताके साथ डा० शिवनाथजीको खोजने लगे। तभी ठलुआवीर रोंआसा होकर बोले—डा० शिवनाथ पता नहीं किस बिलमें घुस गये हैं। मैंने पूरे सौ रुपयेका जलपान, बीस रुपयेका पान और तीस रुपयेकी पूजन सामग्री मँगवायी है। वेदपाठियोंको बिना पाठ कराये रिक्शा भाड़ा देकर विदाकर दिया। कमसे कम आप लोग जलपानका श्राद्ध करके मेरे पुरखोंका कल्याण कीजिये।

जब जलपान हो गया तब सभी लोग तिड़ी होनेको उद्यत हुए। यह देखकर तुरन्त फाटक बन्दकर दिया गया और कहा गया कि ठलुआ क्लबका कार्यक्रम पण्ड नहीं होगा। डा० शिवनाथजीके स्थानपर श्री मुरारीलाल केडियाको बैठाओ। आज अध्यक्ष भी गायब है। उसके स्थानपर लक्ष्मीशंकर व्यासको स्थापित करो।

कसमसाते हुए श्री मुरारीलाल केडिया ने कहा—एक काम करो जब शिवनाथजी नहीं आये हैं तब गोष्ठी एक घण्टेमें समाप्तकर दो।

ठलुआवीरने कहा—जनाब, एक घण्टा नहीं, आधे घण्टेमें समाप्तकर देंगे। कहने साथ ही वे संदेश शुभकामना पढ़ने लगे।

के० एम० लोढा. कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता-१२

श्री ठलुआ भाई,

राम राम। दो भाषाओंमें छपा यह पत्रक मेरे शुद्ध धर्माचरणका प्रत्यम प्रमाण है। मेरे एक मित्रने शोध-जिज्ञासासे पूछा कि शिवनाथ नाम कैसे? रतिनाथ, कमलानाथ, विश्वनाथ, सीतानाथ, रमानाथ आदि तो समझमें आते हैं पर शिवनाथ नहीं। मैंने उन्हें बनारस जाकर गणपतिसे मिलनेका सुझाव दिया है, जिससे समस्या और उलझ जाय। भाई शिवनाथके मुंडन संस्कार समारोहमें नहीं पढ़ने योग्यकवित्त पढ़नेके निमित्त भेज रहा हूँ। पावती मन ही मन दें।

जबसे सुने हैं बैन, पड़त न मोंको चैन भाई शिवनाथके मुंडन हरपाइए।
देखनमें बमभोला, बातनमें गमगोला, घातनमें भैरूपति सम दरपाइए॥
वेषनमें नेतानाथ, भेषनमें रतिनाथ, लोगनमें भोलानाथ, नाम समझाइए।
ठलुआके ललुआको काशीके घलुआसम मुग्धारूप गद्दीपर थेर शिवनाथको बिठाइए॥

श्री राधाकृष्ण, राँची २१, राधाकृष्ण लेन, रांची।

प्रियवर विश्वनाथजी मुखर्जी,

समझे जी? आपके ठलुआ क्लबने बन्धुवर शिवनाथजीका अभिनन्दन करनेका निश्चय किया है यह जानकर मन अतिशय आह्लादित हो उठा है। अब तो मानना ही होगा कि हिन्दी साहित्यकार-समुदायमें भी कभी-कभी अच्छे समाचार हुआ करते हैं। इस अभिनन्दनमें एक बात यह भी देख रहा हूँ कि डा० शिवनाथजीने बनारस छोड़ दिया है और वे बोलपुरमें जा बसे हैं। अतएव ठलुआ क्लब भी उनके अभिनन्दनके लिये बनारस छोड़कर बंगालकी ओर चल बसा है। यह बड़ी प्रसन्नताकी बात है। अगर यही क्रम चला तो आपका क्लब शरत् और रवीन्द्रका अभिनन्दन करनेके लिये वहां तक चला जायगा जहां वे विराज रहे हैं। जो भी हो, यह आनन्दकी बात है। शिवनाथजीको

पोंछपांछकर बढ़ियासे उनका अभिनन्दन करना चाहिये। शिवनाथजीकी यादसे बहुत सी बातें याद आ जाती हैं। बंगला साहित्य याद आता है और उसके समीप बैठा हुआ हिन्दी साहित्य याद आता है। आदान-प्रदान, मेल-जोल भी याद आता है। आचार्य क्षिति मोहन सेन याद आते हैं जो सन्त साहित्यकी शोध करते हुए स्वयं भी सन्त हो गये थे, जिनकी कृपा मुझपर बहुत रहती थी। ताराशंकर बन्दोपाध्याय याद आते हैं, जो उसी वीरभूम जिलेके थे। सैयद मुजतबा अलीकी याद हो आती है जो वहां रहा करते थे। बन्धुवर शिवनाथजी पवित्र और कलाकी भूमिपर हैं इसलिये पवित्रतापूर्वक उनका अभिनन्दन होना उचित है। ठलुआ क्लबके द्वारा वह काम हो रहा है जिसको ओर लोग ध्यान नहीं देते। आप लोगोंके द्वारा यह अभिनन्दन देखकर मेरा मन आप ठलुआ लोगोंका अभिनन्दन करनेका हो रहा है।

श्री रायकृष्ण दास सीता निवास, बनारस-५

प्रिय विश्वनाथजी,

सस्नेह नमस्कार, लीजिए—

"अजब चक्करमें डाल दिया मुझे, विश्वनाथजी विश्वनाथ ही ठहरे।

कुछ कुछ ध्यान आता है। न जाने इस जन्मकी बात है या पूर्व जन्मकी श्री शिवनाथजी मुझपर कृपा किया करते थे। इतना ही नहीं, अपनी योग्यता और विद्यानुरागसे उन्होंने मुझे अपना अनुरागी बना लिया था। फिर वह ओझल हो गए।

क्या यह वही सज्जन हैं—जो हिन्दी कथा साहित्यपर साधिकार लिखा करते थे। उनकी एक शोधपूर्ण पुस्तक भी प्रकाशित हुई थी।

आप कहते हैं कि संप्रति वह शान्ति निकेतनमें हैं। तथापि काशीको उन्होंने भुला दिया है, किन्तु बाबा विश्वनाथ उन्हें कैसे भूल जाएं? वे ठलुओंके अधिपति हैं। आज अपने दलमें एक नया जवान भर्ती करके वे परम आनन्दित हैं। शुभं भूयात्"

चौक, लखनऊ-२२६००३
९-६-७६

श्री अमृत लाल नागर

प्रिय ठलुआबीर,

ठलुआनेके लिए चूंकि तुमने इस बार एक शान्ति निकेतनी मुर्गा फंसाया है इसलिए मेरी रायमें मौकेको हलाल करो, लगे हाथों एक ठलुआ विश्व विद्यालयकी स्थापना भी कर डालो। उससे ठंडई और जलयोगका जोगाड़ बार-बार संभव हो सकेगा। योनिभ्रष्टियोंमें जैसे विविध विषयोंके विभागोंमें जलसे हुआ करते हैं वैसे ही ठ० वि० वि० में भी हो सकते हैं, हर जल्सेमें जलपान होना ही चाहिये। वार्षिक कान्वोकेशनोंमें महामहिमोंको उपाधिग्रस्त किया करना। बहरहाल अनमोल आइडिया बिन मोल प्रेजेंटेड टु यू। ठ० वि० वि०के प्रथम "वाइस" चांसलर परमप्रिय डाक्टर शिवनाथको हमारी हार्दिक शुभकामनायें। रिटायर होनेकी खबर अच्छी है। कहावत सुप्रसिद्ध है—: यदि नहीं है तो करो—

"ठलुआ प्रोफेसर क्या करे, इस पोथीकी बात उस पोथीमें भरे।"

यही करते रहें और यशस्विद्ध हों। हार्दिक शुभकामनायें।

श्री विष्णुकान्त शास्त्री

२८०, चित्तरंजन एवेन्यू, कलकत्ता-७०००६

प्रिय विश्वनाथजी,

सस्नेह नमस्कार। अच्छा नाई पेशा अपना रखा है आपने, जब देखो तब किसी न किसी भले आदमीका मुंडन करते रहते हैं। अरे चेला मूंड़ते तो कुछ डौल भी बैठता। ठलुआ मूंड़ाई भी अपने गल्लेसे देनी पड़ती है। पर सावनके अंधेको हरा ही हरा सूझता है, वह कब किसीकी बात सुनने लगा।

वैसे इसबार एक तरहसे आप अपनेको ही मुण्डितकर रहे हैं। "विश्वभारतीके शिवनाथ" में आपका विश्व मय नाथके मौजूद है फर्क इतना ही है कि आप कापालिक हैं और वे सूफी। चलिये आपके स्वरमें स्वर मिलाकर मैं भी शिवनाथ स्तोत्र आरम्भ करता हूं। "मनेर मानुष" की तलाशमें "घरेर मानुष" बन कर जो रह गये, बनारसी मस्तीको शान्ति निकेतनी भद्रतामें जो छिपाये फिरते हैं उन शिवनाथको मैं वन्दना करता हूं।

आ० रामचन्द्र शुक्लपर काम करनेके कारण आरामसे चांद (चन्द्र) शुक्ल हो गयी है जिनकी ओर अब केशवकी तरह अपनी परिणतिको जो कोसते रहते हैं उन शिवनाथकी मैं वन्दना करता हूं।

कारकीय व्याकरण जिनके नखदर्पणमें और रवीन्द्र साहित्य जिनके नेत्रविलासमें है, उन शिवनाथकी मैं वन्दना करता हूं। लज्जावती नायिकाकी तरह कुछ कहनेके पहले ही संकुचित हो उठना जिनका सहजशील है, मुद्दतोंके बाद भी मिलनेपर धत्ता देकर अन्तर्धान हो जाना जिनका स्वभाव है पर आज जबरे ठलुओंके बीच फंसी निरीह ठलुईकी तरह जो सुशोभित हैं उन शिवनाथकी मैं वन्दना करता हूं।

भोले बाबाकी कृपासे उन्हें अखण्ड ठलुअत्वकी प्राप्ति हो।

संदेश—शुभकामनाके बाद श्री हरिराम द्विवेदीने अभिनन्दन पत्र पढ़कर सुनाया। जो बड़े कद्दूमें बन्दमें था। अब अध्यक्षने कहा—सब तो हुआ, पर डा० शिवनाथजीके बारेमें कुछ हो जाय।

डाक्टर मोहनलाल तिवारीने कहा—डाक्टर शिवनाथका पूरी तरह मूल्यांकन नहीं हुआ है। वे न केवल सुलझे हुए आलोचक हैं बल्कि भाषा विज्ञानके विद्वान हैं। जो कार्य हिन्दीमें श्री कामता प्रसाद गुरुने किया है, या आचार्य किशोरी दास बाजपेयीने किया है, वही कार्य शिवनाथजीने 'हिन्दी कारकोंका विकास' लिखकर किया है। केवल यही पुस्तक डा० शिवनाथजीको अमर बनानेके लिए काफी है। इसके अलावा अन्य जो पुस्तकें उन्होंने हिन्दीको दी है, वे कम महत्त्वपूर्ण नहीं है।

श्री लक्ष्मीशंकर व्यासने भी डा० शिवनाथजीकी सहृदयता, बन्धुत्वकी भूरिभूरि प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि अब उन्होंने बंगालमें घर ही नहीं बसाया है बल्कि बंगालिन गृहणीसे विवाह किया है।

अध्यक्षके भाषणके बाद लोग जानेकी तैयारी करने लगे तभी कवियोंका दल रो पड़ा। मधुरने कहा—आज मैं कुलंजन खाकर आया हूं और आप लोगोंको बिना गजल सुनाये जाने नहीं दूंगा।

इसके बाद कवियोंका इस कदर हमला हुआ कि लोग पसीने-पसीने हो गये। काफी दिनों बाद पता चला कि भीषण वर्षाके कारण शान्तिनिकेतनमें भयंकर बाढ़ आ गयी थी। फलस्वरूप अनेक रेल गाड़ियां रद्द हो गयी थी। जिसके कारण डाक्टर शिवनाथजी नहीं आ सके। आधे घण्टेकी गोष्ठी साढ़े तीन घण्टेतक चलती रही। केवल डुप्लीकेट शिवनाथजी (मुरारीलाल केडिया) के कारण। सभी ठलुए बौरा गये थे।

●

रंगीलो चंग बाजणू
म्हारें वीरैजी मंडायों चंग बाजणू
म्हारों रेंगर मंड के लायो ऐ
रंगीलो चंग बाजणू

चंग आंगलिया बाजै
चंग मूंदड़िया बाजे
चंग पूंचे के बल बाजै
ऐ रंगीलो चंग बाजणू

होली आई ऐ सहेल्यां मिल खेलां लूर
होली आई रे
रिमझिम - रिमझिम बाजे पायलड़ी
होली आई रे सहेलियां मिल खेलां लूर।

अभिनन्दन-पत्र

भाईजी, शिवनाथजी,

आज आपका अभिनन्दन करते समय हमें ठीक उसी प्रकारका आनन्द मिल रहा है जिस प्रकार आजकल चिकमंगलूर के निवासियों को मिल रहा है। इतिहास से यह सिद्ध है कि आप या हम न तो चिकमंगलूर के हैं और न मंगलूर से कोई नाता-रिश्ता रखते हैं। शक्ल से भले ही आप द्रविड़ कड़गड़ मुनेत्र के नेता मालूम पड़ रहे हों, पर वर्तमान-कालमें आप शुद्ध बंगलूरके हैं। बंगलूरके इस मायनेमें हैं कि जन्मना बनारसी होते हुए अब कर्मणासे बंगालके पूर्ण रूपसे हो गये हैं। वहीं आपने घर बसा लिया है जहाँ कभी महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर को शान्ति प्राप्त हुई थी, जहाँ गुरुदेवने विश्वके एक महान विश्व विद्यालयकी स्थापना की है, जहाँका परिवेश हर किसी को मुग्धकर लेता है, जहाँकी पवित्र भूमिमें कला, साहित्यके समंज्ञ विद्वानोंका निर्माण होता रहा है; आप स्वयं भी उसी आबहवामें समृद्ध हुए हैं।

आज अगर हमारे बीच गुरुदेव होते तो यकीन मानिये हम उन्हें भी अपने दलमें शामिल करनेके लिए शान्ति निकेतन तक धावा मारते। लेकिन आज आपका अभिनन्दन करते हुए हम ऐसा अनुभवकर रहे हैं कि शान्तिनिकेतनके वास्तविक सांस्कृतिक प्रतिनिधिका सम्मानकर रहे हैं।

हे खांटी बनारसी,

आजसे ६१ वर्ष ३ माह २२ दिन पूर्व यानी ६ जुलाई १९१७ को आपने काशीके उस ऐतिहासिक मुहल्लेमें जन्म ग्रहण किया था जहाँ उस्ताद बिस्मिल्ला खां आबाद हैं। हड़हाके बारेमें एक मसल मशहूर है—

हड़हा, पियरी और जतनबर। इ तीनों मुहल्ला गुण्डन कऽ घर॥

यह बात अपनेमें कहांतक सही है, राम जाने। लेकिन कहा जाता है कि इसी पियरीके स्थायी निवासी बेढबजी थे तथा पण्डित सीताराम चतुर्वेदी जी भी हैं। सुना जाता है कि चतुर्वेदीजीके किसी पूर्व पुरुषके आतंकसे तंग आकर ब्रिटिश सरकार को पियरीमें पुलिस चौकीकी स्थापना करनी पड़ी थी।

इसी मुहल्लेकी गलियोंमें आप नंग-धड़ंग घूमते हुए गोला दीनानाथके प्राइमरी स्कूलमें गये। वहांसे डी० ए० वी० इण्टर कालेजमें गये। यहाँसे जो उछले तो सीधे मालवीयजीके कानीहौदमें भर्ती हुए। यहांसे ससम्मान एम० ए० की उपाधि प्राप्त करनेके बाद बंगला साहित्यके मूर्धन्य आलोचक डाक्टर सुकुमारके निर्देशनमें आपने अर्थतत्त्व (सिमेण्टिक्स) यानी शब्दार्थ विज्ञानकी खाल उधेड़ डाली। फलतः कलकत्ता विश्वविद्यालयने आपको डी० फिल० की उपाधि देकर अपना पिण्ड छुड़ाया।

इस बीच आप लगातार चार वर्षों तक नागरी प्रचारिणी पत्रिकाके सहायक संपादक रहे। प्रधान संपादक थे— श्रद्धेय ठलुआ नन्दी आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्रजी। इस बीच आप शान्त नहीं बैठे थे। बारबार प्रसव-वेदनासे पीड़ित होते रहे और लगातार एकके बाद एक संतानों को जन्म देते रहे। सन् १९४१ में आचार्य "रामचन्द्र शुक्ल" पर पहली पुस्तक छपी। सन् १९४९ ई० में आपके जीवनमें एक महत्वपूर्ण घटना हुई यानी आप शान्ति निकेतनमें अध्यापनके लिए चले आये। इन्हीं दिनों पुनः प्रसव वेदना हुई और "हिन्दी कारकोंका विकास" आपने हिन्दी जगत को दी। इसके बाद १९५० में "आधुनिक साहित्यकी आर्थिक भूमिका", "अनुशीलन", सन् १९५१ में "मीमांसिका", 'हिन्दी नाटकोंका विकास', 'भारतेन्दुकी कविता', नामक पुस्तकें आपकी प्रकाशित हुई।

इसी बीच शान्ति निकेतनमें आप परिणय सूत्रमें बंधे तो प्रसव वेदनामें कमी हुई। "अर्थतत्त्वकी भूमिका", 'रवीन्द्रनाथ', 'हिन्दी भाषाका अर्थ तात्विक विकास', 'रवीन्द्र साहित्यकी समीक्षा' नामक पुस्तकें क्रमशः प्रकाशित हुई। कहनेका आशय, नून-तेल लकड़ी ही नहीं, शान्ति निकेतनमें अपना घर बनवानेमें आप इस कदर जुटे कि साहित्य सेवामें गतिरोध आ गया।

हे शान्ति निकेतनके वट वृक्ष,

बनारसी उसे कहते है जो नहाने-निपटनेका शौकीन हो। जिसका निपटान गृह लपालप न करे, वह बनारसी नहीं होता। आपका निपटान गृह दिव्य है, बाहर बागमें बहरी अलंगका अपूर्व आनन्द है जहाँ साफा लगाने, अहरा दगानेमें अपूर्व आनन्द मिलता है।

श्री मुरारीलाल केडियाके सम्पर्कमें आनेके कारण आपका निपटान एक घण्टेमें होता है और अढ़ाई घण्टामें स्नान करते हैं। नीचेसे ऊपर तक हर अंग इस प्रकार रगड़ते हैं जैसे क्लीनर बड़ी लाइनका इंजन पोंछता है। अब यह बताना कठिन है कि निपटनेके बाद कितने किलो मिट्टीसे आप अपना अंग-प्रत्यंग साफ करते हैं। आपकी वेश भूषामें कविभाव झलकता है। साफ बुर्राक पायजामा, लपालप करता कुर्ता और गलेमें उतरीय डाले जिस वक्त आप बोलपुर की सड़कोंपर चलते हैं तो लगता है जैसे अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटीका जनरल सेक्रेटरी चल रहा है। आपका सिद्धान्त है कि पहनेंगे खद्दर, वोट देंगे कांग्रेसको और बने रहेगें कांग्रेस पार्टीमें। लेकिन सब सारनके गरियाते रहेंगे। एक दो नहीं, सात पुश्त तक। जिसे बुरा लगे, उखाड़ ले जाय जितना बचा है।

हे भाई शिवनाथजी,

आप बनारससे दूर जरूर रहते हैं, पर कभी आप बनारस को भूला नहीं पाते। प्रति वर्ष सपरिवार बाबाके दरबारमें मत्था टेकने आ जाते हैं। लगता है केदारनाथ शर्माजीकी स्मृतियां आपको रह-रह कर कचौटती हैं।

जीवनमें मित्र बहुत मिलते हैं, पर आप जैसा बन्धुवत्सल मित्र बड़ी कठिनाईसे मिलता है। सहृदयता आपमें कूट-कूट कर नहीं, ठूंस-ठूंसकर भरी हुई है। सज्जनतासे आप सराबोर रहते हैं। आपकी साधुतामें चीनिया बेगम जैसी नशा है जो एक बार आपसे मिला, वह आपका परम भक्त बन जाता है।

हमारा ख्याल है यह सब न केवल बनारसकी मिट्टीका प्रभाव है, बल्कि महाकविकी साधना स्थलका भी असर है। जहाँ आचार्य क्षिति मोहन सेन, अवनीन्द्र नाथ ठाकुर, गगेन्द्रनाथ ठाकुर, दीनेन्द्रनाथ ठाकुर, सत्येन्द्रनाथ ठाकुर, नेपालचन्द्र राय, कुमार स्वामी, नन्दलाल बोस, प्रबोधचन्द्र सेन, प्रभात मुखर्जी, राम किंकर जैसे कलाकार और विद्वान साधना करते रहे, जहाँकी पावन भूमिसे डाक्टर हजारी प्रसाद द्विवेदी और शिवानी जैसी लेखिकाएं हिन्दी जगतमें आये। वहाँके कण-कणमें जो अवर्णनीय माधुर्य है, उसका वर्णन करना कठिन है। संभवत: इसीलिए आपने अपनी जन्म भूमिकी अपेक्षा शान्ति निकेतनमें कुटिया बनवाना श्रेयस्कर समझा।

हे सौम्य मूर्ति,

आपमें ठलुअत्व चरम सीमापर है, इसका दर्शन आपमें हर क्षण आसानीसे किया जा सकता है। न जाने कितने गधों को अपने घोड़ा बनाया है जो भारतके हर कोनेमें घास चर रहे हैं। लेकिन घरमें केवल एक ही नम्बरी नोट छाप सके हैं। इस दृष्टिसे आप एकमात्र असली ठलुए हैं। आपका कौल है कि शेर को एक ही पुत्र होता है, कुत्ते और बकरे घचाघच बचियों हर साल निकालते हैं। ऊपरसे आप भले ही सज्जन पुरुष लगते हैं, पर बनारसी कत्तईपन आपके अन्तरमें अजय नदीकी तरह प्रवाहित है। इसके प्रमाण हमें मिल चुके हैं। आज आपका अभिनन्दन करते हुए बाबा विश्वनाथसे प्रार्थना करते हैं कि वे आपमें केन्दुली गाँवके बाउल संगीत सा माधुर्य, रतनपल्ली जैसा सौन्दर्य और श्री-निकेतनकी कला प्रियता प्रदान करें।

अपनी परम्पराके अनुसार आज आपको हम "ठलुआ आनन्द" की उपाधि देते हुए अपनी बिरादरीमें शामिल कर ले रहे हैं ताकि कभी हम शान्ति निकेतनमें गोष्ठी करें तो सहयोग प्राप्त हो।

(विश्वनाथ मुखर्जी)

●



डाक्टर ज्ञानानन्द नागरजी को ठलुआ श्री भवत्रातन नम्पूतिरि विशेष सामग्रीसे निर्मित अभिनन्दन पत्रथमा रहे हैं जिसे भयभीत स्थितिमें डाक्टर साहब पकड़ रहे हैं।

ग्यारहवीं गोष्ठी (१२४)

जाड़ेके मौसममें जब लोग चादरके नीचे बोरसी रखे घरोंमें आग ताप रहे थे, ठीक इसी समय सभी लोगोंके लेटर बक्समें एक कार्ड मिला—

मान्यवर,

जय शिव-शनि। आगामी १७ दिसम्बर, १९७८ रविवार को सायंकाल ठीक ५ बजे एक गोष्ठी गुरुबाग स्थित अभिमन्यु पुस्तकालयमें होगी जिसमें शिक्षा संकाय (हिन्दू विश्वविद्यालय) के अवकाश प्राप्त प्रवक्ता डाक्टर ज्ञानानन्द नागरजीका अभिनन्दन होगा आपसे साग्रह निवेदन है कि ठीक समयपर पधारकर कार्यक्रम को सफल बनायें।

विनीत

सीताराम चतुर्वेदी — जसवन्त मेहता — विश्वनाथ मुखर्जी

यह निमंत्रण पाकर लोगोंने नाक सिकोड़ा। यह व्यक्ति न तो हिस्ट्री शीटर है और न इनका अखबारोंमें कभी फोटू छपा है। गुजराती अध्यक्ष, गुजराती मांत्रिक, गुजराती वेदपाठी, गुजराती पण्डित सभी गुजरातियोंका ठलुआ क्लबमें क्या बोल बाल हो गया कि केवल इन्हींका मुंडन हो रहा है। फलतः अनेक लोग इस इस गोष्ठीका वाक आउट कर गये। केवल वे ही आये जो इनके शिष्य थे या इनकी देनसे परिचित थे।

फलतः ठलुआबीरने केरलके ठलुआ श्री भवत्रातन नम्पूतिरि को अध्यक्ष पद बैठाकर काम चालू किया।

राष्ट्र और जनताकी सेवामें सन्नद्ध

आदित्य मिल्स लिमिटेड

इंडिया एक्सचेंज

कलकत्ता–७०००१

ठलुआक्लबने कहा—नागरजी शिक्षा जगतके एक ऐसे रत्न हैं जिनका जोड़ा मिलना कठिन है। मुझे मालूम है कि शिक्षा शास्त्रपर आप बिना पानी पिये ८ घण्टा बोल सकते हैं। आज भी आपकी आकृतिपर जो लुनाई यानी सौन्दर्य है जिसे उर्दूमें हुस्न कहते हैं—वह सौ प्रतिशत मौजूद है, भले ही गालमें गड्ढे बन गये हों। इस बारेमें अनेक गुप्त और प्रकट कथाएँ 'किस्सा सारंगा वृक्ष' से लेकर 'छबिली भटियारिन' में प्रकाशित है। शायद आजकी गोष्टीमें अनेक रहस्य खुलेंगे।

वेदपाठके बाद अभिनन्दन पत्र जिसे डा० विजय श्रीवास्तवने अथक परिश्रम करके बनाया था, उसमें भरकर उन्हें थमाया गया। डाक्टर नागर उसे थामनेसे भड़कने लगे कि कहीं एटम बम न हो। (चित्र देखें तो स्पष्ट हो जायगा।)

इस अवसरपर उनके ही एक शिष्यने कहा—गुरुजी, इससे क्या डरेंगे। मुखर्जी साहबने छोटा सा थमाया है। इससे बड़ा-बड़ा न जाने कितना गुरुजी हजम कर चुके हैं।

डाक्टर मोहनलाल तिवारी, टीचर्स ट्रेनिंग कालेजके डीन तथा श्री वीरेश्वर भट्टाचार्यने डाक्टर ज्ञानानन्द नागरके व्यक्तित्वपर प्रकाश डाला। इन सभी लोगोंने आपकी शिक्षाका विशेष रूपसे छात्रों को आगे बढ़ानेमें सहायक बननेकी भूरि-भूरि प्रशंसा की।

डाक्टर ज्ञानानन्द नागरने आभार प्रकट करते हुए कहा—आप लोग मेरा मुण्डन करनेवाले हैं यह जानकर मैं मुण्डन घरसे करवा कर आया ताकि आपको अधिक कष्ट न हो। यह मेरे मित्र विश्वनाथजीकी कृपा है कि मुझे यहाँ घसीट लाये। यहाँ की भाषामें बोलना कठिन है। अगर शिक्षा शास्त्रपर कहनेको कहा जाय तो मैं लगातार दस-बारह घण्टे तक बोल सकता हूँ। हास्य मेरा विषय नहीं रहा, पर हास्यका प्रेमी हूँ। बिना हास्यके जीवन अधूरा है। अब तो चारों ओर से संन्यास लेकर मैं पूर्णतः ठलुआ बन गया हूँ।

अध्यक्ष पदसे बोलते हुए भवत्रातनजीने कहा—सही आदमी का अभिनन्दन करना ठलुआ क्लबकी विशेषता है। आज आपका मुंडन हुआ तो आप हमारे हो गये। साथ रहियेगा बिहारी लोगोंकी तरह स्वार्थ सिद्ध हो जानेपर अलग न होवे। इसी क्लबमें जब पटनाके एक अध्यापक का, नाम नहीं लूंगा, कारण वे विद्यापीठमें मौजूद हैं, अभिनन्दन होने लगा तभी मैंने कहा था कि यह आदमी थर्डक्लासका है, धोखेबाज है और ठलुआ क्लबके योग्य नहीं है। आज यह बात अधिकांश लोग स्वीकार करते हैं। ठलुआ क्लबमें ऐसे ही लोगोंको सदस्य बनाया जाय जो महत्वाकांक्षी न हों। सरल ईमानदार हों, मौजी हों, आनन्द लें और दे सकें। एक बातका घोरतर विरोध करता हूँ कि जब हमारे देवता शिव-शनि और शनिवारको गोष्ठी होती है तब रविवारवालोंका बायकाट कर दें। हमेशा रविवार की उपस्थिति कम होती है। जिन्हें शनिवार पसन्द नहीं, वे सदस्यता छोड़ दें। भविष्यमें रविवारको गोष्ठी न करें।

अन्तमें सर्वश्री गणेशसिंह मानव, देवीकान्त मिश्र, उद्धव प्रसाद द्विवेदी, विनय श्रीवास्तव और हरिराम द्विवेदीका काव्य पाठ हुआ।

बादमें पता चला कि डाक्टर नागर और बुढ़ुदादाकी पत्नीने अभिनन्दनमें प्राप्त विशेष-विशेष सामग्रियोंको एकान्तमें देखा और बड़े प्रसन्न हुए कि आज खूब चूना लगाया गया। नारियलके लड्डू मुहल्लेमें कई लोगोंको बाँटे गये।

●

॥ अभिनन्दन पत्र ॥

डाक्टर ज्ञानानन्द नागर एम० ए० (इलाहाबाद) एल० टी० (प्रयाग) डी० ई० (लन्दन , ई० ई० टी० एण्ड पी० (वाशिंगटन) सी० दि० जी० (होनोलोलू) पी० पी० (टिम्बकूट) वगैरह-वगैरह ।

मासानां मासोत्तमे पौषे कृष्ण पक्षे, तृतीया तिथौ, रविवासरे, अविमुक्तधामे, विश्वेश्वर क्षेत्रे, ठलुआ क्लब, मुण्डन-संस्कार कुर्मः ।

हे ज्ञानश्रेष्ठ,

आज आपका मुण्डन करते समय उसी प्रकारका हर्ष हो रहा है जिस प्रकार सोहागरातमें नववधूके घूंघटका पट उठानेमें प्राप्त होता है । आपके नामके पीछे महाबली अंगद और हनुमानजीकी पूंछकी भांति शिक्षाकी लम्बी डिग्रियां देखकर अब हमें पूर्ण विश्वास हो गया कि डार्विनकी खोज ठीक थी यानी मानवके पूर्वज बन्दर थे । वह इसीलिए कि आपकी शक्ल लक्षा तिमुहानीके संकट मोचनसे हुबहू मिलती है ।

हे ज्ञानमय,

आजकी यह गोष्ठी आपके नामके अनुसार ज्ञानवापीके मण्डपमें होना चाहिए था जो कि ज्ञानदानकी परमानेण्ट फैक्टरी है और जहां जानेपर सभी भक्तोंकी ज्ञान पिपासा शान्त हो जाती है । लेकिन आप चिन्ता न करें । हम आज आपको ऐसा ज्ञान-दान देंगे जिसे कोई भी ज्ञानी अबतक प्राप्त नहीं कर सका है । उपस्थित सभी ठलुए ज्ञानमुद्रामें ही नहीं, ज्ञानासन लगाये आजके ज्ञान-यज्ञमें इसलिए उपस्थित हैं ताकि आपका ज्ञानवरण उधेड़कर देख लिया जाय । आप जैसे ज्ञानी चण्डूल कभी-कभी अर्थात् तभी हमारे चंग पर चढ़ते हैं जब हमें सात्विक आनन्द प्राप्त होनेको होता है ।

मानव जन्मसे लेकर मृत्युतक आनन्दकी तलाश करता है । पिता, माता, पुत्र, मित्र यहांतक कि पत्नीसे भी आनन्द प्राप्त करता है । जिन्हें आनन्द नहीं मिलता या अति आनन्द मिलता है, वे अपने पास आनन्द नामक शिष्य पाल लेते हैं जैसे महात्मा बुद्धके एक शिष्य आनन्द थे । आपके तो अनेक शिष्य हैं ।

आगेच लकर जगद्गुरु शंकराचार्यने दसनामी संन्यासियोंकी एक पलटन तैयारकी तो एक बटालियनको आनन्दकी उपाधि दी । इस बटालियनके लोग अपने नामके पीछे आनन्द शब्द कवियोंके उपनामकी तरह लगाते आ रहे हैं । बादमें बाबा कीनारामने राजा चेतसिंहके मीरमुंशी सदानन्द बख्शीको आशीर्वाद देते हुए कहा था कि तुम और तुम्हारे वंशके लोग अपने नामके पीछे आनन्द शब्द जोड़ते रहेंगे तो आनन्द मनाते रहोगे । पता नहीं, आपके वंशमें आनन्द शब्द कहांसे जुड़ गया ।

हे ज्ञानकोश,

आपका ज्ञान असीम है । आप भी पण्डित बनारसीदास चतुर्वेदीकी तरह हिन्दीके साथ-साथ अंग्रेजीकी रेंड़ मारते हैं । आपका जन्म गंगा-यमुनाके संगमकी उस पवित्र भूमिमें हुआ है जहांका अमरूद बड़ा मीठा होता है जिसे इलाहाबादी कहते हैं । बनारसके पण्डे, मीरजापुरके गुण्डे और इलाहाबादके मूंछमुण्डे मशहूर हैं । इलाहाबादकी परम्परा है कि बिना मूंछ मुड़ाये कवि, पत्रकार, कथाकार, नाटककार, चित्रकार नहीं बना जा सकता । आप इलाहाबादी सेम्पुल हैं ।

इसी नगरके ऊंचा मण्डी मुहल्लेमें १८ अगस्त सन् १९१६ ई०को आपने श्री ब्रह्मानन्द पण्डयाके घर जन्म लिया है । अभी १८ महिने भी नहीं हुए कि पिताका साया आपके सिरसे उठ गया और आप अनाथ हो गये ।

यह बनारस है !

१५ वीं शताब्दी की काशी ※ गदरकी काशी—कर्नल नीलकी जबानी
भारशिवोंके शासनकी काशी ※ प्राचीन काशी (आदिमकाल)
१४ वीं शताब्दीकी काशी ※ जातक युगकी काशी
काशीकी कुछ ऐतिहासिक घटनाएँ ※ विभिन्न सम्प्रदायोंकी काशी

भोजपुर क्षेत्रका विद्रोहके पहलेकी कहानी—(विस्तारके साथ प्रथम बार प्रकाशित)
काशीके प्राचीन तथा अर्वाचीन पण्डित ※ पण्डित मधुसूदन सरस्वती ※ नारायण भट्ट, सर्व विद्या निधान कवीन्द्राचार्य ※ पण्डितराज जगन्नाथ ※ काशीके ऐतिहासिक मुहल्ले ※ काशीके प्राचीन पत्र-पत्रिकाओंका इतिहास, वाराणसीका भूगोल ※ काशीके घटनाओंका इतिहास, अध्यात्म काशी, ※ मिर्जा गालिबका बनारस, काशीकी लोककला ※ काशीके प्राचीन इतिहासकी रूपरेखा ※ स्वामी भास्करानन्द सन्त कीनाराम ※ काशीके ज्योतिषी, काशीके अनोखे रत्न ※ बनारसके अखाड़े और व्यायामशालाएँ काशीका एक अनोखा दंगल ※ तुलसीका रंगमंच और काशी काशीराज कर्णदेव ※ काशीमें शास्त्रार्थकी परम्परा ※ रथयात्रा ※ नाग नथैया ※ रामनगरकी रामलीला ※ नाटी इमलीका भरत मिलाप ※ बनारसके बंगाली, काशीमें महाराष्ट्रियोंकी देन ※ पं० शिवकुमार शास्त्री ※ काशीमें सत्रकी परम्परा ※ सारनाथ, अध्यात्म काशी ※ अतीतकी झलकियाँ।

लेखक

म० म० गोपीनाथ कविराज, डा० वासुदेव शरण अग्रवाल, डा० परमेश्वरीलाल गुप्त, डा० कमलगिरि, पं० सांवलजी नागर, रामकृष्ण, प्रो० अभिभूषण भट्टाचार्य, मिर्जा गालिब, रा० र० खाडिलकर, विश्वनाथ मुखर्जी, बलराम शास्त्री, एम० भारती, शंभुनाथ मिश्र, पं० अमृतलाल शास्त्री, पं० रामनारायण मिश्र, पं० बनारसीलाल पाण्डेय, पं० अनन्त शास्त्री फड़के, परमानन्द आनन्द, बालकृष्ण गर्ग आदि।

मूल्य—दस रुपया, सजिल्द, पृष्ठ २२०, रफ कागज, डाक व्यय अलगसे।

प्राप्ति स्थान

हिन्दी प्रचारक पब्लिशर्स, बाँसफाटक, वारणसी
विश्व विद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी
सोमेश्वर द्विवेदी, न्यूज पेपर एजेण्ट, चौक, वाराणसी

पुस्तकालयों तथा सदस्योंको २५ प्रतिशत छूटके साथ नगद दाम देने पर निम्नलिखित जगहोंसे प्राप्त होंगी—

श्री अन्नपूर्णा ब्लाक वर्क्स, बाँसफाटक, वाराणसी
ठलुआ क्लब, ६१/१९ सिद्धगिरि बाग, वाराणसी

नोट—प्रतियां सीमित संख्यामें प्राप्य है। समाप्त हो जाने पर प्राप्त नहीं होगी।

॥ अभिनन्दन पत्र ॥

डाक्टर ज्ञानानन्द नागर एम० ए० (इलाहाबाद) एल० टी० (प्रयाग) डी० ई० (लन्दन) ई० ई० टी० एण्ड पी० (वाशिंगटन) सी० दि० जी० (होनोलोलू) पी० पी० (टिम्बकूट) वगैरह-वगैरह।

मासानां मासोत्तमे पौषे कृष्ण पक्षे, तृतीया तिथौ, रविवासरे, अविमुक्तधामे, विश्वेश्वर क्षेत्रे, ठलुआ क्लब, मुण्डन-संस्कार कुर्मः।

हे ज्ञानश्रेष्ठ,

आज आपका मुण्डन करते समय उसी प्रकारका हर्ष हो रहा है जिस प्रकार सोहागरातमें नववधूके घूंघटका पट उठानेमें प्राप्त होता है। आपके नामके पीछे महाबली अंगद और हनुमानजीकी पूंछकी भांति शिक्षाकी लम्बी डिग्रियां देखकर अब हमें पूर्ण विश्वास हो गया कि डार्विनकी खोज ठीक थी यानी मानवके पूर्वज बन्दर थे। वह इसीलिए कि आपकी शक्ल लक्खा तिमुहानीके संकट मोचनसे हुबहू मिलती है।

हे ज्ञानमय,

आजकी यह गोष्ठी आपके नामके अनुसार ज्ञानवापीके मण्डपमें होना चाहिए था जो कि ज्ञानदानकी परमानेण्ट फैक्टरी है और जहां जानेपर सभी भक्तोंकी ज्ञान पिपासा शान्त हो जाती है। लेकिन आप चिन्ता न करें। हम आज आपको ऐसा ज्ञान-दान देंगे जिसे कोई भी ज्ञानी अबतक प्राप्त नहीं कर सका है। उपस्थित सभी ठलुए ज्ञानमुद्रामें ही नहीं, ज्ञानासन लगाये आजके ज्ञान-यज्ञमें इसलिए उपस्थित हैं ताकि आपका ज्ञानवरण उधेड़कर देख लिया जाय। आप जैसे ज्ञानी चण्डूल कभी-कभी अर्थात् तभी हमारे चंग पर चढ़ते हैं जब हमें सात्विक आनन्द प्राप्त होनेको होता है।

मानव जन्मसे लेकर मृत्युतक आनन्दकी तलाश करता है। पिता, माता, पुत्र, मित्र यहांतक कि पत्नीसे भी आनन्द प्राप्त करता है। जिन्हें आनन्द नहीं मिलता या अति आनन्द मिलता है, वे अपने पास आनन्द नामक शिष्य पाल लेते हैं जैसे महात्मा बुद्धके एक शिष्य आनन्द थे। आपके तो अनेक शिष्य हैं।

आगे चलकर जगद्गुरु शंकराचार्यने दसनामी संन्यासियोंकी एक पलटन तैयारकी तो एक बटालियनको आनन्दकी उपाधि दी। इस बटालियनके लोग अपने नामके पीछे आनन्द शब्द कवियोंके उपनामकी तरह लगाते आ रहे हैं। बादमें बाबा कीनारामने राजा चेतसिंहके मीरमुंशी सदानन्द बख्शीको आशीर्वाद देते हुए कहा था कि तुम और तुम्हारे वंशके लोग अपने नामके पीछे आनन्द शब्द जोड़ते रहेंगे तो आनन्द मनाते रहोगे। पता नहीं, आपके वंशमें आनन्द शब्द कहाँसे जुड़ गया।

हे ज्ञानकोश,

आपका ज्ञान असीम है। आप भी पण्डित बनारसीदास चतुर्वेदीकी तरह हिन्दीके साथ-साथ अंग्रेजीकी रेंड़ मारते हैं। आपका जन्म गंगा-यमुनाके संगमकी उस पवित्र भूमिमें हुआ है जहाँका अमरूद बड़ा मीठा होता है जिसे इलाहाबादी कहते हैं। बनारसके पण्डे, मीरजापुरके गुण्डे और इलाहाबादके मूंछमुण्डे मशहूर हैं। इलाहाबादकी परम्परा है कि बिना मूंछ मुड़ाये कवि, पत्रकार, कथाकार, नाटककार, चित्रकार नहीं बना जा सकता। आप इलाहाबादी सेम्पुल हैं।

इसी नगरके ऊंचा मण्डी मुहल्लेमें १८ अगस्त सन् १९१६ ई०को आपने श्री ब्रह्मानन्द पण्डयाके घर जन्म लिया है। अभी १८ महिने भी नहीं हुए कि पिताका साया आपके सिरसे उठ गया और आप अनाथ हो गये।

हे ज्ञानचक्षु,

संसारमें उसी व्यक्तिकी पूजा होती है, उसी का यश फैलता है जो संघर्ष करता हुआ आगे बढ़ता है। आपने नगर पालिकाके स्कूलसे मिडिल पास किया सन् १६२८ में और १६३१ में आप मैट्रिक हुए। बादमें फिजिकल एजुकेशन में डिप्लोमा लिया लखनऊमें। फिर सी० ए० वी० में गेम्स इंस्ट्रक्टरके पदपर दो साल काम करनेके बाद प्राइवेट परीक्षार्थीके रूपमें इण्टर, बी० ए०, एम० ए०, एल० टी० किया। एल० टी० करनेके बाद ११ वर्ष अध्यापक धर्मका पालन ठीक उसी प्रकार किया जैसे खूबसूरत पतिकी पत्नियां सती-धर्मका पालन करती हैं।

आपके अध्यापन कार्यसे कालेजके लोग इतने प्रसन्न हुए कि उन लोगोंने आपको उच्च शिक्षा प्राप्त करनेके लिए सवेतन इंगलैण्ड भेजा। वहाँ आपने डिप्लोमा इन एजुकेशन और ई० ई० टी० एण्ड पी० की डिग्री प्राप्त की और बादमें अमेरिका जाकर वहाँ वाशिंगटनसे एम० एड० डिग्री प्राप्त की।

इंगलैण्ड आप पोलैण्ड, हालैण्डके रास्ते गये थे और अमेरिका आप थाइलैण्ड, न्यूजीलैण्डके मार्गसे गये थे।

भारत आते ही आपकी नियुक्ति गोरखपुरके शिक्षा संकायमें हुई जहाँ अनेक भेड़ोंको चरानेका कार्य करते रहे। बादमें काशी हिन्दू विश्वविद्यालयमें आये जहाँ आप एम० एड० में शिक्षा-दर्शन पढ़ाते रहे। सन् १९७६ ई० में गड़ेरिया पदसे अवकाश ग्रहण करनेके उपरांत अब आप ठलुअत्वका जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

हे ज्ञानापोह,

आपके इस कमोरियामें कितना ज्ञान भरा है, इसका उद्‌घाटन आज आप करेंगे। हमें यह ज्ञात है कि आपको अण्डसे लेकर ब्रह्माण्ड तकका ज्ञान प्राप्त है आपके ज्ञानगर्भमें न जाने कितने गुप्त ज्ञान भरे हैं।

हमारी इच्छा थी कि हम कभी श्रीमती ओनासिसका अभिनन्दन करेंगे जिनसे आपकी शक्ल हुबहू मिलती है। यकीन न आये तो किसी फोटोको सामने रखकर आइनेमें आप आपनी शक्ल देख लें। जिस वक्त आप मुस्कराते हैं, उस वक्त षकीलावानो ओपालीकी तरह आपके गालमें गड्ढे पड़ जाते हैं चेहरेका रंग काश्मीरी सेब जैसा हो जाता है।

आपकी दिली तमन्ना रही कि आजकी गोष्ठीमें न केवल मुण्डनम् हो, बल्कि सर्वम क्रिया हो। हम उसके लिये तैयार हैं। हनुमान घाटका नापित आपके पास है, पर आप पाँच रुपयेमें करायेंगे या दस रुपये में, पहले इसका निर्णय कर लें।

आपमें अनेक खूबियाँ हैं। आप पान घुलाते हैं, पर सोपाड़ी नहीं लेते। असली गायका दूध पीते हैं जो कि सुन्दरपुरसे आता है। घर-बाहर हमेशा गांधीजी की तरह दो-एक बटुकोंके कंधेपर हाथ रखकर चलते हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि अपनी पत्नीके इकलौते एकनिष्ठ पति हैं।

आपको यह डर बराबर बना रहा कि कहीं ठलुए रैगिंग न करें, लेकिन हमने ऐसा कुछ नहीं किया और न करेंगे जिससे आप चिगुर जायं। भगवान करे कि आपका यह हुश्न शुक्ल पक्षकी चाँदकी तरह निखरता जाय और हमें अपने नामके अनुसार हमेशा भरपूर ज्ञान और आनन्द देते रहें।

सन् १९७६ में षष्ठिकी पूर्ति कर आप ६१-६२ में चल रहे हैं। आशा है यह क्रम १०० को लांघ जायगा और तब तक आपके चेहरेकी यह लालिमा ज्योंकी त्यों बरकरार रहेगी।

परम्पराके अनुसार आपको 'ज्ञान प्रभा' की उपाधि ससम्मान देते हुए हम अपनी बिरादरीमें शामिल कर रहे हैं ताकि आपसे हुक्का-पानी चालू किया जा सके।

—विश्वनाथ मुखर्जी

●

ठलुआ कुवेरकी पत्नीने बीच रास्तेमें रिक्शा रोककर कहा—ठलुआ क्लबमें सब सरवउला, मरकिनौना लोगनके वो ताअउ जाला। हमनेके काहे नाहीं बोलउतऽ। अबकी हमरे घरे गाना-बजाता करावऽ। नाहीं तऽ कब्बो अइलऽ घरे तऽ चाय के कहे, कुक्कुर लहवा देवऽ।

इस अल्टीमेटम को सुनकर ठलुआ वीरको पसीना आ गया। सौभाग्यसे आसपास कोई नहीं था। ठलुआबीर को मालूम है कि इनके घर दो जबरदस्त कुत्ते हैं। किसी प्रकार से अपनी जान बचाने के लिए ठलुआबीर मुस्कराकर भागे।

फलत: २७ जनवरी ७९ को वसन्त गोष्ठी की सूचना देनी पड़ी। जाड़ेका मौसम। हलवाई चूड़ा, मटर, मगदल बना रहा था। दूसरी ओर उबाले हुए सिंघाड़े तले जा रहे थे।

कार्यक्रमका समय होने पर जब गणपति नहीं पधारे तो श्री गणेश सिंह मानव को अध्यक्ष बनाकर बैठाया गया। पण्डित कल्याणाजो नागरने शंख ध्वनि और मंगलाचरण किया। पर कार्यक्रमका संचालन हरिराम द्विवेदीने अपने हाथ ले लिया।

तुरत उन्होंने कहा—आजकी गोष्ठीमें केवल चैती का प्रोग्राम होगा। चूंकि यह गोष्ठी महिलाओंके लिए आयोजित की गयी है, अतएव उनके लिए चैती हो। जो लोग चैती नहीं सुना सकते, वे गीत प्रस्तुत करेंगे।

इस घोषणाके बाद सर्वप्रथम उद्धव प्रसाद द्विवेदी, विनय श्रीवास्तव हरिराम तथा अभयनाथ तिवारीने चैती प्रस्तुत किया। बादमें अध्यक्षने कहा—आज जब गीत गाने को कहा गया है तब मैं भी एक गीत सुनाना पसन्द करूंगा।

श्री गणेश सिंह मानवकी यह रचना बहुत उत्तम रही। इसके आगे सभी लोग फीके पड़ गए। इसके बाद तय हुआ कि जलपान हो जाय। अभी लोग जलपानका दोना ले ही रहे थे कि ठीक इसी समय कबाब में हड्डी की तरह गणपति पधारे और बोले—मेरी गाड़ी रास्तेमें पंचर हो गयी थी. क्या बतायें।

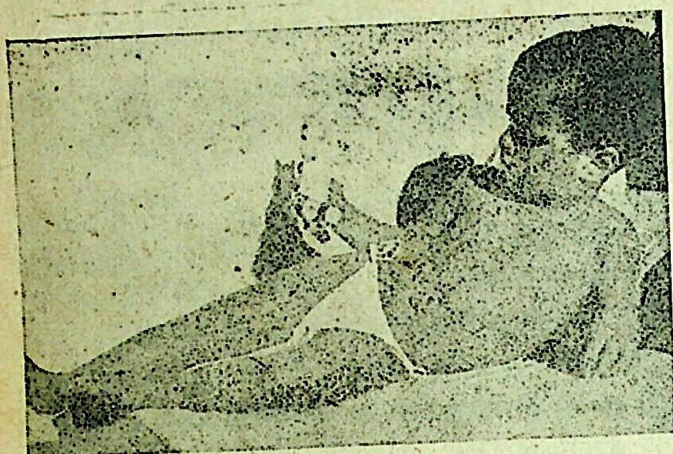
जलपान के पश्चात् श्रीमती कुसुमगिरि श्रीमती संतोष श्रीवास्तव और विनय प्रकाशने अकेले और सम्मिलित स्वरमें चैती प्रस्तुत किया। आपके साथ आकाशवाणीके कलाकार हारमोनियम तथा तबले पर संगत करते रहे।

इसमें सन्देह नहीं कि कार्यक्रम बहुत सुन्दर हुआ और सभी प्रसन्न हो गये। एकाएक ठलुआवीर को मृगीका दौरा आया और वे खड़े होकर बोले—काशी तीन लोकसे न्यारी है। धार्मिक नगरी है, पर उसी प्रकार यहाँ खतरनाक हस्तियाँ हैं। गुण्डे, डाकू, चोर, खूनी भी काफी तायदादमें है। आजकी इस गोष्ठीमें उनके सरदार मौजूद हैं। वे मेरे मामा हैं। इस मामा की कृपासे मेरा आजतक कत्ल नहीं हुआ। मेरे घर चोरी-डकैती नहीं हुई। मैं उनसे अनुरोध करूंगा कि वे धन्यवाद देकर आजकी गोष्ठी समाप्त करें।

गणपति श्री जसवन्त मेहता ने खड़े होते हुए कहा—मैं आज जब आया तो देखा—चारों ओर सन्नाटा है। बाहर दरवाजे पर कुत्तेसे सावधानका साइनबोर्ड लगा है। बाहर खड़े एक सज्जनसे कहा—साहब, क्या भीतर आ सकता हूँ। उन्होंने कहा—आइये। मैंने कहा—यह साइनबोर्ड देखकर हिचक रहा हूँ। तुरत उन्होंने कहा—आपको नहीं मालूम? विश्वनाथ मुखर्जी आ गये हैं।

जोरोंसे ठहाका लगा। पुन: आगे उन्होंने कहा—बहुत दिनोंके बाद एक शाम अच्छी गुजरी। इस आयोजनके लिए गुलाबजी तथा उनकी पत्नी को धन्यवाद। खासकर जलपान दिव्य रहा।

केडियाजी बोले—इसका अर्थ यह है कि कार्य-क्रमने जलपान ही अच्छा रहा।



सरदार गुरुचरन सिंह—बचपन में। चित्र—बाबू बदरी प्रसाद गुप्तके सौजन्यसे प्राप्त।

तेरहवीं गोष्ठी (१२६)

इस बार होली पर कायदेका कोई मुर्गा जब ठलुआ बीर नहीं फाँस सके तो होली बाद २४ मार्च शनिवारको होली-उतार गोष्ठीमें नगरके प्रसिद्ध इन्जीनियर सरदार गुरुचरण सिंह उर्फ कांके वाबूके मुण्डनका निमन्त्रण बाँट दिया। इस बार ठलुआश्री विजय कुमार साहके असामयिक निधनके कारण होली गोष्ठी नहीं की गयी।

शंखध्वनिके बाद, वेदपाठ और विधिवत पूजन किया गया। सरदारको तरकारियों की माला पहनायी। ठलुआवीरने कहा—आप एक ऐसे सरदार हैं जिसके पास एक अदद दाढ़ी भी नहीं है।

तुरन्त केडियाजीने कहा—मैं जानता था, इसलिए सवा दो रुपये में दाढ़ी खरीद लाया हूँ। सरदारजी को पहना दो।

सरदार गुरुचरन सिंहने बिना चीं-चपड़ किए दाढ़ी पहन ली। इस अवसर पर सरदारजीके सम्बन्धमें अनेक रंगीन कहानियाँ सुनाई गयी जिसे सुनकर लोग इतने प्रसन्न हुए कि दनादन तोपके गोले छोड़ने लगे। सबसे अधिक तोप देवानन्द, देवीकान्त और केडियाजीने दागा।

तभी केडियाजीने कहाकि आज मैं लतीफा सुनाऊँगा। बोले—काशीमें मेरे एक मित्र जो बाहरसे आये थे, कार पर मैदागिनसे गुजरेतो वहाँ कई गधे दिखाई पड़े। मित्रने मुझसे कहा—बनारस में गधे बहुत दिखा दे रहे हैं।

तुरन्त मैंने कहा—जी हाँ, यहाँ नित्य बाहरसे हजारों गधे आते रहते हैं।

एक ठहाका लगा तो केडियाजीने दूसरा सुनाया—एक सज्जन घोड़े पर सवार होकर मिशिगिनीके एक कस्बे से गुजर रहे थे। अचानक एक साइनबोर्डमें उनकी नजर उठ गयी जहाँ लिखा था—यहाँ पाँच डालरमें डाक्टरेटकी डिग्री दी जाती है।

हजरत भीतर गये। पाँच डालर दिया और डाक्टरेक्ट की डिग्री लेकर चल पड़े। कुछ दूर जाने पर उनके मनमें यह विचार आया कि जब पाँच रुपयेमें डाक्टरेक्ट की डिग्री मिलती है तब अपने घोड़ेके लिए भी ले लूँ। कमसे कम एक डाक्टर दूसरे डाक्टर पर सवारी करता रहेगा।

यह विचार मनमें आते ही वे लौटे और उक्त कार्यालयवालोंके सामने अपना मन्तव्य प्रकट किया।

उन लोगोंने कहा—यहाँ घोड़ोंको डाक्टरेट नहीं दी जाती। हम केवल गधों को देते हैं।

आभार प्रकट करते हुए सरदार गुरुचरनने कहा—आप मेरा मुण्डन करनेवाले थे, जानकर मैं सब बढ़ाकर आया था। पर बिना पानी, बिन छूरा-चमोटाके आप लोगोंने ऐसा मुण्डन किया कि अभी तक मेरा छरछरा रहा है अंग।

धन्यवाद देते हुए गणपतिने कहाकि आज आपका मुण्डन करके हम गदगदायमान हैं। आपकी इमारत बुलन्द है जैसे आगरे का बुलन्द दरवाजा। आपको तकलीफ जरूर हुई, पर अब राहत अनुभव करेंगे।

॥ अभिनन्दन पत्र ॥

हे सरदार गुरुचरन जी,

इस विश्वके निर्माता विश्वकर्माजी थे जो आजके युगमें इंजिनीयर कहलाते हैं यानी जातिके लोहार, उपाधिसे शर्मा और कर्मसे निर्माणकर्ता। आप उसी गोत्र-वंशके हैं। फर्क यही है कि आपके नामके पीछे सिंहकी पूँछ है जो खानदानी है यानी आपने अपना केंचुल नहीं बदला है।

अब तक हम साहित्यकार, कलाकार, चित्रकार, मूर्तिकार, पत्रकार और बेकार लोगोंका मुण्डन करते आये हैं और आज एक ठीकेदारका करने जा रहे हैं। होलीके बाद आपके आगमन से हमें ऐसा लग रहा है जैसे औरंगाबाद सरायके फाटकका एक पल्ला यहाँ आ गया है। यों आपकी इस कायाको देखकर ऐसा लग रहा है जैसे राजघाटके पुलका एक पिलर मौजूद है।

भगवान इस संसारमे कुछ शक्लें ऐसी भेजते हैं जिसे वे खुद अपने हाथ से बनाते हैं जिसे देखकर कलेजे पर हाथ रखकर कहना पड़ता है—'वाह राजा चक्कू!' दूसरी ओर अधिकांश शक्लें ठीकेदारोंसे बनवाते हैं जिसमें एक-चारका नहीं, एक-सोलहका मसाला लगाया जाता है। कभी-कभी गारेकी भी जोड़ाईकी जाती है। आपकी शक्ल ठीकेदारोंसे बनवायी गयी है, पर मसालेकी खपत अच्छी हुई है। आपकी शक्लका नक्शा किसी रसालिये ड्राफ्टमैनसे बनवायी गयी है। आपकी यह काया जिस पर न जाने कितने मिस्त्रियोंने अपना हथियार रगड़ा होगा तब कहीं जाकर अशोककी लाटकी तरह पालिसदार हुई है। आपकी यह खोपड़ी जो कि रूसवा कोंहड़ाका नमूना है; अगर इसे मोहन बागान-ईस्ट बेंगालके खिलाड़ी देख लें तो इसी नमूनाका वे फुटवाल बनवा सकते हैं।

हे कांके बाबू,

आजसे ४७ वर्ष पूर्व यानी संवत् १६८६ की भैरव अष्टमीके दिन आप उस मुहल्लेमें पैदा हुए थे जिसके बारेमें कहा जाता है—'काशी बस क्या करे जब घर औरंगाबाद।' प्राचीनकालमें भले ही औरंगाबाद मुहल्लेकी अप्रतिष्ठा रही हो, पर अब वहाँ पण्डित कमलापति त्रिपाठी से लेकर अनेक नामी बरई रहते हैं। अधिक दूर क्यों; मेवा हैवी इसी मुहल्लेकी देन है जो आपका गुरु रहा है। आजकल आप उसका स्थान ले रहे हैं।

आपके आगे, पीछे सरदार, बगलमें बरेठा और बरई रहते हैं। आपका यह निखरा हुआ स्वास्थ्य सरदारों द्वारा प्रदत्त मलाई-रबड़ीसे बना हैं। गाटरकी तरह हाथ, खिंभकी तरह पैर, बरनकी तरह सख्त काया, छड़ जैसी मजबूत उंगलियाँ हैं। गंगा बालूकी तरह हुस्न, सुर्खीकी तरह गालोंकी ललाई, अलकतरा की तरह मूँछें, तसलाकी तरह तोंद है। आपके सौन्दर्यकी बड़ाई करना चण्डीगढ़, बंगलोर, जयपुर नगरीके स्थापत्य कलाकी प्रशंसा करना होगा।

बचपनमें आप अपने पड़ोसी लूले नवाबके साथ औरंगाबाद प्राइमरी स्कूलमें गुल्ली-डण्डा खेलते रहे। आगे चलकर सेण्ट्रल हिन्दू स्कूलमें हाकी खेलने लगे। यहाँसे निकलकर आप काशी हिन्दू विश्वविद्यालयमें फुटबाल खेलने लगे। जिस दिन आपके पूज्य पिता सरदार लाल सिंहको यह मालूम हुआ कि आप बी० एस० सी० इंजिनीयरिंगमें पास हो गये हैं, उसी दिन एक बिड़वा देकर बोले—चलो बेटा, अब ईंटा-गारा उठाओ। अब तक थ्योरी पढ़ते रहे, अब प्रैक्टिकलके क्षेत्रमें आओ।

नतीजा यह हुआ कि आप मिस्त्रियोंके साथ गारा ढोनेसे लेकर पाइट बाँधनेका कार्य करने लगे। आपकी खोपड़ीमें यह जो गंज उभड़ा है, यह ईंटा तथा गारा-मसालाके तसला ढोनेकी निशानी है। अब कोई मिस्त्री

या मजदूर आपको उल्लू नहीं बना सकता, क्योंकि बसूली चलानेसे लेकर गिट्टी फोड़ना आपको अच्छी तरह आता है।

आपका कहना है कि मैं कई जन्मोंसे ठीकेदार हूँ। अशोककी लाटसे लेकर कुतुबमीनार तक मैंने बनाया है। शेख सलीम फाटकसे लेकर औरंगाबादकी सराय मेरी देखरेखमें बने हैं। संभव है यह बात सही हो, क्योंकि हम पूर्व जन्ममें विश्वास नहीं करते। इस जन्ममें आपने बैंक आफ इंडिया, रामघाट अस्पताल, इंडियन मेडिकल असोसियेशन, क्लार्क होटल, होटल डी पेरिस, डाक बंगला, पंजाब सिन्ध बैंक, गया प्रसाद ज्योतिषी का भवन बनवाया है। यह सब आपके पूज्य पिता श्री लाल सिंहके शागिर्दी की देन है जो आप कुशीनगरसे इलाहाबाद तक ठीकेदारी कर रहे हैं।

आपके दादा रायबहादुर गंगा सिंह भारतके प्रथम सिविल सर्जन थे जिनके पुत्र सरदार लाल सिंह इंजीनियर हुए। बहुत दिनों तक पुत्र नहीं हुआ तो वे अपने गुरुके पास गये। उनकी चरण सेवा करनेपर लाल साहबकी मनोकामना पूरी हुई, इसीलिए आपका नाम गुरुचरन सिंह रखा गया।

आप सरदार हैं, पर आपके पास न दाढ़ी है और न कृपाण। यहाँ तक कि पगड़ी भी नहीं है। आपके पूज्य पिता अपने नामके अनुसार लाल पगड़ी जरूर पहनते थे। यह ठीक है कि आपके घरमें एक खानदानी घड़ी है जिसमें हरवक्त १२ बजा रहता है। पता नहीं, यह आपकी खानदानी घड़ी है या ससुरालसे मिली है। इस दृष्टिसे आप बनारसी सरदार हैं।

आप नित्य सुबह उठकर बम्बेके पानीसे नहीं नहाते। सूरजकुण्डमें डुबकी लगाते हैं और एक लोटेमें पानी-माला लेकर पान दरियाके प्रत्येक दुकानदारके यहाँ पण्डितोंकी तरह फेरी लगाते हैं जहाँ से आपकी सुर्ती-सोपाड़ी फ्रीमें प्राप्त होती है! पान आप नहीं खाते। केवल सुर्ती-सोपाड़ी चुभलाते हैं। लोटेका शेष पानी घरके सामनेके बरगदमें गिरानेके बाद मंदिर और कुएँका फेरी लगाते हैं। संतोषी माताके आप भक्त हैं शुक्रवार को खटाई नहीं खाते।

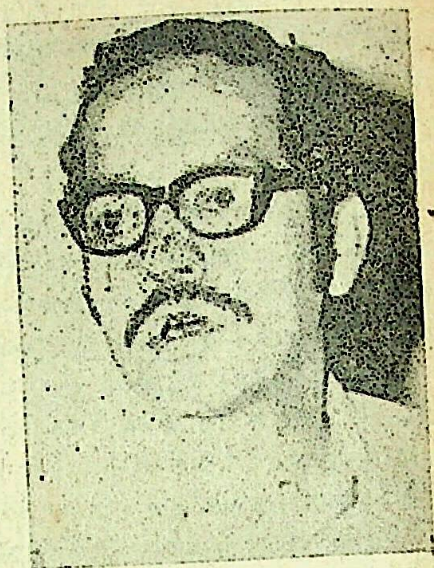
शाम को आप अपने बैठकमें दरबार लगाते हैं जहाँ हर तरहके बुलबुल, मैना, कौवा, तोता और कुछ उल्लू भी आते हैं जिन्हें निखालिस गायकी चाय पिलाते हैं। कभी-कभी ढोलक मजीरापर इनके साथ भांगड़ा नृत्य भी करते हैं। ऐसे मौकेपर कोई आकर पूछता है—'भइया, कल कहाँ गिराइब?' आप तुरत उसे गिरानेका स्थान बता देते हैं। आपके पास नगरके सभी, ईंटा, सुर्खी, बालू गिरानेवाले आते रहते हैं।

सुना गया है कि जब आपके पास एक अदद मूँछ आ गयी तो एक दिन बाथरूममें आप गीत गाते मिले—'गोरी बाँकी छोरी, कभी-कभी हमारी गली आया करो।' इस गीतको सुनते ही आपके पिताका माथा ठनका और उन्होंने आपको भंडारीके भंडारेमें नाथ दिया ताकि आगे चलकर आप किसी दूसरे नादमें मुंह न डाल सकें। आज पत्नीव्रत पतिकी तरह आप एक दर्जन भर जायज-नाजायज बच्चोंके अब्बा हैं।

अपनी परम्पराके अनुसार आज आपको 'ठलुआ सरदार' की उपाधि देते हुए अपनी बिरादरीमें रख ले रहे हैं ताकि आप बनारसी जीवनका आनन्द ले सकें।

(विश्वनाथ मुखर्जी)

आप ही हैं पण्डित शंभुनाथ मिश्र जो पिपलानी कटरा के कोठे पर पी० आई० बी० में दरवाज़े पर पर्दा लटकाये बैठे रहते हैं और जितने वी० आई० पी० आते हैं, उनका स्वागत सत्कार करते हैं।



शक्लसे जियाउलहक पाकिस्तानी हैं

चौदहवीं गोष्ठी [१२७]

हिन्दी साहित्य में महेन्द्र राजा की तरह प्रसिद्ध शंभुनाथ मिश्र पर बहुत दिनों ठलुआवीर की शनि दृष्टि थी। लेकिन वे हैं—बिहारी, इसलिये उनका अभिनन्दन टरकता रहा। एकाएक एक दिन उन्हें स्वप्न दर्शन हुआ कि शंभु की नगरी में हर-हर महादेव शंभु का होना चाहिए।

इस स्वप्न का अर्थ जब आचार्य पण्डित सीताराम चतुर्वेदी से पूछा गया तो उन्होंने कहा—किसी शंभु से तुम्हारा सम्बन्ध है।

काफी देर बाद शंभुनाथ मिश्र का नाम याद आया तो उन्होंने सोचा—इतना महत्वपूर्ण व्यक्ति को अब तक पूछा नहीं गया। वेचारा कलकत्ता, पटना, भोपाल, दिल्ली घूमकर पुनः अपना अभिनन्दन करवाने काशी आ गया है। इस निश्चय के बाद यह तय हुआ कि २८ अप्रैल १९७९ को इनका मुण्डन कर दिया जाय।

ऐन २८ अप्रैल शनिवार के दिन टेलिफोन की घंटी बजी और शंभु ने कराहते हुए कहा—मेरे .... में फोड़ा हो गया है। मैं बैठ नहीं सकूंगा।

ठलुआबीर झल्ला गये। ऐन टाइम पर अल्टिमेटम दिया जा रहा है। फोड़े को आज ही निकलना था और ऐसी जगह ? क्या करते। लाचारी में अभिमन्यु पुस्तकालय के दरवाजे पर जम गये। जो जो लोग आये, सभी को दरवाजे से विदा कर दिया। फिर भी कुछ लोग जमे रहे।

आचार्य पण्डित सीताराम चतुर्वेदी जो दौड़े हुए आये थे। उन्होंने कहा—देर हो जाने के कारण लपकता हुआ आ रहा हूं। कहाँ गया शंभु ?

एक ठलुए ने कारण बताया तो चतुर्वेदीजी ने कहा—तब गोष्ठी समाप्त करो। चलो चला जाय।

लोग ज्योंही चलने को उद्यत हुए तो देखा गया कि एक खाट पर लेटे हुए शंभु ऊपर आ रहे हैं। यह दृश्य देखकर एक ने कहा-इस हालत में आपको नहीं आना चाहिए था।

खाट पर से कराहते हुए शंभुनाथ मिश्र उठे। कहारों को मजदूरी देने के बाद बोले--इतने दिनों से साहित्य सेवा कर रहा हूँ, कोई टके को नहीं पूछता। कम से कम ठलुआ क्लब में अपना अभिनन्दन करवा लूं। अगर मौका चूक गया तो मुखर्जी फिर नहीं पूछेगा। बहुत ही कत्तई है।

अब लोग पुनः बैठे। जिस जलपान का आर्डर रद्द कर दिया गया था, उसे पुनः आदेश दिया गया। मंगलाचरण, माल्यार्पण के बाद पहले चुनाव हुआ। इस वर्ष के लिये पुनः पं० सीताराम चतुर्वेदी गणपति निर्वाचित हुए। बाकी पदाधिकारी ज्यों के त्यों बने रहे।

अभिनन्दन पत्र विश्वनाथ मुखर्जी ने भेट की। इस अवसर पर कुछ भयंकर शुभ कामनायें आयी थी जिसका पारायण स्वयं लिखने वालों में से कुछ ने किया और शेष विश्वनाथ मुखर्जी ने पढ़कर सुनाया--

श्रीरंजन सूरिदेव—पटना

सप्रेम शनिस्मरण।

मान्यवर निठल्लेशजी, आपका २०/३ का भूताग्रह-पत्र।

ठलुआ क्लब द्वारा आयोजित मिश्राभिनन्दनके सन्दर्भमें शुभकामना माँगकर आपने मुझे 'गुरु' के गौरवसे अलंकृत किया है। निश्चय ही, ठलुआ क्लब जैसी संस्था सप्तलोक क्या, चतुर्दश भुवनसे न्यारो है। आपकी संस्थाकी शनिदृष्टि इस बार उचित ही शम्भुनाथजी पर पड़ी है, क्योंकि वे ठलुआ लोगोंको महिमान्वित करनेवालोंमें अपनी द्वितीयता नहीं रखते। आशा है, इस अभिनन्दनसे मिश्रजी प्रोत्साहित होंगे और ठलुआ लोगोंको निरन्तर अपने दिशा-निर्देशनमें, जोरदार ढंगसे ठलुआपन फैलानेकी प्रेरणा देते रहेंगे।

मेरी हार्दिक शुभकामना है, मिश्रजीके नेतृत्वमें ठलुओंका ठाठ बड़ेसे बड़े कर्मठोंके लिए भी स्पृहणीय बने। मुण्डन-पर्व सफल हो। सद्भावना सहित बटुकका वर्चस्व बढ़ता रहे।

श्री गोविन्दप्रसाद केजरीवाला —नयी दिल्ली

जीओ राजा !

सोचता हूँ इतने······के रहते मुखर्जीने शंभु को ही क्यों चुना ! तो शंभुकी तस्वीर मेरे जेहनमें उभरने लगी। बहुत मंथनके बाद मुझे मुखर्जीका निर्णय सही लगा। शंभु सच्चे अर्थोंमें ठलुआ है। घूम-फिरकर वह बनारस ही पहुँचता है। उसे दिल्ली भी रास नहीं आई। अपना घर (पटना) भी उसे काटने को दौड़ता है। न घर का न घाट का ! इतने घाटों का पानीके बावजूद।

सभी ठलुओंमें एक अदा होती है। शंभुमें अपने ढंगकी अदाकारी है। संगीतकी तालपर वह उठता-बैठता है। कहाँ किसने ताल और लयके मामले में गलती की, इसे वह नोट करता है और बादमें दुनिया-जहानमें उसकी मुनादी करवाता है। द्रुतमें उसका विश्वास कम है। एक सच्चे ठलुए की तरह विलम्बित में ही मस्त रहता है। आश्चर्य है कि मुखर्जी--जैसे द्रुतके साथ भी उसने अपनी संगत बैठा ली। संगत जैसी भी हो शंभुका इससे कुछ बनता-बिगड़ता नहीं। वह तो अपने ठेंगेपर खुदको ही रखे हुए गुनगुनाता रहता है—मोहे पनिया भरन ना दे······मोहे······

जीओ राजा, जीओ ! जितना जी चाहे जीओ !!

श्री लक्ष्मीशंकर श्रेष्ठ—वाराणसी

मुखर नापित प्रवरसे जब मेरे मित्र श्री शंभुनाथ मिश्रके मुन्डनोत्सवकी सूचना मिली तब पहले तो आश्चर्यचकित हुआ और बादमें गंभीर। चाहा कि कुछ पूछूं, लेकिन तबतक ढिंढोरची को नाईं मुखर नापित प्रवर किसी दूसरे दरवाजेपर हांक लगा रहे थे।

उन्नीस वर्षोंकी लम्बी अवधिमें मालूम न हुई बात उजागर होनेपर आश्चर्यचकित होना अस्वाभाविक नहीं था। साथ ही बुर्केमें ढंको लिपटी अन्य अनेक बातोंका भी पर्दाफाश होनेका गंभीर सुख भी प्राप्त हुआ।

हमारे नेपाली भाषामें एक शब्द है –'ठालु'। 'ठालु' अर्थात् गांवका प्रमुख, प्रतिष्ठित, प्रभावशाली, अदब–अनुशासनप्रिय, रोबदाब वाला। तो प्रथम हृदयका पर्दा जो उठा तो ठलुआ अर्थात् 'निठल्लुओं' का क्लब—इस भ्रान्तिपूर्ण अवधारणा का भवन भहरा पड़ा। और साथ ही ठलुआ क्लबके 'ठालुओं' का व्यवसाय भी समझमें आ गया। 'ठालुओं' की बात सामान्य तौर से न समझने वालों के लिए 'क्लब' रूपी शस्त्रोपायका उपयोग भी 'ठालुओं' की पारंपरिकताके ही अनुरूप स्वयं सिद्ध है।

यमराजके सहोदरों वैद्य हकीम, डाक्टरोंके विषयमें कहा जाता है कि जबतक वे दस-बीस प्राणियों को अपने अग्रजके पुरमें भेज नहीं देते तबतक वे कुशल चिकित्सक नहीं कहलाते। इसी प्रकार यह जनश्रुति है कि जबतक प्रशस्त परिमाणमें मूड़ने, काटने, लूटनेमें महारत हासिल नहीं होती, तबतक कोई 'ठालु' बन नहीं पाता। ठलुआ क्लब अपने उन्नीस वर्षोंके जीवनमें अभीतक सिर्फ मूड़नेका आयोजन करता आ रहा है, यह गनीमत है। जब काटने लूटने लगेगा तब? तब जैसे राजा से महाराजा!

मनोरंजक ढंग, मनोरंजक वातावरण, मनोरंजक भाषा और मनोरंजक शैली—इन चतुर्विध दीवारोंकी

घेरेबन्दीमें मूड़न किसका है ? शंभुनाथ का ! कौन शंभु ? जो स्वयं आनन्दस्वरूप और दूसरोंको भी आनन्द देनेवाला है। परन्तु इस 'शंभु'के साथ जुटा 'नाथ' क्या बला है ? गोरख-सम्प्रदायी 'नाथ' ? बैलका 'नाथ' ?

तो ऐसे वटुक शंभुनाथका मूड़न ! पंछिनमें कौव्वा, मनइनमें नौव्वा। मुखर नापित प्रवरने शंभुनाथके लिए 'वटुक' शब्दका प्रयोग यों ही किया होगा—साधारण परंपरा की निर्वाह के लिए ? समझमें आने लायक बात नहीं। 'वटुक' शब्दमें, लगता है, मुखर नापित प्रवरका छुपा-छिपा अभिप्राय है—'अरे ! तू भले ही अपनेको शंभुनाथ कहे, लेकिन मेरे सामने अभी तू है 'छोकरा' ही; भले हो तू सूचना अधिकारी है, लेकिन मैं तो तुझे 'सिम्पलटन' ही समझता हूँ।

आज तक लोगों को इसी प्रकार 'वटुक' बनाकर मूड़ा जाता रहा होगा ! राम ही रक्षा करें ऐसे 'ठलुओं' के मुखर नापित प्रवर से !

लेकिन अपनी मुखरताके झोंकमें मुखर नापित भले ही शंभुनाथको 'वटुक' कह 'सिम्पलटन' सिद्ध करना चाह रहे हों, शंभुनाथ की वास्तविकता कुछ दूसरी ही है। शंभुनाथ वह 'बिहारी' नहीं जिसको 'बुद्धू' कहा जाता है। दूसरों का शौक पूरा करने-करानेके चक्करमें स्वयं हो उस शौकमें गुपचुप निमग्न हो जाने वाले 'गुरु' शंभुनाथ बनारसी रंगमें कितने अन्दर तक तराबोर हैं यह बात इसीसे सिद्ध होती है कि वह 'झाँकते नहीं, कर गुजरते हैं' वज्र बन बिजली की सी तड़प से !

ऐसे सिद्ध 'वटुक' शंभुनाथके मुण्डनोत्सवपर शुभकामना किसके प्रति व्यक्त करूँ ?—मुड़वाने वालेके प्रति, मूड़नेका आयोजन करनेवालोंके प्रति या मूड़नेवाले मुखर नापित प्रवरके प्रति ! तीनों ही बिलगाये न जा सकने की स्थितिमें गड्डमगड्ड हैं, इसलिए जो जिस 'पोज' में हो, उसी स्थितिमें मेरी बधाई और शुभकामना स्वीकार करें।

श्री ललितकुमार शर्मा 'ललित'

आप, शम्भुनाथ मिश्रका मुण्डनकर रहे हैं—इससे मुझे विशेष खुशी पहुँची है। समाचारोंको बाँटनेवाला खुद बन रहा है। यह मेरी दिली इच्छा थी कि शम्भुनाथका मुण्डन आप करें, क्योंकि इसके रोएँ-रोएँमें ठलुआओंके लक्षण भरे पड़े हैं। काशीसे इस आदमीका इतना लगाव है कि भारत-सरकारके हटानेसे भी घूम-फिरकर ठलुआ काशी ही चला आता रहा है। देखनेमें माटीका लौंदा दिखाई देता है, लेकिन आपको पता नहीं होगा कि उसकी मिट्टीमें चुम्बकीय धातुका मिश्रण है। और यह मिश्रण कामकाजी व्यक्ति को ठलुआ हो जानेके लिये खींचता रहता है। उसके मुण्डनके समय सावधान रहियेगा कि कहीं अपना 'मिसिरमन' रख न ले यानी चुटिया भी न रहे।

यह पूर्वजन्म बौद्ध था। नालन्दासे गुजरते समय बख्तियार खाँने सैकड़ों गाँवोंके हजारों बौद्ध-जनताको मौतके घाट उतार दिया था। जिनके सिर मुड़े हुए थे और उनके घरोंमें पुस्तकोंका अम्बार था। उसी एक घरका शम्भुनाथ सदस्य था। इसीलिए देखनेमें शम्भुनाथ बौद्ध-भिक्षुओंकी तरह दिखाई देता है। नितान्त सरल व्यक्ति ! ऐसे मानुष ठलुआको आशीर्वाद ! वह भी केवल दो घण्टेके लिए।

शकूर मियां टेलर मास्टर, २४१ बी० चोर बागान, कलकत्ता

आपका खत मिला। मुझे यह जानकर बेहद खुशी हुई कि आप जनाब मिश्राजीका इस्तकबालकर रहे हैं। बाबूजी बड़े मीठे स्वभावके हैं। खुदा उन्हें लम्बी उम्र दे। वे मेरे पुराने ग्राहक हैं। कलकत्ता रहते वक्त मेरी दुकानसे कपड़े सिलवाते रहे। मैं भी उन्हींके गाँवका हूँ।

श्री कुबेर चौरसिया, बनारस

मिसिर भइया कऽ जे दिन अभिनन्दन होई वो दिन हमउ आइब। ओ दिन हमरे ओरसे सबके मगही कऽ दिय जोड़ा देहल जाई। मिसिर भइया हमार फोटो बनारसी पानके संगे धरमयुगमें जबसे छपवा देहलन तबसे हमार नाम सरनाम हो गयल।

श्रीमती रामदेई इस्सर गंगी, बनारस

मोर मिसिर भइया जुग जुग जिये। ओनकर बाल बच्चा निके रहे। ओनकर मेहरारू सोहागिन बनल रहे। इस्सरगंगीमें जब रहत रहलन तब ओनके घरे कऽ सब काम हमई करत रहली। जगतगंज रहलन तब्बौ जात रहली। आजकल बड़ा दूर चल गयल हउवन। ओतना दूर चउका बरतन करे अब जायके मउका नाहीं मिलत।

श्री विश्वभंरनाथ वाशिंग कम्पनी, इन्दौर रोड, भोपाल

शम्भु बाबू जबसे भोपाल गये, यहांके माहौलमें मायूसी छा गयी। आप यहाँ रहते वक्त शरद जोशी जो कि मेरी लाण्ड्रीके पुराने ग्राहक हैं, के साथ बराबर आते रहे और घरका सारा कपड़ा धुलवाते रहे। हमारे ताल्लुकात ग्राहक दुकानदारका न रहकर भाई चारेका रहा। एक साथ दुबेजीका टी स्टालमें चाय पीते रहे। बहुत दूर है बनारस, वर्ना मैं एक माला लेकर आ जाता।

श्री अभयनाथ, मधुर सैलून कम्पनी, सब्जी मण्डी, पटना

मुझे यह जाकर खुशी हुई कि मेरे जजमान मिश्रजीका आप अभिनन्दनकर रहे हैं। वे मेरे गहरे दोस्त हैं। अगर मोका मिला तो जरूर इस मोकेपर आऊंगा वर्ना आप लोग मेरी ओरसे एक माला पहना दें।

परम्पराके अनुसार लोगोंने विभिन्न प्रकारके उपहार किये। सन्तरे, बिस्कुटकी माला, पुस्तक, कलम तथा अन्य सामग्रियाँ।

बनरस रस पाइये, रसिक रसीली पास।
जैसे साँठेकी कठिन गांठी भरी मिठास॥
★
चम चमात चंचल नयन, बिच घूंघट पट झीन।
मानहु सुर-सरिता विमल, जल उछरत जुग मीन॥
—बिहारी

इस अवसर ठलुआवीरने शम्भुनाथ मिश्रके उन पत्रकार मित्रोंके नाम जमकर तर्वरा पाठ किया जो शम्भुसे लाभ उठाते हैं, पर इस समारोहमें नहीं आये।

अपने स्वागतके उत्तरमें मिश्रजीने कहा—मैं ठलुआ क्लबका सदस्य प्रारम्भमें था और मैं ही इसका प्रथम प्रचारक हूँ। इस दृष्टिसे मेरा मुण्डन करना स्वाभाविक रहा।

ठलुआ क्लबमें आकर मैं गौरवान्वित नहीं हुआ हूँ, यह तो मेरी संस्था है। अभी विभिन्न प्रकारके विशेषणोंसे स्थानीय पत्रकारोंके नाम तवर्रा पढ़ा गया। जानकारीके लिए बता दूँ कि अभी एक उद्घाटन समारोहमें गये हैं, जहाँ जलपान नहीं भोजनका डौल है।

अपने अध्यक्षीय भाषणमें शम्भुनाथको आशीर्वाद देते हुए श्रद्धेय पण्डित सीताराम चतुर्वेदी कहा—पण्डितोंमें एक बार विवाद छिड़ा कि अमृत क्या है? किसीने मिष्ठानको, तो किसीने आमको अमृत बनाया। एकने हिमालयकी तपोभूमिको बताया। ठीक उसी समय एक पण्डितने कहा कि न आम में अमृत है और न हिमालयकी कन्दराओंमें। मैं बताता हूँ कहाँ अमृत है। मत्स्य खण्डमें नीबूका रस डालकर अगर सेवन करें तो वही अमृत है। बंगाल और केरलके निवासी मत्स्य भोजी है, पर जिस विधिसे मिथिलाके लोग मछलीका सेवन करते हैं, उस प्रकार इन दोनों प्रांतोंके निवासी नहीं करते। ऐसी भूमिको त्यागकर जो व्यक्ति काशी जैसी नगरीमें आकर स्थायी रूपसे बस गया, वह वास्तवमें फक्कड़ ठलुआ हैं। जरूर काशीकी मिट्टी तथा यहाँके फक्कड़पनने इन्हें प्रभावित किया है। इस अवसरपर मैं इन्हें साधुवाद देते हुए इनके जीवनके प्रति मंगलकामना करता हूँ।

आपने बताया कि काशीमें एकसे बढ़कर साहित्यिक संस्थाएं हैं, पर आजतक किसी संस्थाकी रिपोर्ट सम्पूर्ण रूपसे प्रकाशित नहीं होती। ठलुआ क्लबके रिपोर्ताजोंपर जोधपुर विश्व विश्वविद्यालयके छात्र श्री नाथूराम शर्माने शोधपत्र प्रस्तुत किया है। इस शोधपत्रके निर्देशक हैं—डाक्टर महावीर सिंह गहलौत। यह ठलुआ क्लबके लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है। विश्वविद्यालयके अध्यापक और छात्र इस संस्थासे इतने प्रभावित हुए हैं कि काशीके ठलुओंको बुलाकर अपने यहाँ गोष्ठी करानेको सोच रहे हैं।

॥ अभिनन्दन त्र ॥

हे कविवर, कहानींकार, पत्रकार, संगीतकार, भाई शंभुनाथ मिश्रजी,

आप उस प्रान्तकी उपज हैं जहाँकी खदानोंसे कोयला, अबरक, लोहा, तांबा और किसिम किसिमके कवि निकलते हैं। भारतके अधिकांश खदानोंमें दो-चार महाकवि निकले हैं, पर बिहारमें गाहीके गाही कवि निकलते चले आ रहे हैं। अब तक हम मैथिल कोकिल विद्यापति को महाकवि समझते रहे, बादमें हिन्दीके प्रचार पत्रोंसे ज्ञात हुआ कि यह हमारा भ्रम है। बलियाके तुरन्ता भोजनालयकी तरह वहाँ भी अनेक महाकवि हैं। मसलन सर्वश्री रामधारी सिंह दिनकर, नागार्जुन, केदारनाथ मिश्र प्रभात, आरसी प्रसाद सिंह, जानकी वल्लभ शास्त्री, रामावतार पोद्दार अरुण, गुलाब खण्डेलवाल आदि दर्जनों महाकवि हो गये हैं। अभी कितने अनाम महाकवि हैं, इसकी जानकारी हमें नहीं है। चूँकि आप उसी प्रान्तके कवि हैं, इसलिए जवानी आते-आते आप भी महाकवि बन जायेंगे, ऐसी आशा है। आपकी कविताओंमें युगबोध, त्रासदी, संत्रास बोध काफी कूट छानकर ठूँसी हुई है। वह इतनी मात्रामें है कि जिसे सुनकर पटनामें जितने लभनीके वृक्षोंपर महाराजा विक्रमादित्यके वेताल निवास करते थे, वे सब जंगलोंकी ओर भाग गये हैं।

नयी कहानी लिखनेमें आपने युगान्तकारी कार्य किया है। सस्पेंस, कुण्ठा, रोमांच और सत्यसे परिपूर्ण कहानियाँ लिखनेमें आप बेजोड़ हैं। आजसे कई वर्ष पहले काशीकी स्तनामधन्य पत्रिका 'कहानीकार' में आपकी एक कहानी प्रकाशित हुई थी। आपने अपने खाली मकानकी चाभी अपने एक मित्र को एक विशेष कार्य सम्पन्न करनेके लिए दिया था और आफिसमें बैठे-बैठे मित्रकी सारी कार्यवाहियाँ कल्पनाकी आँखोंसे देखते रहे। आपकी इस कहानी की तुलना प्रेमचन्द्रकी 'मंत्र', कौशिकजीकी 'ताई', वृन्दावनलाल वर्माकी 'शरणागत', रांगेय राघवकी 'गदल' और प्रसादजीकी 'आकाश दीप' से की जा सकती है। उस कहानी को पढ़नेके बाद ब्रह्मदेव मधुरने तुरत अपना विवाह कर लिया।

आप संगीतके प्रेमी नहीं, विकट संगीतज्ञ भी हैं। संगीतकी सभी विधाओंमें आपकी घुसपैठ है। आपमें संगीतके प्रति जो उत्कट प्रेम है, वह हीराबाईकी देन है। बचपनमें आप श्री फणीन्द्रनाथ रेणुके साथ उन स्थानों पर जाते रहें जहाँ हीराबाइका कार्यक्रम होता था। हीराबाईके व्यक्तित्वने रेणुको इतनी प्रभावित किया कि उन्होंने 'तीसरी कसम' को जन्म देकर उसे अमर बना दिया और आप 'पिंजड़ेवाली मुनिया' गाते गाते संगीत-प्रेमी बन गये।

संगीतके क्षेत्रमें आपके एक-दो नहीं दर्जनों उस्तादजी हैं। उस्ताद अब्दुल हलीम जाफर खाँसे सितारे टुनटुनाना सीखा तो ज्योतिन बाबूसे सरोद। शास्त्रीय संगीत गिरिजा देवीसे सीखा तो तबला पीटना आशु बाबूसे। सारंगी रेतनेकी कला पण्डित शीतला प्रसादसे सीखा तो ढोलक बजाना लक्ष्मी शंकर श्रेष्ठसे सीखा। शहनाई बजानेकी कला आप उस्ताद बिस्मिल्ला खाँसे प्राप्त करते रहे। अभी झांझ, मंजीरा, मुरचंग, धुतुआ बजानेकी कला सीखना चाहते हैं। यह भी पता चला है कि इधर आपका झुकाव तेजीसे नृत्य कलाकी ओर बढ़ रहा है। शायद गोपीकृष्णसे कत्थक सोनल मानसिंहसे ओडिसी, बड़ोदा रहमानसे भरत नाट्यम' रुडरू स्वामीसे कथकली, जी० डो० बरुआसे मनीपुरी नृत्य सीख लेंगे। आजकल नित्य आकाशवाणीके हरि भइया आपको बिरहा-कजरीकी ट्रेनिंग दे रहे हैं इसके बाद ही आप काशीके संगीतज्ञोंकी तरह फारेनमें अपना कार्यक्रम देकर फारेन रिटर्नकी उपाधिसे विभूषित हो जायेंगे। काशीमें कुछ ऐसे रत्न हैं जो संगीतज्ञ होते हुए भी संगीतज्ञोंकी प्रवृत्तियों को नहीं अपनाया जिनमें पंडित शीतला प्रसाद अग्नि होत्री, आशु बाबू और आप हैं।

हे पटनाके नररत्न,

आप आगेसे, पीछेसे, नीचेसे, ऊपरसे कहींसे भी खाँटी मैथिल नहीं लगते। लेकिन नामसे पूरे बिहारी हैं। आपका नाम है—शंभुनाथ मिश्र। यह नाम अपने आपमें गलत है। अगर आपका नाम शंभुप्रिया, शंभुभूषण, शंभुलोक या शंभुवल्लभ होता तो ठीक था। शंभु नाम तो अपने आपमें पुल्लिंग है, फिर उसका नाथ यानी खसम कौन होगा ? धार्मिक दृष्टिसे शंभुका नाम ब्रह्मा या विष्णु हो सकते हैं, पर वह भी गलत हो गया है। शब्दकोशोंके अनुसार शंभुका अर्थ है - शिव, ग्यारह रुद्रोंमें प्रधान रुद्र, ब्रह्मा, विष्णु, बुद्ध, सिद्ध व्यक्ति, सफेद आकका वृक्ष, एक दैत्य तथा उन्नीस वर्णोंका एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरणमें क्रमसे सगण, तगण, भगण, दो मगण और अन्त गुरु हो। आपके नामोंकी इस हिज्जेमें कहींसे आपके नामकी सार्थकता स्पष्ट नहीं होती। आपके नामके दूसरे शब्दका अर्थ है—प्रभु, स्वामी, यानी खसम, भतार, पति, बैल आदिकी नाकमें बाँधनेवाला रस्सी। इस प्रकारसे आपके नामका न तुक मिलता है और न ताल।

जो कुछ असंभव होता है, वही बिहारमें संभव होता है। इसे अभी हालमें माननीय प्रधान मंत्री मोरारजी देसाई कह चुके हैं। बिहार ही वह प्रान्त है जहांके रईस और जमींदार हाथी पालते हैं। वहाँ इस बातके लिए होड़ मची रहती है कि कौन अपने दरवाजेपर कितना हाथी रखता है। पता नहीं, आपके गांवमें हाथी पालनेका शौक है या नहीं, पर आपके आफिसमें अक्सर कुछ सफेद काले हाथी आते हैं जिनके कारण आपको जमींदारीका सुख मिल जाता है।

हे मैथिल कोकिल,

आजसे ४१ वर्ष पूर्व जिला दरभंगाके नारायणपुर गांवमें आपने पंडित जगदीप नारायण मिश्रके घर १७ मई, सन् १९३८ को अवतार लिया था। आपकी क्यां-क्यां ध्वनि सुनकर गांववालोंने समझा कि डिप्टी कलक्टर साहबके यहाँ शंख ध्वनि हो रही है। आपके पिता डिप्टी कलक्टर थे, सो बिहारके विभिन्न अंचलोंमें उनका तबादला होता रहा। इस प्रकार आप मोतीहारीमें आठवीं तक तो पूर्णियामें आकर नवीं क्लास पास किया। किशनगंजमें दसवीं और सासाराममें मैट्रिक हुए। यह सन् १९५२ की बात है। छपरामें इंटर हुए तो पटनामें बी० ए०। पटनाके विश्वविद्यालय से एम० ए० और वहींके ला कालेजसे बी० एल० की उपाधि लेकर सड़कों पर गंजिंग करने लगे। वह इसलिए कि तबतक नौकरी करने लायक उम्र नहीं हुई थी।

शक्ल और आवाजसे जनानापन झलकनेके कारण आप महिलाओंमें काफी लोकप्रिय रहे। कालेज जीवनसे ही गीत गाते और नाटकोंमें महिलाओंकी भूमिका जमकर करते रहें। नौकरी पानेकी आशासे विभिन्न समाचार पत्रोंमें फोकटमें जाकर ट्रेनिंग लेते रहे। जब कोई खिलखिला नहीं बैठा तो एक बार हवाई जहाज चलानेके लिए इंटरव्यू देने चले गये। वहांके अधिकारीने आपको सिरसे पाँव तक देखनेके बाद कहा कि आप यहां हवाई जहाजकी सफाईके लिए जमादारके योग्य हैं। ब्राह्मण आदमी, जमादारका काम कैसे करते! नाराज होकर पटना चले आये और सेहत बनाने के लिए डण्ड पेलने लगे।

कहा जाता है कि जिन्हें कहीं नौकरी नहीं मिलती, वे ही लोग पत्रकार बनते हैं। जब सभी जगह आवेदन पत्र देते देते आप थक गये तब धीरेसे पत्र सूचना कार्यालयमें आ गये। दो वर्ष कलकत्तामें काली माईका दर्शन करनेके बाद बाबाके दरबारमें चले आये। यहां इतना मन रम गया कि फिर जानेकी इच्छा नहीं हुई। लेकिन सरकारने भोपालमें ताल और दिल्ली में कुतुब मीनार देखनेके लिए आपको वहाँ भेजा और अब तिकड़म लगाकर आप बनारस पुनः आ गये हैं। विचार है कि अब कभी बिहार नहीं जाऊँगा, क्योंकि बाबाके गण यहां इतनी आत्मीयता देते हैं जो पूरे भारतमें प्राप्य नहीं है।

जिन दिनों आप मोंछरोंइया जवान थे, उन्हीं दिनों स्वप्न दोषसे पीड़ित हो गये। सपनेमें आप जवाहरलाल नेहरु, सुचित्रा सेन और मीना कुमारी को देखते रहे। इलाजके लिए एक वैद्यजीके पास गये तो उसने कहा कि आप सपनेमें जो कुछ देखते हैं, उसे लिखकर लाइये तो इलाज करूँ। सो आप 'स्वप्न विद्ध' नामक एक पुस्तक छपवाकर ले गये। पूरी पुस्तक पढ़नेके बाद वैद्यजी बोले—इसका एक ही इलाज है। झटपट विवाह कर लो। तुम्हें जवाहरलाल जैसा सुंदर मीना कुमारी जैसी भावुक और सुचित्रा सेन जैसी नाजुक पत्नी मिलेगी। वैद्यजीकी भविष्यवाणी सफल हुई। सन् १९६२ में आपने भागलपुरमें एक ऐसी पत्नीसे विवाह किया जिसमें ये सभी गुण थे। इसके अमूल्य सहयोगसे आप अब तक चार नमूने संसार को दे चुके हैं। आगे देनेकी इच्छा नहीं है, क्योंकि कटवा चुके हैं।

हे ज्योतिषाचार्य,

कविके रूपमें आपने 'नहीं है' नामक काव्य संग्रह प्रसव करने बाद ज्योतिष संबंधी कई पुस्तकें लिखी हैं। मसलन 'भारत ब्रह्माण्ड और छाया पथ,' 'जन्म मास और आपका भविष्य', राशि रहस्य और आपका भविष्य' आदि पुस्तकें छपवा चुके हैं। बच्चोंके लिए 'साजों की कहानी' भी छपवाया है। यों आपका विचार है कि अवकाश ग्रहण करनेके बाद काशीके किसी चौराहेपर पंचांग लेकर लोगोंका भविष्य बताऊँगा। अगर उसमें सफलता न मिली तो साजोंकी मरम्मत करूँगा।

हे पत्रकार शिरोमणि,

आप बनारसियोंके सम्पर्कमें आकर बनारसी बन गये हैं मित्रके रूपमें आप हीरा हैं। कौन व्यक्ति किस प्रकृति का है, इसे झट भाँप लेते हैं। मित्रोंकी सहायता कर पानेके लिए हमेशा आतुर रहते हैं। स्कूली बच्चोंके स्लेट की तरह आपका दिल बिलकुल साफ है।

एक आप ही हैं कि जिसके दरबारमें ऐसे लोग भी आ जाते हैं जो दूसरोंको हमेशा ठेंगे पर समझते हैं। अगर आप दूसरोंपर अहसान करते हैं तो उसके लिए गर्व नहीं करते और न ढोल लेकर पीटते हैं। आपकी यह प्रवृत्ति हातिमताई की तरह है कि,नेकी कर दरिया में डाल।

शायद आप एक ऐसे व्यक्ति हैं जिसके मुंह पीछे कोई किसी प्रकार की आलोचना करता। सभी और प्यारा समझते हैं। आपकी यह पूँजी गर्व करने लायक है जो अनायास किसी को प्राप्त नहीं होता।

आज अपनी परम्पराके अनुसार आपको ठलुआ 'हातिमताई' की उपाधि देते हुए अपनी बिरादरीमें रख ले रहे हैं। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि आप इस उपाधिका प्रयोग घरके दरवाजेपर नेम प्लेटमें, लेटर पैडपर कर सकते हैं। हम भविष्यमें कभी इस पर रोक नहीं लगायेंगे, भले ही आप इसका कोई उपयोग करें या न करें।

(विश्वनाथ मुखर्जी)

पन्द्रहवीं गोष्ठी (१२८)

ठलुआबीर की बहुत दिनोंसे इच्छा थी कि चाँदनी रातमें एक गोष्ठी पर बजड़े पर हो। काफी दिन हुए जब बिहार बंक स्टेट बंक में बदल गया तबसे जानदार हस्तियाँ इधर-उधर बिखर गईं। यह विचार मनमें आते ही उन्होंने निम्नलिखित परिपत्र जारी कर दिया।

मान्यवर,

आपका बेटा जिये। आगामी शनिवार १२ मई बुद्ध जयन्ती (पूर्णिमा) को सायंकाल ७ बजे बजड़ा गोष्ठी होगी।

सूचनाएँ

१—घोड़ाघाटपर बजड़ा खड़ा रहेगा। ठीक समयपर आ जायँ।

२—ठीक ७-३० पर अपनी घड़ीसे बजड़ा छलका दिया जायगा भले ही आपकी घड़ी सुस्त हो। किसी का अभिनन्दन नहीं है। ८ बजे उस पार दिव्य निपटान और स्नान होगा। भांग जलपान का शायद प्रबन्ध हो जायगा। आना जरूरी है।

३—अगर आपको निपटनेकी बीमारी हैं तो साथमें एक हँड़िया या दालदाका डिब्बा शौचके लिए लायें। नहानेवाले तेल-साबुन, अंगोछा लेते आयें। इन सामानों का ठेका हमारे जिम्मे नहीं है। ठीक ९ बजे बजड़ा इस किनारे आ जायगा, इसलिए गणेश क्रिया न करें।

४—अगर आप तैरना नहीं जानते तो अपनी जान साँसतमें न डालें। आंधी-तूफानका मौसम है और मुमकिन है नशेमें कोई पानीमें ढकेल सकता है :

५—कवियोंको काव्य पाठ करना पड़ेगा। चाहे वे अपनी या चुरायी हुई चीज सुनायें वर्ना उन्हें जलपान नहीं दिया जायगा। हजामत बनाकर आना जरूरी है। कृपया सेंगरी या छूरा लेकर न आयें, दफा १४४ लगा है।

निवेदक

घनश्याम गुप्त
(संयोजक)

प्रभाशंकर मेहता
(व्यवस्थापक)

जलपानकी घनश्याम गुप्त तथा बजड़ा, प्रकाश आदि की व्यवस्था प्रभाशंकर मेहताने की।

पण्डित सीताराम चतुर्वेदी बाहर दौरे पर गये हुए थे, फलतः श्री मुरारी लाल केडियाजीको अध्यक्ष मानकर कार्य क्रम चालू किया गया।

थोड़ी देर बाद श्री कमल गुप्तने जो कचकच प्रारम्भ किया कि सारा महौल बिगड़ गया। कुछ लोगोंने कहा—हम मजा-पानी लेने यहाँ आते हैं कि राजनीति सुनने। बहरहाल किसी सूरतसे बात दब गयी।

उस दिन स्टेट बंक का बजड़ा भी एक ओर खड़ा था। कुछ रंगरूट अँधेरेमें आकर ठलुआ क्लबके बजड़े पर बैठे तो कानाफूँसी होने लगीं कि हजरत कौन है? इस प्रकार दो लोग जब माला-मिष्ठान्न लेकर वापस चले गए तब नये आनेवालों को कह दिया गया कि यह ठलुआ क्लब का बजड़ा है। बादमें फालतू रंगरूट न आ जायँ इस डरसे बजड़ा छलका दिया गया।

लेट लतीफ लोग नाव द्वारा आए। भाँग-ठंडई और जलपानके बाद लोग गमछा पहन कर गंगामें कूद गए। उस पार नाव लगते ही लोग बिना लोटा लिये निपटने चले गये। कुछ नंगे होकर स्नान करने लगे।

काफी देर बाद जब नाव इस पारकी ओर रवाना हुई तब काव्य-पाठका दौर चला। भाँगके नशेमें लोग बहुत जोरसे गाते रहे। फलस्वरूप आस-पास घूमनेवाली अनेक नौकाओंकी भीड़ ठलुआ क्लबके बजड़ेके पास आकर जुटने लगी। ठलुओंके ठहाकोंसे पूरा नदी किनारा गूँजता रहा। लगा जैसे बुढ़वा मंगल हो रहा है। ठंडई-जलपान दिव्य से दिव्य तर होनेके कारण सभी खूब चहक रहे थे।

काफी देर बाद स्टेट बंकका बजड़ा जब पास आया तब ज्ञात हुआ कि उसमें पण्डित महादेव मिश्र गा रहे हैं। ठलुओंके ठहाके और काव्य-पाठ को सुनकर वे अपना बजड़ा लेकर उसपार भाग गये। किसी ठलुआने कहा—भागल आपन भोंपा ले के। काट दे लहासी।

आजकी गोष्ठीसे प्रसन्न होकर मुरारीलालजीने कहा—संगीत परिषद वाले अब बसन्तोत्सव नहीं करते। ठलुआ क्लब को चाहिये कि बुढ़वा मंगलकी आयोजन करे ताकि पुनः बनारस की पुरानी चीज सामने आ जाय। हम सबको इस दिशामें सहयोग करना चाहिये।

बजड़ा ठीक रात १० बजे इस पार लगी। सभी ठलुए अनुभव करते रहे कि कुछ देर और गोष्ठी चलती तो आनन्द आता, पर दूरके ठलुए घबड़ा रहे थे कि कहीं रास्तेमें कोई गिरहकट न मिल जाय। आजकल नागरिक जीवन सुरक्षित नहीं है। जहाँ देखिये, वहीं छूरा नहीं पिस्तौल दिखाकर लोग लूट लिये जा रहे हैं। बलिहारी है गृह मन्त्री की।

•

सोलहवीं गोष्ठी (१२९)

हर साल बरसातका मौसम आते ही बहरी अलंग जानेके लिए ठलुए बेकार हो जाते हैं। जून से ही लोग ठलुआवीर को कोंचने लगते हैं कि अगस्तमें यह आयोजन जरूर हो। पिछले दो साल से आप छांटा दे रहे हैं।

ठलुआवीर ने कहा—अमां, पानी बरसने दो। ताल-तलैया भरने दो।

बीचमें खमचकर पानी बरसा तो ठलुआवीर बस के लिए रोडवेज गये तो वहां का भाव सुनकर पसीना आ गया। प्राइवेट वालों का मिजाज ही नहीं मिलता था।

एकने रद्दा दिया—पेटरोल केतना मंहगा हो गयल हौ, कुछ मालूम हव ?

ठलुआवीर ठलुआ भण्डारीसे उनका रेट पूछने गये तो उन्होंने फरमाया—इस साल मुझे छोड़ दो। मेरा कारीगर मर गया है जो जाता रहा। अब मुझसे तो नहीं होगा। किसी दूसरे को फांसो।

दूसरेके पास गये तो पता चला कि वह तो लोटा-चिमटा लेकर हरद्वारके आगे किसी बाबासे संन्यास लेने चला गया है। इसी ऊहापोहमें अगस्त बीत गया और इन्द्र भगवान भी जेलमें बन्द हो गये यानी पानी गायब। फलतः ठलुआवीरने सोचा - कौन झमेला पाले। गोली मारो।

लेकिन बरसातका मौसम उन्हें चैन लेने नहीं दे रहा था। कुछ होना चाहिए, यह बात उनके भीतर कुलबुला रहा था। हरिराम द्विवेदी से उन्होंने कहा—कजरीका प्रोग्राम होना चाहिए प्रबन्ध करो।

हरिरामने कहा—हो जायगा।

इधरसे आश्वस्त होकर ठलुआवीरने घोषणा कर दी कि २ सितम्बर १९७९ रविवार को महमूरगंजमें कजरी होई, सभी लोग आपन-आपन मेहरारू लेके आवें।

महिलाएं कजरी बहुत पसन्द करती हैं और गाती हैं। बरसातमें कजरी जमती भी है। इस निमंत्रण कार्ड को पाकर ठलुआ बद्री प्रसाद गुप्तने लिखा-चारों ओर सूखा है। लोग त्राहिमाम कर रहे हैं और आप वर्षा गोष्ठी कर रहे हैं ?

दूसरेने कहा—सावनके अंधे को हमेशा हरियरी सूझती है। पानी बिना सारा भारत परेशान है, ऐसे मौसममें कजरी ? अब सीधे रांची चले जाओ। गधे कहीं के।

ठलुआवीरकी चमड़ी मोटी है। सब धीरेसे पचा जाते हैं। डेजीकी अम्माने बड़े श्रमसे आलू छोलेका प्रबन्ध किया था। अपने हाथसे करियवा गुलाब जामुन और दही बड़ा बना चुकी थीं। गोविन्द तमोली पान लगा रहा था। छतपर छः पेडेस्टल पंखा लगाया गया था। लाउडस्पीकर भी ठीक था। ठीक समयपर लोग अपनी-अपनी पत्नी को लेकर आ गये। चूंकि कार्यक्रमकी संयोजिका मकान मालकिन डेजीकी अम्मा थीं, इसलिए उनकी सहेलियोंकी भीड़ अधिक थी। बेचारे पुरुष सिकुड़े हुए एक ओर बैठे थे।

अचानक ठलुआवीर तड़ाकसे उठे और माइकपर घोषणाकी कि आजकी गोष्ठी प्रारंभ हो उसके पहले एक दुखद समाचार दे रहा हूं। इधर कुछ ऐसी समस्याएं आयी जिसके कारण हम शोक प्रस्ताव पास नहीं कर सके। पिछले वर्ष

हमारे संरक्षकोंमें श्रद्धेय सुमित्रानन्दन पन्त, राजेश्वर शास्त्री द्रविड़ और इस वर्ष भाई राधाकृष्ण और डाक्टर हजारी प्रसाद द्विवेदीका स्वर्गवास हो गया। हमारे ठलुआ क्लबके अनन्य सदस्य भाई चौथमल अग्रवालजी हमारे बीचसे उठ गये। मेरा प्रस्ताव है कि इन श्रद्धेय आत्माओंकी शान्तिके लिए हम दो मिनट मौन धारण कर लें।

सभी लोगोंने खड़े होकर इन आत्माओंकी शान्तिके लिए मौन धारण किया।

इसके बाद प्रस्ताव पास हुआ कि जलपानका पचड़ा समाप्त करके शान्ति पूर्वक कजरी सुना जाय। जलपान करनेके बाद सभी लोग पान घुलाकर बैठ गये। सर्व प्रथम माइकपर कुमारी नीरजा चतुर्वेदीका गायन शुरू हुआ। बोल थे—'काहें रूठ गये बदरा, अब तो हमरे अंगना बरस जा।'

इस गीतके समाप्त होते-होते तूफानी गतिसे हवा चल पड़ी। इसके बाद श्रीमती संतोष श्रीवास्तवा अपनी गीत शुरू कर ही रही थी कि तेज वर्षा प्रारंभ हो गयी।

झटपट लोग दरी चाँदनी लेकर नीचे आ गये। सभी पेडेस्टल गिर गये। चद्दर उड़ गये, कुछ मसनद भीग गये। नीचे आते ही सभी कुमारी नीरजा चतुर्वेदी को धन्यवाद देने लगे—बेटी, आज तुमने कमाल कर दिया। धरती की प्यास बुझ गयी। चारों ओरसे उसे बधाइयाँ मिलने लगीं। बेचारी संकोचसे दब गयी।

नीचे कार्यक्रम प्रारंभ होते ही श्री हरिराम द्विवेदीने कहा—आज जो देशमें सूखा पड़ा है। पानीके बिना किसान और सामान्य नागरिक त्रस्त हैं, इसके एक मात्र गुनहगार हमारे ठलुआवीर विश्वनाथ मुखर्जी हैं। अगर आजकी यह गोष्ठी एक-दो माह पूर्व रख दी गयी होती तो किसान प्रसन्न हो जाते। आजका यह हादसा तभी हो गया होता।

(शेष पृष्ठ ८३ पर)

सतरहवीं गोष्ठी १३०

१३ अक्टूबरकी शाम को अचानक ठलुआवीर को ज्ञात हुआ कि १५ अक्टूबर को ठलुआ क्लबके संस्थापक सदस्य हमेशाके लिए काशी छोड़कर अपनी जन्मभूमि मधुबनी जा रहे हैं।

समय कम था। जबानी जितने लोगोंसे वे कह सके, सूचना देकर १४ अक्टूबर रविवार को ठलुआ क्लबकी परमानेण्ट भूमि बिजुलियावीरमें गोष्ठीका कार्यक्रम बनाया।

बहुत दिनोंके बाद ठलुओं को देखकर स्वामीजी बड़े प्रसन्न हुए। अपने पट्ट शिष्य वररुचिसे बोले—चल बे, भाँग रगड़।

भाँग छानकर सभी स्नानके लिए गंगा किनारे आये। ठलुआवीरने कहा—आप लोग पंक्तिवार बैठ जायँ। लोगोंके बैठ जानेपर सभीके हाथमें गंगा जल देकर उन्होंने कहा—बोलो। मैं अपनी पत्नीके अलावा अन्य किसी महिला की ओर कुदृष्टि नहीं दूंगा और..............

कल्याणजी नागरने हाथका गंगाजल फेंकते हुए कहा—बड़ा दुकड़हा आदमी है। गंगाके सामने यह सब कहीं कहा जाता है।

देवानन्द कहा—पवित्र भावसे कुछ भी कहा जा सकता है। चलिये दर्शन कीजिये। दक्षिणा दीजिये।

नागरजी बोले—पइसा नाहीं लिआयल हई।

जलपानके बाद स्वामीजीकी अध्यक्षतामें गोष्ठी प्रारंभ हुई। डाक्टर श्याम तिवारीने देवीकान्त को माला पहनानेके बाद घण्टों प्रशंसा की। बादमें विश्वनाथ मुखर्जी, देवानन्द तथा अन्य लोग बोलते गये।

स्वय स्वामीजीने आशीर्वाद देते हुए कहा—आप जा रहे हैं, यह दुखद बात है। लेकिन पिताजीकी सेवा करने जा रहे हैं, यह सुखद है। आजकलके लौण्डे तो बाप को ही पिटते और गाली देते हैं, न जाने आजकलके लड़के कैसे बदतमीज होते जा रहे हैं।

इसके बाद डाक्टर श्याम तिवारी, कैलासपति पाण्डेय और देवीकान्तका काव्यपाठ हुआ। रात साढ़े आठ बजे एक मुट्ठी लाची देकर स्वामीजीने सभो को विदा किया!

रास्तेमें कैलासपतिने पूछा—अब विमल मिश्रका मुंडन कब कर रहे हैं?

ठलुआवीर बोले—उनका नहीं होगा। उनके स्वभावका अध्ययन कर चुका हूँ। वे बनारसी विनोद बर्दास्त नहीं कर सकेंगे। उनका अभिनन्दन कैंसिलकर दिया। आगे सोचा जायगा। अभी किचकिच करके नशा मत उखाड़ो। इस अंधेरेमें कुछ सुझाई नहीं दे रहा है। कहाँ गया वररुचि, उससे कहो कि मलाई ले आये।



(पृष्ठ ८२ का शेषांश)

सभी लोग कह उठे—मार सारेके, आप ठीक कह रहे हैं। ई सारेके अक्किल नहीं हव।

उस रात इतना पानी बरसा कि थमनेका नाम नहीं ले रहा था। घड़ीकी सुई तेजीसे आगे बढ़ रही थी। दस बजे पानी हल्का हुआ।

कार्यक्रममें श्रीमती कुसुम गिरि, श्रीमती संतोष श्रीवास्तव, विनय प्रकाश श्रीवास्तव, हरिराम द्विवेदी और पाण्डेयजीने भाग लिया। लेकिन ऐसा चमत्कार आज तक ठलुआ क्लबके इतिहासमें कभी नहीं हुआ था। सभी इस चमत्कारकी चर्चा महीनों करते रहे।

बाहर निकलने पर सभी ठलुआवीर को गालियां देने लगें। ऐसा पानी बरसाया कि रिक्शावाले भी गायब हैं, अब दो-दो कोस पैदल चलना पड़ेगा। चारों ओर भयंकर रूपसे पानी जम गया था। कई जगह बिजली गुल हो थी। कहीं पत्नी गायब न हो जाय, इसलिए लोग अपना अपना जोड़ा साथमें लिये चल रहे थे। पता नहीं कितने लोगों को उस रात को कपट हुआ। बादमें मर्दुमशुमारी करने पर पता चला कि नेनेजीकी पत्नी गायब हो गयीं जो आजतक नहीं मिली। थानेमें रपट लिखानेपर भी कोई लाभ नहीं हुआ।



अट्ठारहवीं गोष्ठी १३१

ठलुआ क्लबके अनन्य सदस्य, बाबू रामकृष्ण यानी मुन्नू बाबू को बहुत दिनसे ठलुआबीर पुटिया रहे थे। पर उनका एक ही जवाब था—किसी और चूतिया को फांसिये। मैं इस चक्करमें नहीं आता।

काफी घुमा फिराकर, तिकड़म करने पर भी मुन्नू बाबूने अपनी उम्र या जीवनकी हरकतोंका जिक्र नहीं किया। लाचारीमें मुहल्लेके पकौड़ीवालेसे लेकर उनके नाऊसे इनकी आदतोंके बारेमें पूर्ण जानकारी प्राप्त करके ठलुआबीरने कहा—अब आप राजी हों या न हों, पर १७ नवम्बर को आपका मुण्डन होगा। निमंत्रण-कार्ड डाकमें डाल दिया गया है।

उस शाम को चौमुहानीके पास ठलुओंका दल खड़ा होकर आनेवाले लोगों को 'आइये जनाब, आइये भाई साहब' कह रहे थे। संयोजक विनोद बाबू ठंढई पर रियाज मार रहे थे।

बोले—अगर इतनी ठंढई रोज पीसना पड़े तो गामा पहलवानकी तरह मुशुक बन जायगी। लो जरा चखकर देखो।

ठंढई लाजवाव थी। मुन्नू बाबू छिलल कसेरूकी तरह दाढ़ी घोंटवाकर चुन्नटदार धोती और तंजेब मारे बैठे थे। तभी श्रीराय गोविन्दचन्द आये और कहा—सोचा, तुम्हारा मुण्डन है। खानदानमें अकेला मैं ही बड़ा हूँ। टीका काढ़ना होगा, इसीलिए चला आया बाकी लोग तो गणेश थोपड़ी खेलेंगे।

इसके बाद एकके बाद एक हस्तियां आती गयीं। ठीक समय होते ही ठलुआबीर को लखेदा गया तो उन्होंने कहा— मम्मा नहीं आये।

कल्याणजी नागरने कहा - वे नहीं आयेंगे।

—क्यों ?

—शिवपुरसे यहाँ तक आनेमें दस रुपयेका पेट्रोल खर्च हो जायगा। मिलेगा एक दोना परसादी। वे ऐसे बेवकूफ नहीं हैं। पिछली गोष्ठीमें उनकी कार अंधरा पुलके पास फेल हो गयी थी। रात भर वहीं फंसे रहे। सबेरे मिस्त्रीने मरम्मतकी तो घर गये।

फलत: प्रोफेसर ज्ञानानन्द नागर को अध्यक्ष बनाकर कार्य प्रारंभ किया गया। पं० कल्याणजी नागरने शंख ध्वनिके पश्चात् मंगलाचरण किया।

ठलुआबीरने बताया —हमारे मुन्नू बाबू चंगपर नहीं चढ़ रहे थे। बड़ी मुश्किलसे इन्हें फांसा है। आप तिगनीके झंझे हैं यानीं इन्हें तिगाड़ कम देता है। हार्टके मरीज है। इधर कुछ हस्तियां बिना पूछे चली जा रही हैं। इसलिए अब ऐसे लोगोंका झटपट अभिनन्दन कर देना है।

जमकर वेदपाठ हुआ। विश्वनाथ मुखर्जीने अभिनन्दन पत्र पाठ किया। जो कि बहीके रूपमें था। एकने पूछा —यह क्या ? ठलुबीर बोले—साबजीका अभिनन्दन है न ? इसके बाद जलपान हुआ। लोगोंकी इच्छा थी कि आगन्तुकोंमेंसे कोई मुन्नू बाबूके बारेमें बोले, पर वे राजी नहीं हुए।

फलत: उनसे कुछ बोलने को कहा गया तो बोले—क्षमा करें, मैं लाचार हूँ। एक जमाना था जब खूब बोलता था। बड़ों-बड़ों की बोलती बन्द कर देता था। विश्वनाथजी मेरी हालत जानते हैं। यही बहुत है कि मैं यहाँ बैठा हूँ। बस जब तक चल रहा हूँ, चल रहा हूँ। आशा है आप लोग क्षमा करेंगे।

इसके बाद कवि सम्मेलन चला जिसमें सर्वश्री अभयनाथ तिवारी, हरिराम द्विवेदी, मधुर, कैलास पति पाण्डेय तथा बिहारसे आये एक कवि महाशयने भाग लिया। हरिरामकी गंगापर और पाण्डेयजीकी शिव ताण्डव रचना काफी पसन्द की गयी।

अन्तमें धन्यवाद देते हुए अध्यक्ष श्री ज्ञानान्द नागरने कहा—आज इस भवनमें आकर मैं अपने को गौरवान्वित अनुभव कर रहा हूँ। यह भवन हिन्दी सेवियोंके लिए तीर्थ भूमि है। रत्नाकरजी को कौन नहीं जानता। आज उन्हींके वंशधरका अभिनन्दन उनके भवनमें करके वास्तवमें रत्नाकरजीकी सेवाओंका हम अभिनन्दन कर रहे हैं। यह मेरा सौभाग्य है कि ठलुआ क्लबके माध्यमसे आज मैं यहाँ आया। रामकृष्णजी स्वस्थ-प्रसन्न रहें, यही मेरी कामना है। आप जिस बीमारीके शिकार है, उसी बीमारीका मैं भी हूँ। मैं यहाँ इसलिए आया था कि आज पत्रकारोंकी मद्रा होगी, पर पत्रकार मैदान छोड़कर जब भाग गये तो मुंह पीछे उनके बारेमें कुछ कहना नहीं चाहिए। लेकिन मद्रा वाली गोष्ठी हो। इससे मेरा ज्ञान बढ़ेगा और मैं स्वयं इनके निकम्मेपनके बारेमें विस्तारसे कह सकता हूँ। मैं ही क्या हर प्रबुद्ध पाठक इनके बारेमें अपना असंतोष प्रकट कर सकता है। आज इनकी भूमिका कैसी है इसे सब जानते हैं। लेकिन क्या कहूँ, इस कार्यक्रम को रद्दकर दिया गया। अन्तमें आप सभी को और विशेष रूपसे मुन्नू बाबू को धन्यवाद देता हूँ।

●

॥ अभिनन्दन पत्र ॥

सिद्धश्री सर्वोपमा योग रामजी, कृष्णजी, कुल मिलाकर बाबू रामकृष्णजी, रत्नाकर भवन, शिवाला वाराणसी को लिखा ठलुआ क्लब की ओरसे हमारा राम-राम बांचना। अपरंच समाचार यह है कि आज मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष, चित्रा नक्षत्र हैं। गीतामें श्री कृष्णने 'मासानां मार्ग शीर्षोहम' कहा है यानी महीनोंमें मार्गशीर्ष सर्वोत्तम होता है जिस समय हर कार्य शुभ होता है। ऐसे मौसममें जो कुछ किया जायगा, सब फिटफाट, ठीकठाक होगा।

हमारी इच्छा थी कि आपका मुण्डनोत्सव हम विंध्याचल या मैहरमें करते, पर यह संभव नहीं हैं जानकर यहीं कर रहे हैं। उर्दू का एक शेर है—'बड़ी मुश्किलसे मिलता है मेरी जां चाहने वाला।' इस शेर का मकसद यह है कि 'बड़ी मुश्किलसे फँसता है मुर्गा।' आप बड़े मुश्किलसे फँसे हैं। आज आपका मुण्डन, ऐतिहासिक मुण्डन है, जीवनका सुनहरा दिन है।

जिस प्रकार बुलबुल अपने अड्डे से, तोता अपने पिंजरे से, गाय अपने खूँटे से बंधा रहता है, ठीक उसी प्रकार आप इस कमरेके खूँटेसे बँधे रहते हैं। भले ही आपको घीसे तर बेसनका चारा क्यों न दिखाया जाय, पर उसे पकड़नेके लिए आप लपकते नहीं। दिन भर इसी दरबेमें गुटर गूँ करते हैं।

आपकी तुलना बनारसके उन सांड़ोंसे की जा सकती है जो काशीकी जनाकीर्ण गलियोंमें गलेमें गलकम्बल लटकाये मस्तीसे चलते-फिरते हैं। वक्त जरूरत पर अपनी सींग पर जनरल ग्राण्ट जैसे महारथी को भी उठाकर धांयसे पटक देते हैं। इसके बाद वज्रघोष करते हुए कहते हैं—है कोई मां का लाल जो आकर भिड़ सकता है। किसी भी हलवाई या खटिक की दौरीसे जलपानकी सामग्री बिना चुंगी दिये ग्रहण कर लेना उसका मौरूसी हक है। जिस प्रकार राजनीतिक पार्टियाँ व्यापारियोंसे चुनाव चन्दा या सरकारी कर्मचारी 'मामूली' ले लेते हैं।

आपमें खांटी बनारसी सांड़की प्रवृत्ति है वर्ना आज तक किसी भी व्यक्तिमें यह हिम्मत नहीं हुई की गौरैया-शाहीके बाद नगरके कलक्टरपर मुकदमा ठोंक दे। इसके बाद भी कहे कि क्या कर लेगा कलक्टर ? क्या इसके आगे हाईकोर्ट या सुप्रीम कोर्ट नहीं है ? इस बनारसी शानको आपने बदस्तूर कायम रखा है।

बनारसमें हर प्रकारके बाज मिलते है जैसे गिरहबाज, कबूतरबाज, चालबाज, गहरेबाज, पतंगबाज, वगैरह-वगैरह। उसी प्रकार आपको अड्डेबाजी का ही नहीं, मुकदमेबाजी का भी शौक है।

माई डियर मुन्नू बाबू,

आजसे तिरपन वर्ष पूर्व शिवालेके इसी भवनमें बाबू राधाकृष्णजीके द्वितीय पुत्रके रूपमें आपने अवतार ग्रहण किया था। रामनवमीके आसपास जन्म लेनेके कारण राम और कृष्णकी तरह सांवले होनेके कारण कृष्ण-कुल मिलाकर आधा तीतर आधा बटेर आपका नाम रामकृष्ण रखा गया ताकि जब भी आपका नाम पुकारा जाय तब भगवानका नाम मुखसे निकले। आप साधारण मनई नहीं हैं, ब्रजभाषाके अन्तिम कवि बाबू जगन्नाथ प्रसाद 'रत्नाकर जी' के पौत्र हैं। भगवान की कृपासे आजकी इस गोष्ठीमें 'रत्नाकरजी' मौजूद होते तो अपने पोते का अभिनन्दन देखकर वे अवश्य गदगदायमान होते, क्योंकि महाजन को मूलसे ब्याज प्यारा होता है यानी पुत्रसे पोता प्यारा होता है।

बचपनमें आप मुहल्लेके ग्वाल बालोंके साथ खेलते कूदते रहे। शायद इसीलिए आज भी अनेक सरदार सँगरी लेकर आपके आगे पीछे चलते हैं। इनके बीच आपका कृष्ण रूप खिल उठता है। ये लोग रामकृष्णसे नहीं, मुन्नू भइयासे प्रेम करते हैं।

आपकी प्राथमिक शिक्षा बंगाली टोला इण्टरमीडिएट कालेजसे प्रारम्भ हुई जहाँ बंगाली लड़के अधिक पढ़ते थे। फलतः आप बंगालकी संस्कृतिसे प्रभावित हुए। उनकी तरह धोती पहनने लगे। चुन्नट उठाकर या जेबमें रखकर चलते फिरते थे। खजूर का गुड़ आज भी पसन्द है। रसगुल्ला, चमचम, संदेश और पन्तुआ इतना खा चुके हैं कि मधुमेहका शिकार बन गये हैं। उसे भगानेके लिए रवि बाबू की तरह नित्य नीमकी चटनी चाटते हैं।

हे मस्त मौलना

आपके लंगोटिया यार लाहिड़ीके कथनानुसार आप बचपनसे ही प्रतिभावान छात्र रहे। स्कूलसे घर लौटते समय अक्सर जब लाहिड़ी किसी बग्घीके पीछे लटक जाता था और लद्धड़ रहनेके कारण आप नहीं चढ़ पाते थे तब ईर्ष्यावश कहते— बग्घीवान, पीछे लड़का, लगे चमोटी।' बग्घीवान सड़ाकसे चाबुक चलाता और लाहिड़ी सिर सहलाता उतर पड़ता। उसे मार खाते देख आप प्रसन्नतासे उछल पड़ते थे। बचपनमें लोग गुड्डी लड़ाते, बुलबुल लड़ाते, गप्प लड़ाते हैं, पर आप लग्घड़ लड़ानेमें माहिर थे!

बचपनसे ही आप परम थे। परमसे मेरा मतलब बनारसी परमसे नहीं है। अगर हर जगह बनारसी परम पनका अर्थ लिया जायगा तो परमहंस, परम भट्टारक, परमगति, परमपिता, परमल, परमपुरुष, परमपद, परमधाम का अर्थ बिलकुल अनर्थ हो जायगा। परमसे ही परमात्मा, परमायु, परमार, परमलोक, परमार्थ, परमाणुकी उत्पत्ति हुई है। हमारा आशय इसी परमपनसे है जो आपमें कूट छानकर भर दी गयी है।

सन् १९३१ ई० में आगाकी मृत्युके बादसे बनारसमें दंगेकी जो शुरुआत हुई, वह आजतक जारी है। मुन्नूबाबू का संग सरदारोंके साथ होनेके कारण इन्हें लड़ने लड़ाने का शौक है। सड़क पर जहाँ दो साँड़ों को अपने खुर रगड़ते देखा, तुरत 'डुर्र छे डुर्र छे' कहने लगते थे। बनारसके सांड़ भी कम कत्तई नहीं होते। कोई आवाज दे और मैदान छोड़कर भाग कैसे जांय। नतीजा यह होता की वहीं एक पक्कड़ भिड़न्त होती। सड़क पर भगदड़ मच जाती। सावजी खोमचा उठाकर गलीमें भागते। गाड़ीपर सवार व्यक्ति बिना किराया दिये तिड़ी हो जाते, पण्डितजी पोथी-पत्रा दबाये यजमानके घर घुस जाते। उस वक्त किसे इतनी फुरसत थी कि वास्तविक घटना का पता लगाता? कुछ लौण्डे 'हो गयी' कहते हुए दौड़ते-भागते। इस प्रकार पूरे शहर में दंगा प्रारंभ हो जाता। सन् १९३८ ई० से १९४२ तक जितने दंगे हुए, उनमें कुछ मुन्नू बाबू के 'डुर्र छे' का भी हाथ रहा।

हे काव्य रसिक

बचपनसे ही आप कजरी सुनने और भांड़ों की नकल देखनेके शौकीन रहे। मिर्जापुरसे आनेवाली घुड़चढ़ियोंकी मशहूर कजरियाँ सुनते रहे। आज भी उसे गुनगुनाते हैं—

झुलनियाँ मोरी अटकी सैंया की जुलुफिया में अटकी
झुलनियां मोरी अटकी।

अथवा इस कजरी को बहुत पसन्द करते हैं—

माई डियर लुक हियर बारे बलमू, सांसत सास संसरिया में।
दमा जोर कइले बाय अब तऽ सांसत सास ससरिया में।
अरे करिखा लगल खोपड़िया में पानी नाहीं गगरिया में।

देवी लक्ष्मी की स्तुति में कहा गया है कि हे देवी, जो व्यक्ति आपकी स्तुति करता है, उसकी नजर कमजोर हो जाती है यानी 'विगनी कऽ झंभ' हो जाता है। जिस वक्त आप किसी बात पर प्रसन्न हो उठते हैं तब आपकी मुख मुद्रा लक्ष्मी वाहन की तरह हो जाती है।

जिस वक्त आप नाराज होकर दांत किट किटाने लगते हैं, उस मुद्रा को देखकर यह विश्वास हो जाता है कि डार्विन की खोज लाजवाब रही। कोई कुम्हार या चित्रकार आपकी इन दोनों मुद्राओं को देख ले तो वह नये प्रकार की मूर्तियां बनाकर अपनी आमदनी बढ़ा सकता है।

हम यह जानते हैं कि इस विशाल खोपड़ी में तथा आपकी गणेशजी वाली तोंद के भीतर अपार सम्पत्ति छिपी है जिसकी खोज में कस्टमवाले आये थे, पर कुछ नहीं पा सके, क्योंकि सारा फालतू कलाबत्तू आपने अपने समधियाने कम्बल बनानेके लिए भेज दिया था।

आपकी तोंदमें जो ज्ञान छिपा है, वह कभी-कभी प्रकट होता है। काशी नगरीके बारेमे आपका ज्ञान असीम है। आपने स्वयं स्वीकार किया है—'शिवाले में उल्लूके पट्ठे रगे बुलबुलके पर बांधते हैं।' पता नहीं, आप कितने बुलबुलोंके पर बांध चुके हैं। अपने अड्डे पर नित्य आनेवाले बुलबुलों को आप अपने ज्ञान की कहानियां सुनाते हैं। देश-विदेशके शोध छात्र आपके ज्ञान के अध्ययनसे लाभान्वित हुए हैं।

हे शिवाले के औघड़,

कभी आप धन्वन्तरी बननेके लिए खरल घोंटते रहे। मदन मंजरी वटिकासे लेकर मकरध्वज बनाते रहे, पर उसमें आपको सफलता नहीं मिली। फलतः पुस्तकों के प्रकाशक बने। आज भी अधिकांश-पुस्तकें आपकी आलमारी में सड़ रही हैं।

हिन्दी के आप विकट प्रेमी हैं। घरमें मम्मी-पापा, अंकल आंटीका प्रयोग होने नहीं देते। लेकिन आपके यहाँ जितने मित्र आते हैं जो ईसा पूर्व के होते हैं यानी उन्हें आप बी० सी०, पी० सी०, के० सी० समझते हैं। आपका अंग्रेजी ज्ञान यही बहुत है।

हे श्रद्धेय देवरहवा बाबा के भक्त,

आप अपने आपमें एक नमूना हैं। अगर किसी नुमाइश में आपको रखा जाय तो बेशुमार भीड़ हो सकती है। मुद्रा विशेषज्ञों का विचार है कि यदि आपको एक मुकुट पहनाकर एक हाथ में गदा और दूसरे हाथ में छोटा पहाड़ थमाकर इसी भवन के किसी दीवार के पास खड़ा कर दिया जाय तो लोग पवन सुत समझकर आपकी पूजा करेंगे और महावीरी लगाने से आपकी तेजस्विता बढ़ जायगी।

लेकिन हम इससे सहमत नहीं हैं, क्योंकि आप गायब होते हुए बनारसी मस्तीके वह प्रतीक हैं जो खण्डहरके रूप में मौजूद हैं। बनारसी रईस तो आप मिजाज से हैं, अगर आजसे चार सौ वर्ष पहले आपसे हमारी मुलाकात होती तो हम शाहंशाह अकबरके दरबारमें होते।

यह बीसवीं शताब्दी है और यह बनारस है जहांकि रईस मुगलकालके उमराहके रूपमें हैं। सारनाथमें आपकी बगिया है तो पांच चौकका यह भवन। बैठका इतना बड़ा है कि काल भैरवकी गौनहारिनोंका झूमर हो सकता है। पता नहीं आपकी कोई उपपत्नी है या नहीं, पर आपने कई बटुक पाल रखे हैं जो यहाँ दिखाई दे रहे हैं।

हे अजगर,

आपको भले ही लोग विभिन्न दृष्टिसे देखें, पर हम आपको कोल्हूके रूपमें देख रहे हैं। जिस प्रकार कोल्हू में सरसो, तिल, तीसी, गरी डालने पर तेल निकलता है, पर वह एक ही जगह स्थिर रहता है, ठीक उसी प्रकार आप एक ही जगह स्थिर होकर जमे रहते हैं और आपका तेल शोध'छात्र तथा मित्र ले जाते हैं। ऐसे विशिष्ट व्यक्तिको हम 'ठलुआ कोल्हू' की उपाधि देते हुए सम्मानित कर रहे हैं ताकि आप दीर्घायु हों और आपका यश चन्द्र-सूरजकी तरह प्रकाशवान हो।

●



काशी विश्वनाथ के महन्त पण्डित श्री रामशंकर त्रिपाठी जो अपनी विद्वता, सज्जनता और वाणीके लिए काशीके साहित्यकारोंके निकट प्रिय हैं।

१९वीं गोष्ठी (१३२)

ठलुआ क्लबकी बहुत दिनों से इच्छा थी कि हिन्दी जगतके परम आदरणीय श्रद्धेय भइया साहबका अभिनन्दन धूमधाम से किया जाय जिसमें बनारसीपनका पुट हो, पर सांस्कृतिक ढंगसे हो। दिसम्बरमें भइया साहब राजी हुए, पर समय ऐसा चुना गया जब पानी बरसा और कड़ाके की सर्दी पड़ने लगी तो कार्यक्रम जनवरीमें टाल दिया गया। लेकिन दिसम्बर ७९ सालका अन्तिम माह खाली जा रहा था।

ठीक इसी समय श्री बम्बूनाथ मिश्र ने बम्बू करते हुए कहा—क्या आप अपने पुजारीका अभिनन्दन नहीं करेंगे।

सवालिया सूरत बनाये जब ठलुआवीर ने मिश्रजीकी ओर देखा तो उन्होंने कहा—विश्वनाथ मंदिरके महन्त पूजनीय रामशंकर त्रिपाठीजीका। काशीके महन्तोंमें एक वे ही ऐसे महन्त हैं जो विद्वान होनेके साथ-साथ साहित्यिक हैं।

बात दिमागमें उतर गयी और उसी दिन विश्वनाथ मंदिरके महन्तजीके घर विश्वनाथ मुखर्जीने हमला किया। महन्तजीने पूछा—आपमें यह कुबुद्धि कैसे आ गयी? जिस संस्थामें डा० सम्पूर्णानन्द, रायकृष्णदास, बाबू रामचन्द्र वर्मा, पं० सुमित्रानन्दन पन्त, महादेवी वर्मा, गुरुवर विश्वनाथ प्रसाद मिश्र और हजारी प्रसाद द्विवेदी का मुण्डन हुआ हो, वहाँ मेरे जैसे खखांटका क्या महत्व है।

ठलुआवीर बोले – काटो-काटो मत करिये। जो कुछ पूछ रहा हूँ, जवाब दीजिये।

लाचारीमें महन्तजीने इंटरव्यू दिया और दिन निश्चित कर दिया गया। लेकिन महन्तजीके भक्त शिष्य श्री मुरारीलाल केडिया ने कहा—राजा (डा० आनन्दकृष्ण) जापानसे १२ दिसम्बरको वापस आ जायँगे। उसके बाद गोष्ठी करें, क्योंकि वे महन्तजीके सहपाठी रहे और जमकर बोल सकते हैं।

फलत: ८ दिसम्बरके स्थानपर २२ दिसम्बर १९७९ को गोष्ठीका दिन निर्णय किया गया। कुछ विशेष व्यक्तियोंको निमंत्रित किया गया। महन्तजीके सम्मानमें संस्कृतमें कजरी गानेका प्रबंध किया गया।

पं० कल्याणजी नागरकी अनुपस्थितिमें उस्ताद खादिम अलीने शहनाईसे मंगलाचरण किया और बहुत सुन्दर ही नहीं अपूर्व बजाया। श्री नम्पूतिरिने पूजन किया। वेद पाठ के बाद विश्वनाथ मुखर्जीने अभिनन्दन पाठ किया। इस अवसरपर डा० आनन्दकृष्ण बोलनेके लिए जब खड़े हुए तब यह आशा की गयी थी कि वे जमकर बोलेंगे, पर

वे ठलुआ क्लबकी गोष्ठीमें कभी बोल नहीं सके। वक्ताके रूपमें वे हमेशा असफल रहे। अगर कभी कुछ सुनाते हैं तब ऐसा लगता है जैसे कोई ज्ञान—मसाला या तत्व इनमें नहीं है। यह दोष केवल डा० आनन्द कृष्णमें ही नहीं, अनेक विश्वविद्यालयके प्रोफेसरों में है। उनकी सारी बुद्धि कोर्सबुक तक सीमित रहती है, उसके बाहर जब वे आते हैं तब कूप मण्डुक जैसी स्थिति हो जाती है। बेमजा वाले भाषणके प्रति ठलुए दिलचस्पी नहीं लेते।

डा० आनन्दकृष्णसे कहीं बेहतर भाषण डा० मोहनलाल तिवारीने दिया और बताया कि पं० रामशंकरजी बड़े अच्छे विद्वान है। इनमें सबसे बड़ी कमजोरी यह है कि जो कुछ भी लिखते हैं, उसे पूरा नहीं करते बल्कि अधूरा छोड़ देते हैं।

जलपानके बाद काव्य गोष्ठी हुई। जिसमें संस्कृतके कवियोंने भाग लिया। बहुत दिनोंके बाद पं० श्यामबिहारी त्रिपाठी ने 'कुले-कुलैं ना' सुनाया।

भांगके नशे में सभीको लिंग पुराणकी याद सताती रही। इस अवसरपर आभार प्रकट करते हुए पं० रामशंकर त्रिपाठीने अपने लिखित भाषणमें कहा—

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथ जुषा नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव॥

आदरणीय अध्यक्ष महोदय एवं प्रिय बंधुओ,

आज आपका आयोजन वस्तुतः भगवान विश्वनाथके प्रति आपकी भक्ति-भावनाका ही द्योतक है। आपकी आतिथ्यताका मैं आभारी हूँ। भगवान विश्वनाथसे 'सर्वे सुखिनः संतु' की प्रार्थना करता हूँ।

सृष्टिके आदिमें न सत्य था न असत्य। केवल शिव थे—'न सन्नचासच्छिव एव केवलः।' उसी परमशिवकी 'बहुस्याम्' की इच्छा ने ही उसके रोम-रोममें कोटि-कोटि ब्रह्माण्डों की सृष्टि की। परिणाम स्वरूप 'ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्चजगत्यांजगत्'—सब कुछ ईश्वरमय-ब्रह्ममय हो गया सब कुछ ब्रह्ममय होते हुए भी मायाछन्न हो गया। यंत्रारूढ मायाके प्रभावसे सभी प्राणी चक्कर काटने लगे। इस मायावी चक्र से वही उबर पाता है, वही स्वरूपानुसंधान कर सकता है—अपने ब्रह्म स्वरूपका ज्ञान प्राप्त कर सकता है जिसपर उसकी कृपा हो जाती है—'सोजानहि देहि देहु जनाई। जानत तुम हितुमहि होइ जाई।' तदाकाराकरी न हो जाता है। यही कृपालु परब्रह्म-परमशिव आदि ठलुआ हैं।

ठलुअई रवमें वे ठलुआ ब्रह्मसे कहते हैं—

'यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासियत्। यत्तपस्यसि ठल्वेश तत्कुरुष्व मदर्पणम्॥'

जो कुछ भी करो-जो कुछ भी खाओ पीओ, जो कुछ भी दान करो—सब कुछ मुझे समर्पित कर दो।

हम लोग उसकी प्रार्थना करते-करते कहने लगते हैं—"पापोऽहम् पापकर्माऽहम् पापात्मा पाप संभवः—" त्राहिमाम-त्राहिमाम—सर्वं पाप हरो प्रभो। हमी नहीं ईशू भी हमारा साथ देता है, कमसे कम पापी होनेमें ही ऐंड इन सिन माइ मन्दिर कनसीम्ड भी पुनः वह ठलुआ महान कहता है मेरी शरण आओ "अहम् त्वाम् सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि" तुम्हारे सभी पाप क्षमा करूँगा —'माशुचः' चिंता कम करो। वह इस प्रकार हम लोगों का मन बढ़ाता है, और इसे मर्त्य लोकमें जहाँ जहाँ 'जातस्यहि ध्रुवो मृत्युः' मरना निश्चित ही है, उस मृत्युंजयने काशी को 'मुक्ति जन्म मही' बनाकर तीनो लोकोंसे पृथक कर दिया है। यहाँ मरनेपर मुक्ति निश्चित होगी। यहाँ मरना भी मंगल है परब्रह्म के अंशी ब्रह्म को जब ब्रह्मीभूत होनेका दृढ़ निश्चय हो गया तो ठलुओं को एक ही काम रह गया—काशीवासका। जहां परम शिव महादेव विश्वनाथ बिना भेद भावके जीव-जन्तुओं तक को मुक्ति प्रदान करता है। इसी कारण मनुष्य काम ही नहीं अमर-देवता भी काशीके प्रति आकृष्ट रहते हैं कोई यहीं का होकर यहीं मरना

चाहता है, कोई यहां की अध्यात्मिकताके वशीभूत होकर यहां बारम्बार आना चाहता है तथा कोई यहां जन्म लेनेके लिए ही लालायित रहता है।

काशीके प्रति इस भावनाका मुख्य कारण है यहांकी विचित्रता। यहांके ठलुओंका क्या कहना, विलक्षण प्रकृति के सिद्ध होते हैं वे सोचते हैं- वायु प्रवाहित होगी ही। जो गर्भवती हो चुकी है जनेगी ही। रात्रिके पश्चात् दिन होगा ही, और दिनके अनन्तर रात्रि अवश्य होगी। जो होना है—होगा ही–किसीके टाले नहीं टल सकता। तो खाओ–पीओ–मौज करो। 'रात मृगनैनी संग प्रात मृगछालाके।'

'क्वचिद्भूमौशय्या क्वचिदपि च पर्यंकशयनम् क्वचिच्छाकाहारी क्वचिदपि च शाल्योदन रुचिः (मगदल-मटर-चिउड़ा) क्वचित्कथाधारी क्वचिदपि चदि व्याम्बर धरो वाला ऐसा काशीका ठलुआ–लाभ-हानि, जय-पराजयका समदर्शी ठलुआ 'न गणयति दुःखं न च सुखम्।' दुःख-सुख को वह अनित्य मानता है। दुर्भाग्यको स्वीकार करने योग्य विशाल हृदय उसीके पास होता है।' चना-चबैना गंगा जल' का वह संतोषी यदि कभी चाहता भी है तो मात्र छप्पन करोड़ का चौथाई। उसे आप कौपीन वसनमें एक जोड़ी गमछेमें ही निर्द्वन्द्व घूमते पाइयेगा। उसे बहरी अलँग की दाल बाटीमें राजभोगका आनंद मिलता है। और विश्वकी संपदाको निपटानके आगे न्योछावर करता है। इन संतोंके यहां सदा दिवाली रहती है और इसी कारण काशी सात बार और नौ त्योहार के लिए प्रसिद्ध है।

ये किसीकी परवाह नहीं करते किंतु 'ताम्बूलद्व' का एहसान जन्मभर मानते हैं। घृणा तो ऐसा करते हैं कि–क्या कहा जाय काशी और मगध वालोंमें पुरा कालमें किसी समय परस्पर वैमनस्यता थी—गंगाके इस पार काशी तथा आगे चलकर उस पार मगधका साम्राज्य था। किंतु उसी वैमनस्यताके कारण आज तक काशी वासी उस पार मल-मूत्र त्यागते चले आ रहे हैं।

उन्हें देशाटनकी इच्छा नहीं—वे यहाँ काशीमें ही बैठे-बैठे समस्त विश्वका मुजरा लिया करते हैं यहाँके अन्त्यज तक दार्शनिक होते हैं। शंकराचार्यका ऐसे दार्शनिकसे पराजित होना विख्यात ही है। शब्दोंकी इनकी अपनी व्यंजना होती है। परमात्माका परक आर्यपुत्र का माडर्न रूप, आम्र-रसालकी दुर्दशासे आप परिचित हैं।

क्या कहिये? संगीत, नृत्य एवं नाटकके आदि प्रवर्त्तक तौर्यत्रिक भगवान शिव यहाँके अधिष्ठाता हैं ही। वे ही सब कुछ हैं यहाँ तक कि 'वारस्त्रियोपि यस्यां पशुपति तुल्यतां याना'। यहाँके लोगोंका विलासी होना, जन्म जात हैं। प्रमाण स्वरूप इनके द्वारा आयोजित बुढवा मंगल'। जिन्होंने देखा है और जिन्होंने नहीं देखा है- दोनों ही पछता रहे हैं। सुरसुन्दरियोंको लजानेवाली सुमुखियोंका गंगा स्नानके समय घाटके पत्थरपर एड़ी रगड़न्त देखकर सूफी शेख अली हजीको उन पत्थरोंकी शराफ़त एवं गंगाकी लताफत की तारीफ करनी ही पड़ी।

यहाँ चतुर्दिक राजा ही राजा विचरण करते रहते हैं। राजसभायें जुटती रहती हैं। जया गोष्ठी हो या विजया गोष्ठी। यहाँका ठलुआ अपनी गल्ती दूसरेके मत्थे मढ़नेमें माहिर होता है। भागीरथी हम तेरे सहारे करत रहत अपराध घनेरे। चूकता नहीं। मनमौजी।

ये ठलुए विश्वनाथको कितने प्रिय हैं देखिये। भगवानने श्रेय एवं प्रेय का ठीका ले रखा है। अन्नपूर्णा काशीमें किसी को भी भूखा सोने नहीं देती और स्वयं विश्वनाथ बिना भेदभाव उनके अपराधोंको क्षमा करते हुए उन्हें मुक्ति प्रदान करते रहते हैं

अन्तमें अध्यक्ष पदसे भाषण देते हुए श्री जसवन्त प्रसाद मेहता ने कहा—आज त्रिपाठीजीका अभिनन्दन करके हम लोगोंने बाबा विश्वनाथका पूजन किया। शिवका ई गायब तो शव हो जाता है। बिना शक्तिके शिव शव बना रहता है। संसारमें शिव ही एक ऐसा देवता है जो अपने लिंगका पूजन कराता है हमारे यहाँके विद्वानोंने लिंग-पुराणका निर्माण किया है जिसका बड़ा महत्व है। आप लोगोंको उसका अध्ययन करना चाहिए।

॥ अभिनन्दन पत्र ॥

हे शंकर पुरीके निवासी, शंकर उपासक, शंकर भक्त, पण्डित राम शंकर त्रिपाठी जी महाराज,

आजकी इस गोष्ठीमें आपका 'मुण्डन' करते हुए हमें ऐसा अनुभव हो रहा है जैसे हम बाबा भोलेनाथका मुण्डन कर रहे हैं, क्योंकि आप उनके मंदिरके रजिस्टर्ड महन्त हैं। बाबाके दरबारमें आप नित्य शिवलिंगको सर्व प्रथम साबुन-तेलसे स्नान कराते हैं तब कहीं जाकर जल ग्रहण करते हैं। बाबा को विना भोग लगाये आप अपना भोग उदरस्थ नहीं करते। रातको शयन-आरती करानेके बाद आप लिहाफके भीतर प्रवेश करते हैं। इस प्रकार बाबाकी सेवा का मुसल्लम फल आप प्राप्त करते हैं। वास्तव में आप एक असामान्य महन्त हैं। 'छत्रे भोजन, मठे निद्रा' वाले किसी अखाड़े या मठ के नहीं, बल्कि इस नगरीके राजा बाबा विश्वनाथ के खानदानी महन्त हैं। बाबाका आप पर और आपका बाबा पर कापी राइट अधिकार है। बाबाके कारण ही आप सर्वमान्य और पूजनीय माने जाते हैं।

जिस प्रकार बकरियोंमें जमुनापारीका नाम है, ठीक उसी प्रकार ब्राह्मणोंमें सरयूपारी सरनाम हैं। आप निखालिस सरयूपारी ब्राह्मण हैं और वह भी पिण्डीके तिवारी हैं। गोकि रावल-पिण्डीसे आपका कोई ताल्लुक नहीं है। कर्मणासे आप लिंग पूजक हैं। इस दृष्टिसे आपको लिंगायत सम्प्रदायका होना चाहिए। रुद्र-पूजकोंके बारेमें लिंग पुराणमें कहा गया है—

अन्य भक्त सहस्रेभ्यो:विष्णु भक्तो विशिष्यते। विष्णु भक्त सहस्रेभ्यो-रुद्र भक्तो विशिष्यते॥
रुद्र भक्तात् परतरी नास्ति लोकेन संशयः॥

इस दृष्टिसे आप विशिष्ट शिव भक्त हैं और लिंग-पूजनका संपूर्ण पुण्य संचय कर रहे हैं। आपके चरण स्पर्शसे न जाने कितने पातकी सीधे शिवलोकमें अपना बंगला रिजर्व करवा लेंगे। लिंग पुराणके प्रथम भागके ६३वें अध्यायके छठवें श्लोकमें कहा गया है—

पूजनीयः शिवो नित्यं श्रद्धया देव पुगवैः।
सर्व लिंगमयो लोकः सर्व लिंगे प्रतिष्ठितम्॥

इस दृष्टिसे बनारसमें जो मान्यता है, वह परम सिद्ध है। जिस नगरीका प्रत्येक कंकड़ शंकरके समान हो, हर व्यक्ति बाबाका गण हो, ऐसी नगरीके निवासी इस मंत्रको क्यों न अपनायेंगे?

आप इसी महेश्वरके उपासक है, जिसकी लम्बाई देखकर युआन च्यांग भड़क गया था। न केवल युआन च्यांग बल्कि महेश्वरकी महिमाकी थाह ब्रह्मा-विष्णु भी नहीं पा सके थे। यही वजह है कि इस नगरीके निवासी हर कोने-अतरे विश्वनाथकी पूजा करते हैं चाहे वह किसी रूपमें क्यों न हों—

इन्द्र नीलमयं लिंगं विष्णुना पूजितं सदा पद्म रागमयं शक्रो हैमं विश्रवसः सुतः॥

काशीमें बाबाका बढ़ता महत्व देखकर केदारनाथ, रामेश्वर, बैजनाथ, पशुपतिश्वर अमरनाथ आदि लिंगोंकी स्थापना हुई। यहाँ तक कि दक्षिणसे शंकराचार्यने आकर शिव की आराधनाकी और सन्त तुलसीदासको भी कहना पड़ा—

यस्यांके च विभाति भूधर सुता देवापगा मस्तके। भाले बाल विधुरगले च गर्ल यस्योरसि व्यालराट।
सोऽयं भूति विभूषण सुरवरः सर्वाधिप सर्वदा। शर्व सर्वगत शिवः शशिनिभः श्री शंकर पातुमाम्।

सौभाग्यसे आप इसी शिवके जन्मना उपासक है। ऐसे भक्त और पुजारीका अभिनन्दन-बन्दन हमारे लिये गर्वकी बात है।

हे पण्डित प्रवर,

बीसवीं शताब्दीके प्रारम्भमें आपके प्रपितामह देवरिया जिले से यहाँ आये तो खरल घोंटते रहे। कुछ दिनोंमें वे आचार्य जीवककी तरह इतने प्रसिद्ध हो गये कि राजवैद्यके रूपमें प्रसिद्ध हो गये। काशीके निवासियोंने उन्हें सर आँखोंपर बैठाया। उन दिनों बाबा विश्वनाथ अनाथ थे। मंदिरकी दशा शोचनीय थी। यह दृश्य देखकर उनकी आत्मा कराह उठी। उन्होंने अपनी सेवा देनेका निश्चय किया। गणमान्य नागरिकोंके सहयोगसे आपके प्रपितामह पण्डित विश्वेश्वर दयाल त्रिपाठी विश्वनाथ मंदिरके महन्त बने। उनके जीवनकी एक महत् आंकक्षाकी पूर्ति हुई। आपके पितामह व्याकरणाचार्य पण्डित भगवत प्रसाद त्रिपाठी संस्कृत साहित्यके प्रकाण्ड पण्डित थे। कई ग्रंथोंके संपादनके अलावा संस्कृत व्याकरण पर उन्होंने शोध कार्य किया, वे स्थानीय क्वींस कालेजमें अध्यापक रहे।

पण्डित भगवत् प्रसाद त्रिपाठीके पुत्र पण्डित भवानी शंकर त्रिपाठी न केवल व्याकरणके पण्डित थे, बल्कि अपने पितामह की तरह वैद्यक साहित्यके विद्वान रहे। आपका कई भाषाओं पर समान अधिकार था।

इन्हीं भवानी शंकर त्रिपाठीके घर आजसे पचपन वर्ष पूर्व २० दिसम्बर सन१९२४ को आपने अवतार ग्रहण किया यानी दो दिन पूर्व पचपन को ड्योढ़ी पारकर बचपनमें प्रवेश किया है।

पण्डित घराना होनेके कारण बचपनमे ही पठन-पाठनकी अभिरुचि आपमें जागरित हुई। प्रारंभिक शिक्षा विश्वनाथ सनातन धर्म विद्यालयमें प्रारंभ हुई। इसके बाद आप भारतेन्दु हरिश्चन्द्रजी के स्कूलमे आये जहाँसे इंटर किया। लेकिन बी० एच० यू० में जाते ही बी० ए० में आप ससम्मान फेल हो गये।

पिताजी ने कहा कि अब आंग्ल-भाषाकी शिक्षाकी जरूरत नहीं। अच्छा होगा कि बाबाके मंदिरमें महन्तई करो। आप अपने पिताके आज्ञाकारी बालक रहे, सो वंशानुक्रमसे बाबाके दरबारमें घण्टा–घड़ियाल बजाने लगे।

हे त्रिपाठी गुरू,

काशीमें साधारण मनई नहीं रहते। गुरु, राजा, मालिक, बाबू साहब और साबजीके अलावा बाकी सभी खंभाट रहते हैं।

कहते हैं मिर्जापुरके गुण्डे, बनारसके पण्डे और बलियाके मूंछमुण्डे हिन्दी साहित्यकी अमूल्य निधियाँ हैं। लेकिन बनारसमें पण्डोंका उतना महत्व नहीं है जितना गुरूओं का है। आप न केवल गुरू हैं बल्कि पण्डित भी हैं। आपमें पण्डा प्रवृत्ति लेशमात्र नही हैं। आपमें गुरू प्रवृत्ति कूट छानकर ठूंस दी गयी है। जिस वक्त आप भाल पर तिलक लगाये, गले में उत्तरीय डाले, रेशमी कुर्ता और चुन्नटदार धोती पहने काशी की गलियोंमें बनारसी सांड़की तरह झूमते हुए गुजरते है तब जन साधारण 'पालागी गुरू' का नारा लगाते हुए आपकी अभ्यर्थना करता है।

शायद आप एक ऐसे महन्त है जिन्हें भीतरी महाल तथा परिचितोंसे अपार श्रद्धा टोल टैक्सके रूपमें अनायास मिल जाती हैं। वह इसलिये की आप राम भी हैं और शंकर भी। आपके इस रूपको हम सादर नमस्कार करते हैं।

कट्टर सनातनी होते हुए भी आप परम उदार है। आप मानते है कि हरि को जो भजै, सो हरि का होई'। आपने ही हरिजनोंके लिये बाबाका फाटक खोल दिया था। इस प्रकार उन राजनीतिज्ञोंके मुँहपर तमाचा मारा जो हरिजनों मंदिर प्रवेश नाटक खेलते रहे। आपने बाबाको जंगलमें बन्द नहीं रखा।

स्वामी करपात्रीजी ने इस कार्यवाहीको नापसन्द किया तो उन्होंने अपने बाबाको फाटकमें बन्द कर दिया है। बनारसी जबतक बाबा पर पानी चढ़ानेके बाद उनकी पिण्डुकी पर हाथ नहीं फेरते तबतक उनकी श्रद्धा जागरित नहीं होती। संपूर्ण भारतमें आज तक इसी बाबा को मूल बाबा माना जाता है। शेष नगण्य हो गये हैं।

जब बाबाको मुसलमानों द्वारा बनायी जाने वाली शहनाई प्रिय हैं तब उन्हें हरिके जनोंसे क्यों नाराजगी होगी ? सामान्य धतुरा और गंगाजलसे प्रसन्न होने वाले आशुतोषके निकट हर मानव प्रिय हैं। आप इस दर्शनसे परिचित हैं। आपको निकट खादिम मियां उतने ही प्रिय हैं जितना मुरारीलाल केडिया।

हे बाबाके महन्त,

आज जब सारा भारत गाली गलौजसे गूंज रहा है। हमारे कर्णधार एक दूसरे पर कीचड़ उछाल रहे हैं, ऐसी स्थितिको हम लड़ंगी मारकर यह कहना पसन्द करते हैं—'हर हर महादेव शंभो काशी विश्वनाथ गंगे।'

जाड़ेका मौसम है वर्ना इस आवाज पर सभी ठलुए गाल बजाते, बम-बम करते, आपके ऊपर १००-२०० लोटा पानी छोड़ देते। आज हम बाबाके अनन्य भक्त पुजारीका अभिनन्दन करते हुए गर्वका अनुभव कर रहे हैं। अपनी परम्पराके अनुसार आज आपको इस क्लबकी ओर ठलुआ शंकर की उपाधि देते हुए काशी विश्वनाथसे प्रार्थना कर रहे हैं कि आप दीर्घजीवी हों और सदा सोहागिन बने रहें।

•

२०वीं गोष्ठी (१३३)

१२ जनवरी १९८०। आज बहुत दिनों के बाद हिन्दी जगत के वयोवृद्ध विद्वान, हिन्दीके गौरव पण्डित श्रीनारायण चतुर्वेदी का अभिनन्दन होने जा रहा था। पिछले आठ वर्षों से ठलुआबीर पण्डितजीके पीछे लगे रहे। लेकिन पण्डितजी बराबर एक ही जवाब देते रहे—अध्यक्षताके लिए जब बुलाओ, तभी आऊँगा। अभिनन्दन कराना मूर्खता है।

बार-बार इस प्रकारका जवाब पाकर ठलुआबीर मायूस होते रहे। पण्डितजीको प्रसन्न करनेके लिए इलाहाबाद जाकर पं० रामनारायण मिश्र 'श्री भूगोल' तथा टाइम टेबुल प्रेस के संचालक बाबू मुकुंददास गुप्त प्रभाकरजीका अभिनन्दन किया गया। इसी बीच प्रयागमें चतुर्वेदीजी का अभिनन्दन हुआ। उस समयके पत्राचारमें चतुर्वेदीजीने लिखा कि प्रयागका कार्यक्रम देख लूँ तब ठलुआ क्लबको स्वीकृति दूँगा।

सौभाग्यसे उनकी स्वीकृति मिल गयी। गर्मी, वर्षा के बाद टलते-टलते शीतकालमें कार्यक्रम तय किया गया। चुपचाप तैयारी होती रही। श्रीकृष्णचन्द्र बेरी चाहते थे कि गोष्ठी उनके यहाँ हो और वे १२ जनवरीको कलकत्तासे आनेवाले थे। जलपानका भार उनपर था, पर ऐन मौके पर गायब हो गये। उपहार देनेके लिए सर्वश्री पण्डित कलाधर चौबे, पण्डित श्रीशचन्द्र पाण्डेय, गुलाबदास वर्मा और मुरारीलाल केडिया पर भार डाला गया।

पं० कल्याणजी नागरने कहा कि इस बार वेदपाठमें स्वस्तिवाचनके अलावा निरुक्तका कार्यक्रम रखा जायगा। खर्च कुछ अधिक पड़ेगा। इसके साथ ही पण्डितजीका स्वागत द्वारमें शंख ध्वनिके साथ किया जाय ताकि वाराणसीकी संस्कृति पण्डितजी देख लें।

श्री भवत्रातन नम्पूतिरीको इस अभिनन्दनके बारेमें ज्ञात था। सो वे एक सालके भीतर दो बार अपने गाँव केरल गये तो केरल की गंगा, कावेरीसे जल ले आये। इलाहाबादसे गंगा-यमुनाका जल मँगाया गया। पटनासे सोन का पानी आ गया। इसके बाद वाराणसीमें वरना और जौनपुर की सीमाके पाससे सई नदीका पानी लाकर एक शीशी में रख लिया गया। कुल सप्त नदियों का जल था। पं० रामशंकर त्रिपाठीने विश्वनाथ मन्दिर का चन्दन दिया।

११ जनवरी की शामको चतुर्वेदीजी पंजाब मेलसे पधारे। वायदा कर गये कि ठीक ६ बजे अभिमन्यु पुस्तकालयमें पहुँच जायँगे। ठलुआबीर ज्योंही सभी स्थल में पहुंचे तो चार सिपाहियोंको देखकर चिन्तित हुए। कुछ लोगोंने कहा—भइया साहब आ गये हैं।

अभी ठलुआबीर अपनी मौजमें थे। तैयारी कुछ भी नहीं किया था। गाड़ीके रुकते ही अपरिचित शख्स देख कर उन्होंने आगन्तुकका स्वागत किया। बादमें पता चला कि यू० पी० ट्रांसपोर्ट के कमिश्नर साहब हैं। धीरे-धीरे ठलुए आते रहे। थोड़ी देर बाद चतुर्वेदीजी काशीके अनेक चतुर्वेदियोंके साथ पधारे। धूप, दीप और शंख ध्वनिके साथ उन्हें ऊपर ले जाया गया।

अध्यक्ष पद पर हिन्दीके वयोवृद्ध पत्रकार बाबू मुकुन्दीलाल श्रीवास्तवको बैठाया गया। मंगलाचरण किया पण्डित कल्याणजी नागर ने। ठलुआबीरने कहा आजकी गोष्ठीकी अध्यक्षता पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र करने वाले थे। बड़े शौकसे उन्होंने इसे स्वीकार किया था, पर खेद की बात है कि अचानक वे लकवेसे पीड़ित हो गये हैं। इसलिए उनके स्थान पर हम बाबू मुकुन्दीलालजीको अध्यक्ष पद पर बैठा रहे हैं। यह हमारे लिए गौरवकी बात है कि एक वयोवृद्ध हिन्दी सेवीके लिए एक अन्य हिन्दी के वयोवृद्ध हिन्दी सेवी हमें सुलभ हो गए।

प्रारम्भमें पं० कल्याणजी नागर ने पूजन किया। तत्पश्चात् वेदपाठियोंने पहले निरुक्त फिर स्वस्तिवाचन प्रारम्भ किया। जब कार्यक्रममें काफी विलम्ब होने लगा तो लोगोंके कहने पर वेदपाठ रोक देना पड़ा।

इस अवसर पर सप्त नदियोंके जलसे श्री नम्बूतिरीने अभिषेक किया। पण्डितोंने वेदपाठके बाद अक्षतसे आशीर्वाद देकर प्रणाम किया।

एकाएक ठलुआबीर उठे और कहा - हमारे लिए विशेष रूपसे ठलुआ क्लबके लिए यह गौरवकी बात है कि हम भइया साहबका स्वागत कर रहे हैं।

तभी लक्ष्मीशंकर व्यासने कहा--इसे काशी का गौरव कहिए।

तुरत ठलुआबीरने जवाब दिया—तभी तो सिवा आपके अन्य कोई पत्रकार दिखाई नहीं दे रहा है। यहाँ तक कि बाबू सत्येन्द्र कुमार गुप्त भी गायब हैं।

श्री मुरारीलाल केडियाने कहा—पत्रकार सब काशीके उस पार बसते हैं। यह अच्छा है कि ठलुआ क्लब उन्हें नहीं बुलाता। पता नहीं, इस बार क्यों बुलाने गया। भविष्य में इन्हें न बुलाया जाय।

ठलुआबीरने कहा—भइया साहबके नाम पर तीन दिन से लोग फोन पर फोन करते जा रहे हैं कि हमें भी दो मिनट का मौका दें। लेकिन मैंने यह तय किया है कि किसीको बोलने नहीं दूँगा, क्योंकि एक तो भइया साहबको ब्लड प्रेशर ने तंग कर रखा है, दूसरे हमें उनसे सुनना है। पिछले आठ सालसे फँसाते-फँसाते आज वे हमारे चंगुलमें फँसे हैं। जब मैंने पं० रामनारायण मिश्र श्री भूगोल, पन्तजी, महादेवी वर्मा, डा० हजारी प्रसाद, डा० सम्पूर्णानन्द जैसे लोगो को फंसाया तो चतुर्वेदीजीसे हारते-हारते जीत गया। आज का आयोजन हमारे लिए गौरवपूर्ण आयोजन है। अब एक बात और बता दूँ कि आज जो अभिनन्दन पत्र भेंट किया जायगा, वह मेरा नहीं, श्रद्धेय पं० सीताराम चतुर्वेदीजी का लिखा हुआ है। इसमें कुछ ऐसी बातें हैं जिसे मैं कभी लिख नहीं सकता। अपने पिता तुल्य पूजनीय व्यक्तिसे ऐसा मजाक नहीं कर सकता। अब श्री हरिराम द्विवेदी अभिनन्दन पत्र पढ़ेंगे।

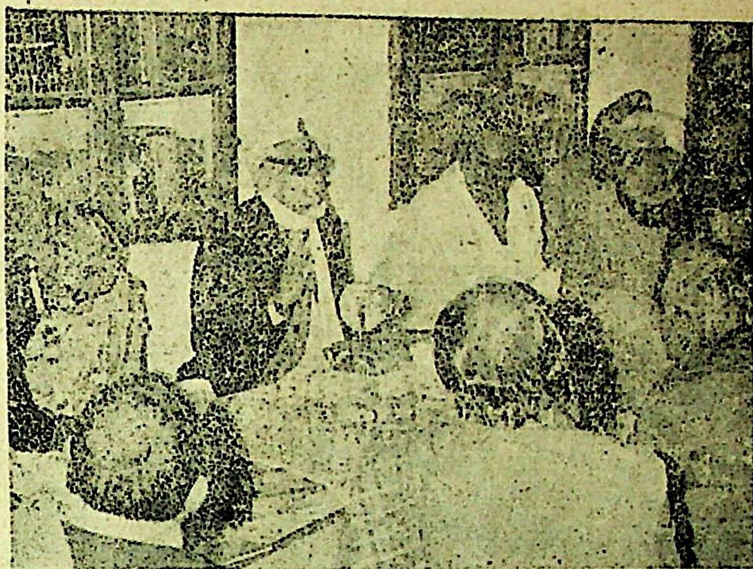
श्री हरिराम द्विवेदीने प्रारम्भ किया—हे भइया साहब, बेचारे ठहर गये। उपस्थित लोग हँस पड़े। श्रद्धेय चतुर्वेदीजीने कहा—पढ़िये, पढ़िये। यह ठलुआ क्लब है। यहाँ यह सब चलता है।

अभिनन्दन पत्र भेंट किया—श्रद्धेय बाबू मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव ने। इसके बाद डा० ज्ञानानन्द नागरने स्वागत भाषण देते हुए बताया कि मैं इलाहाबादी हूँ और भइया साहब मेरे पूजनीय गुरुजन हैं। इस क्षमा याचनाके साथ कहना चाहूँगा कि भइया साहबका तकिया कलाम चूतिया शब्द है जो हर किसीको बेलाग कह बैठते हैं। मैं, सालिकराम चतुर्वेदी आदि अनेक लोग चतुर्वेदीजी द्वारा निर्मित हुए हैं।

तभी मुरारीलाल केडियाने कहा--भइयाजीका सकुन तकिया चूतिया शब्द है, इसे हर कोई जानता है। एक बार भारत कला भवन में भइयाजीने कहा--यहाँके सभी लोग चूतिया हैं। तब मैंने कहा कि इसमें एक संशोधन करना चाहता हूँ। हम सब चूतिए जरूर हैं, पर आप इस सभाके अध्यक्ष हैं।

केडियाजीके कथन पर जोरों का अट्टहास हुआ। चतुर्वेदीजीने कहा—आप लोगों ने जब चूतिया शब्द का प्रकरण आरंभ किया है तो एक बात बता दूँ कि च्यूत शब्द से चूतिया शब्द बना है। इस संसार में अच्युत तो सिर्फ एक है और वह है—ईश्वर। बाकी सभी च्यूत हैं यानी चूतिया।

इसके बाद विभिन्न लोगों ने माल्यार्पणके साथ उपहार भेंटमें दिया। पं० कमलाकर चौबेने दुशाला, श्रीचन्द्र पांडेय ने मफलर, मुरारीलाल केडिया ने गाजी गमछा, सुरेशचन्द्र, हनुमान सिंह, बैकुण्ठनाथ उपाध्याय, लक्ष्मीशंकर व्यास तथा अन्य लोगों ने पुस्तकें, श्री गुलाबदास वर्माने चतुर्वेदीजीका एक चित्र इन्हें भेंट किया।



एकाएक भइया साहबने पूछा—अब क्या कार्यक्रम है ?

ठलुआबीरने जवाब दिया—मोदीजीके भाषणके बाद काव्यपाठ।

भइयाजीने कहा—मेरा भाषण पहले होगा। अगर उसके बाद कवि लोग चाहेंगे तो काव्यपाठ होगा।

सभी लोगोंने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया।

भइयाज़ीने अपने भाषणमें कहा—भाषण ज़रा बड़ा है। समय लगेगा।

हे ठलुओ, ठलुआबीरो ! पता नहीं, वह कौन सी घड़ी थी जब मैंने आपकी संस्थामें अपना अभिनन्दन जिसे आप लोग मुण्डन कहते हैं, कराना स्वीकार किया। आप सब जिसके पीछे पड़ जायेंगे, उसे सब स्वीकार करना पड़ता है। आज अगर 'अभिनव भरत' होते तो कुछ कहता। उनकी अनुपस्थितिमें अभिनन्दन पत्रके बारेमें कुछ नहीं कहूँगा।

आप लोग अपने को ठलुआ क्यों कहते हैं, इसकी जानकारीके लिए मैंने अधिकांश शब्दकोशों को देखा। सभी जगह आप लोग नदारद थे। हिन्दी शब्द सागरसे लेकर संक्षिप्त कोशमें भी। केवल एक कोशमें ठाला शब्द मिला। इस शब्दसे आपका ताल्लुक हो सकता है। अभिनन्दनके नाम पर आप लोग भाँग छानकर अभिनन्दितके कारनामोंका उल्लेख करते हुए उसे विभिन्न प्रकार की सामग्रीमें अभिनन्दन पत्र देते हैं। समस्त आयोजन विनोदपूर्ण ढंगसे करते हैं, पर अपने नामके पीछे अंग्रेजी का क्लब शब्द क्यों लगा रखा है ? जबकि क्लब का हिन्दी नामकरण भारतेन्दु हरिश्चन्द्रने स्वयं किया है।

आगे आपने कहा—काशी की महिमा विश्वव्यापी है, क्योंकि पाणिनीके सिद्धान्तके अनुसार वर्णमालाके प्रथम वर्ग का प्रथम अक्षर वाला नगर है यानी क वर्ग का प्रथम अक्षर। क का विशेष महत्व है। अंग्रेजोंकी राजधानी जब तक कलकत्तामें थी तबतक वे फले-फूले। ज्यों ही दिल्ली ले गये त्योंही उसकी क्या दशा हो गयी, इसे आप सब जानते हैं। शायद आपके क्लबमें क का यही महत्व है जो पिछले २० वर्षोंसे आप साहित्यिकोंका मुण्डन करते चले आ रहे हैं। अब देखिये मेरे नाममें कहींभी क वर्ग का महत्व नहीं है। च तथा त वर्ग है। इसका कितना व्यापक

असर पड़ा है। काशीमें एक अनोखी संस्था है विक्रम परिषद । इसमें भी क की महत्ता है। इसने केडियाजी को काशी कण्ठाभरण' की उपाधि दी जो भारत प्रसिद्ध हो गया। इस प्रकार क वर्गके कारण केडियाजीका कला प्रेम उजागर हो गया।

इसी नगरीमें पं० कान्तानाथ पाण्डेय रहते थे। जिन्होंने अपना अपना नाम चोंच रखा। बादमें जब उन्हें सद्बुद्धि आयी तो उन्होंने अपना नाम बदल डाला।

इस अवसर पर मैं आप लोगों को एक सुझाव देना चाहूँगा कि आप जिन लोगों का मुण्डन करते हैं, उन्हें क वर्ग की उपाधि दें। जैसे काशी कोंहड़ा, काशी कोंपर, काशी कटहल, काशी कल, काशी करेला, काशी कंद, काशी कद्दू, काशी कदली, काशी कोकिल, काशी कोकिला, काशी कोविद, काशी कंकरीट, काशी कंटोप, काशी कंठमाला, काशी कदली, काशी कंबल, काशी कुमकुम, काशी कचौड़ी, काशी कछुआ, काशी कजरौटा, काशी कठमुल्ला, काशी कड़खेत, काशी कणाद, काशी कण्व, काशी कर्ण आदि।

काशीमें अनेक दर्शनीय स्थल तथा महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं। चेतगंज और कबीरचौराके आसपास की दीवारों पर दर्ज साइनबोर्डों से इसकी जानकारी बाहरी लोगोंको हो जाती है। अमुक कलाकार का खास बैठका है। अमुकके खास पुत्र का नृत्य गीत मण्डली। इन लोगोंके कारण काशी का जन जीवन मुखर रहता है।

यहाँके साहित्यकार भी पीछे नहीं रहते। बी० एच० यू० का चिड़िया घर नामक काव्य को पर्याप्त प्रसिद्धि प्राप्त हुई। नागरी प्रचारिणी सभासे प्रकाशित एक विशेष अंक अपना महत्व दिखा चुका है। खेद है कि आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र नहीं हैं, वर्ना वे अपने संपादनके बारेमें आज विशेष प्रकाश डालते। हे ठलुआधीशों, आप सब सक्षम हैं। आपकी प्रशंसा करना कठिन है।

कवि तीन प्रकारके होते हैं। कुक्कुट, केकी और कबूतर। कुक्कुट ५–६ हाथ उछलता है, केकी यानी मयूर १०–१५ हाथ ऊपर उड़ पाता है और कबूतर अनन्त आकाशमें उड़ता है। उसी प्रकार कवि भी तीन प्रकारके होते हैं। यहाँ के स्थित कवि अपनी स्थिति को स्वयं समझ लें कि वे किस श्रेणी में आते हैं।

मैं आप लोगोंको यह सुझाव देना चाहूँगा कि आप लोग अपनी जमात को बढ़ायें। प्रत्येक नगरमें ठलुओंको संख्यामें वृद्धि करें। आगे चलकर माँग करें कि सरकारके मंत्रिमण्डलमें एक ठलुआ मंत्री अवश्य हो। अगर कोई ठलुआ चुनावमें खड़ा हो तो उसे गड्ड के गड्ड आप लोग वोट दें ताकि वह विजयी अवश्य बने। बिना ठलुआगिरीके आज के जीवन में शांति नहीं मिल सकती।

आजकी गोष्ठीमें आचार्य चतुर्वेदी होते तो उनके बारेमें कुछ कहता, पर वे कायर निकले। चूतिया जैसे शब्दका रसालिया नामकरण किया। जिस शब्दका प्रयोग भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्रेमधन, डा० रसाल और बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने किया है, वह भला गाली हो सकता है?

अन्तमें आप लोगोंसे निवेदन करूँगा कि आप लोगोंने मुझे यहाँ बुलाकर जो सम्मान दिया है, उसके लिए आभारी हूँ। सचमुच एक शाम अच्छी गुजरी। आप लोग ठलुआ क्लबका यही रूप बनाये रखें ताकि बनारसी जीवन का हास्य-विनोद जीवित रहे।

अध्यक्ष पदसे बाबू मुकुन्दीलाल श्रीवास्तवने कहा—श्रद्धेय चतुर्वेदीजी [illegible] अभिनन्दनमें मुझे अध्यक्ष बनाकर जो गौरव दिया गया है, उसके लिए [illegible] आभारी हूँ। हमारे मुखर्जी बाबूको इतना समय कैसे मिल जाता है, मैं नहीं [illegible] बीच यह सब कर लेते हैं। भारतीय संस्कृतिकी परम्परा रही है कि हम [illegible] अनुभवोंमें ज्ञान प्राप्त करें। चाहे वेद हो या रामायण, प्रत्येक ग्रंथमें यही [illegible]

सम्मान करने से ही समाज और नयी पीढ़ीका विकास होता है। लेकिन खेद है कि आजकी नयी पीढ़ी इस प
नहीं दे रही है।

अन्तमें डा० भानुशंकर मेहताने धन्यवाद दिया।

श्रद्धेय भइया साहबसे यह तय किया गया था कि उन्हें मार्ग व्यय दिया जायगा। जब श्री मुरारीलाल केडिया उन्हें मार्ग व्यय देने गये तो उन्होंने कहा—ठलुआ क्लबसे मार्ग व्यय नहीं लूंगा। संस्थाओंमें पैसा चन्देसे आता है। फिर यह गोष्ठी ऐसी अच्छी हुई कि मैं इसे बहुत दिनों तक याद रखूंगा। अभूतपूर्व। बनारसमें ही ऐसी गोष्ठिया हो सकती हैं।

भइयाजी कार्यक्रमके प्रारम्भसे ही प्रसन्न दिखाई दे रहे थे। ठलुआवीर मन ही मन डर रहे थे कि कहीं वे कूपित न हो जायें, पर इस समाचारसे उनका श्रम सफल हो गया। समयाभावके कारण अनेक संदेशोंका पाठ नहीं किया गया। केवल कुछ महत्वपूर्ण संदेश प्रकाशित किये जा रहे हैं—

पं० किशोरीदास वाजपेयी–कनखल

प्रिय मुखर्जी साहब,

नमस्कार!

मेरे बड़े भाई पं० श्रीनारायण चतुर्वेदीका मुण्डन करनेवाला है बनारसी लोगोंका ठलुआ क्लब, यह जानकर सुख मिला। भगत जगत कौं ठगत हैं, भगतन ठगैं न कोय। जो कोई भगतन ठगैं, सो वामन हरि होय'। चौबे लोग सबको बनाते हैं। इनको 'बनानेवाला' भी कभी कोई मिल जाता है गुरू घंटाल। बनारसी लोगोंमें ही ऐसे 'गुरू' मिल सकते हैं।

चौबे हो और मजाक-मजेसे दूर हो, हास विलाससे विमुख हो, ऐसा बहुत कम संभव है। जो इस कलाको बला समझते हैं। ऐसे चौबे अनजाने ही हंसी-मजाकके 'आलम्बन' बन जाते हैं। पं० बनारसीदास चतुर्वेदी ऐसे ही हैं। कभी मजाक नहीं करते—कोई हंसने-हंसानेकी बात नहीं करते। जब वे नई दिल्लीमें रहते थे, राज्य सभाके सदस्य थे, तब एक दिन उनसे मिलने गया। गरमीके दिन थे, सूतकी एक ही चीज उनके लम्ब कायको सुशोभितकर रही थी—पाजामा। दूसरी कोई चीज न थी, न सूतकी, न रेशमकी और न ऊन-टाटकी—जनेऊ भी नहीं। वे उठकर मुझे पं० पद्मसिंह शर्माके पत्रोंसे भरे सन्दूक खोल, खोलकर दिखा रहे थे, तब उनका पाजामा नीचेको सरकता जाता था और वह पीछे हायकर-करके बार-बार संभालते जाते थे। कुछ अंगुलिगमग आधार दिगम्बर हो जाता था, तब फिर वे खींचकर ऊपरकर लेते थे। मैं यह देखने का मजा ले रहा था, तब पं० पद्मसिंह शर्माके पत्र ध्यानसे कैसे देख पाता। ऐसा आनन्द आया कि दिल्लीकी यात्रा सफल हो गई, परन्तु चौबेजीको मेरे इस आनन्दकी कुछ भी पता न चला।

भैया साहब धोखेबाज भी हैं

भैया साहब, माफ करें, धोखेबाज भी हैं। उनका शिष्ट व्यवहार, गम्भीर मुख मुद्रा, गम्भीर पाण्डित्य और गम्भीर शास्त्रीय विवेचन, यह सब देखकर कौन कह सकता है कि ये महानुभाव मजाक मजाकमें लोगोंको ऐसा बनाते हैं कि क्या पूछो! उस गम्भीरतासे इस मजाकका—हास परिहास, या 'हास्य रस'का क्या मेल? कौन समझ सकता है कि ये ऐसे भी हैं? यह भी एक धोखा देना ही है, परन्तु धोखा देना ऐसा, जिसमें किसी का माल उड़ाना नहीं, अपनी भरी जेब खालीकर देना! जिन्होंने श्री विनोद शर्मा अभिनन्दन ग्रन्थ पढ़ा है, वे जानते हैं कि चतुर्वेदीजीने अपना कितना रुपया कितने श्रमसे खर्च किया। मैं (मति मन्द गंवार) ऐसे धोखेबाजीको अक्लमन्द कहूँ, या